हस्तपुस्तिका

समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता

कमल कार

रॉबर्ट चैम्बर्स के साथ

IDS Institute of Development Studies

Plan

प्लान यूके एक बाल केन्द्रित सामुदायिक विकास संगठन है जिसका किसी धार्मिक या राजनैतिक विचारधारा अथवा संगठन से कोई सम्बन्ध नहीं है. हम बच्चों के सुखमय भविष्य के लिये पूरी तरह समर्पित हैं. हम बच्चों, उनके परिवारों, समुदायों, नागर समाज, सरकारों के साथ सहयोग करके उनके हित के लिये काम करते हैं. हम रचनात्मक सम्बन्ध स्थापित करते हैं और बच्चों को सक्षम बनाते हैं कि उनकी आवाज सुनी जा सके और उन पर प्रभाव डालने वाले मुद्दों के विषय में उनकी आवाज को महत्व मिल सके.

[illegible]

[illegible]

[illegible]

हस्तपुस्तिका

समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता

कमल कार

रॉबर्ट चैम्बर्स के साथ

प्लान इन्टरनेशनल (यूके) की सहायता से
तैयार किया गया, मार्च 2008

Plan

आभार

इस हस्तपुस्तिका को लिखने और तैयार करने के लिये प्लान इन्टरनेशनल (यूके) से सहयोग प्राप्त हुआ. इसे तैयार करने की पूरी अवधि के दौरान रोज़ लिवरज द्वारा दिये गये प्रोत्साहन तथा दर्शाये गये धीरज और उदारता के लिये हम कृतज्ञतापूर्वक आभारी हैं. उनके साथ ही क्लेर वाह, एलेक्स वैट्टी द्वारा कार्य के चरणों में दिये गये सहयोग के लिये आभार व्यक्त करते हैं. हम सुश्री रॉबर्ट चेम्बर्स को धन्यवाद करते हैं जिनके द्वारा इस हस्तपुस्तिका को रूप सज्जा और अभिन्यास को अंतिम रूप देने में सहायता की गई. पेट्रा बोंगार्ट भी धन्यवाद की पात्र हैं जिन्होंने हस्तपुस्तिका की पाण्डुलिपि तैयार करने में सहयोग दिया. पीटर फीलहौस द्वारा बहुत ही उपयोगी सुझाव दिये गये और टिप्पणियां की गई जिसके कारण हस्तपुस्तिका में और सुधार किया जा सका. हस्तपुस्तिका में उदाहरणों के रूप में प्रस्तुत बहुत से वास्तविक दृष्टान्त और घटनाओं के विवरण उन लोगों के द्वारा उपलब्ध कराये गये जिनके नाम विवरणों के साथ ही अंकित किये गये हैं. यहां हम समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के उन चैम्पियनों के प्रति भी धन्यवाद व्यक्त करना चाहेंगे जिनके द्वारा न तो किसी ने कोई नोट लिखे और न किसी ने मगर उनका गुणगान ही किया. कई देशों के अनेकों सरकारी, सहयोगी, गुणवत्ता, समुदाय, स्वास्थ्यिक नेता, गैर-सरकारी संस्थाओं के सदस्य और कार्मिक, अनुदान दाता, वरिष्ठ कार्मिक, लोगों के चुने गये प्रतिनिधि, और अन्य भी धन्यवाद के पात्र हैं. उनकी संख्या इतनी अधिक है कि सबके नामों का उल्लेख नहीं किया जा सकता और उनमें से कुछ के नाम का उल्लेख करना तथा अन्य को छोड़ देना उचित नहीं होगा. वे सब अपने योगदान को जानते हैं इसलिये हमें आशा है वह हमारी इस बात को भी समझ जायेंगे और स्वीकार कर लेंगे. डी.एफ.आई.डी. सहायतित इंस्टिट्यूट ऑफ डेवलपमेन्ट स्टडीज के शोध कार्य "गोइंग टू स्केल विद कम्युनिटी-लेड टोटल सैनिटेशन" द्वारा प्रदान किये गये अवसरों के बिना कुछ अनुभव और सामग्री उपलब्ध हो नहीं हो पाती.

दिसम्बर 1999 से लगातार समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के साथ जुड़े रहने से प्राप्त अनुभवों के आधार पर ही इस हस्तपुस्तिका का विकास किया गया है. यह अनुभव एशिया के बांग्लादेश, भारत, कम्बोडिया, इण्डोनेशिया, मंगोलिया, नेपाल, चीन, पाकिस्तान, अफ्रीका के युगाण्डा, जाम्बिया, इथियोपिया, तनजानिया, केन्या, और सियरा लियोन, दक्षिण अमेरिका के बोलीविया, मिडिल ईस्ट के यमन तथा अन्य देशों में प्राप्त हुए. जिन विधियों का यहां वर्णन किया गया है समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के लिये केवल यही विधियां कारगर नहीं हैं. उत्प्रेरकर्ताओं को इन स्थिति में अपने विवेक का प्रयोग करने के लिये तथा स्थानीय स्थितियों के परिवेश में उपयुक्त अभियान चलाने के लिये प्रोत्साहित किया जाता है जिससे समुदाय की सहभागिता प्राप्त की जा सके तथा बढ़ाई जा सके और समुदायों का सशक्तिकरण इस प्रकार हो सके कि सम्पूर्ण स्वच्छता प्राप्त करें और इसके आगे की यात्रा भी समुदाय एकजुट होकर पूरी कर सकें.

कमल कार
मार्च 2008

सभी छायाचित्र: डॉ कमल कार (उन छायाचित्रों को छोड़कर जिनके चित्रांकनकर्ताओं के नाम साथ में अंकित हैं)

CLTS हस्तपुस्तिका मुद्रित हुई है WSSCC, Geneva' के आर्थिक सहयोग से एवं हिन्दी अनुवाद संपन्न हुआ है IDS, Sussex- के आर्थिक सहयोग से - लखनऊ, 2009

हिन्दी रूपान्तर एवं अभिन्यास — एस.एस.उपाध्याय
सम्पादन हिन्दी संस्करण — के.पी. शुक्ला
मोरेक लिखित प्राइवेट लिमिटेड

अनुक्रमणिका

2. आभार
3. अनुक्रमणिका
4. परिभाषाएं
5. संक्षेपाक्षर

6. अध्याय 1 - परिचय और पृष्ठभूमि
7. समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की उत्पत्ति, प्रसार और विस्तार
8. यह हस्तपुस्तिका क्यों?
9. समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता
12. चरणों का अनुक्रम

14. अध्याय 2 - ट्रिगरिंग से पहले
15. समुदाय का चयन
16. अधिक अनुकूल
17. अधिक चुनौतीपूर्ण
18. स्थितियां जो अनुकूल या चुनौतीपूर्ण हो सकती हैं
19. स्थिति मूल्यांकन से पहले परिचय और परिचयात्मक विकसित करना

22. अध्याय 3 - ट्रिगरिंग
23. समुदाय द्वारा मूल्यांकन और विश्लेषण को सुगम बनाना
24. समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता को चिंगारी लगाने के लिये पृष्ठभूमि
29. खुले में शौच के स्थलों का अनुमान भ्रमण
31. खुले में शौच के स्थलों का मानचित्रीकरण
34. सबसे गंदी जगहों की पहचान
35. उत्पादित मल की मात्रा तथा चिकित्सा पर व्यय का आकलन
36. पूरा कैसे ट्रिगर को जाये: मल जनित संदूषण के मार्ग
37. प्रज्वलन क्षण
40. विभिन्न प्रतिक्रियाओं के प्रत्येक रणनीति
40. सुझाव
40. पेचीदा चरण में सिफारिशें
41. उदासीनता रहे
41. बिखरी हुई सिफारिशें
42. थोड़ी सिफारिशें
43. समुदाय की कार्ययोजना को सुगम बनाना
44. अनुसरण के लिये सामुदायिक मानचित्रीकरण
44. स्कूलों में ट्रिगरिंग

46. अध्याय 4 - ट्रिगरिंग के बाद कार्यविधिका
48. तुरन्त बाद की अनुवर्ती गतिविधियां और प्रोत्साहन
48. समुदाय के कार्य और अनुवर्ती गतिविधि
51. सहभागी अनुश्रवण और संकेतक
51. प्रक्रिया और प्रगति का अनुश्रवण
52. संचालित स्वाभाविक नेता
52. महिला स्वाभाविक नेता
52. पर्दा और धार्मिक नेताओं की भूमिका को प्रोत्साहन तथा सम्मान
53. समुदाय के निर्धन लोगों को सहायता देने के लिये प्रोत्साहन
54. कस्बों को अभियान से जोड़िये
57. स्वच्छता निर्माण सामग्री की उपलब्धता
59. खुले में शौच से मुक्त स्तर का सत्यापन और प्रमाणीकरण
60. खुले में शौच से मुक्त होने पर उत्सव मनाइये
61. खुले में शौच से मुक्त स्तर का अनुसरण एवं बनाये रखना

64. अध्याय 5 - प्रसार एवं समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता से आगे
66. प्रशिक्षण और प्रसार के लिये क्या करें और क्या न करें
66. अधिकारियों के कार्मिकों तथा प्रभावी व्यक्तियों के द्वारा रणनीतिक कार्य
67. गांव के स्तर पर ट्रिगरिंग के लिये सुगमकर्ता दलों का प्रशिक्षण
71. समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के प्रशिक्षण की गुणवत्ता के लिये प्रतिबद्धता
71. अभियान
72. पर्दा और प्रतियोगिता को प्रोत्साहन
73. शौचालय निर्माण सामग्री की आपूर्ति और उपलब्धता को बढ़ावा दीजिये
74. अनुभव से सीखना
74. समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के पार
77. परिवर्तक अभियान का सीजारोपण और सहयोग
83. परिशिष्ट
84. परिशिष्ट क - समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की उत्पत्ति, पृष्ठभूमि, प्रसार और विस्तार
88. परिशिष्ट ख - प्रसार और विस्तार के संदर्भ में खुली चिट्ठी
90. परिशिष्ट ग - विशेष स्थितियों में ट्रिगरिंग
92. परिशिष्ट घ - पूरा पैसा करने के लिये प्रश्नों के नमूने
92. परिशिष्ट च - अनुवर्ती गतिविधियों की नमूने की जांच सूची
93. परिशिष्ट छ - लक्ष्य आधारित अधिक स्वच्छता की समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता से तुलना
94. परिशिष्ट ज - स्रोत और सम्पर्क सूत्र
95. विभिन्नता और स्थानीय स्तर पर विकसित मॉडल: समुदायों द्वारा अभियान चलाने के अन्तर्गत विकसित किये गये शौचालयों के मॉडल के फोटोग्राफ

परिभाषाएं

प्रमाणीकरण, खुले में शौच से मुक्त स्तर प्राप्ति का आधिकारिक पुष्टिकरण और घोषणा है

समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता, यह खुले में शौच से मुक्त स्तर प्राप्त करने तथा उसे बनाये रखने के लिये विकसित की गई एकीकृत कार्यविधि और दर्शन है. समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के लिये आवश्यक है कि सुगमकर्ताओं द्वारा समुदाय को अपनी स्वच्छता की स्थिति को जानने, शौच करने से सम्बन्धित परिपाटियों, आदतों, तथा दुष्प्रभावों को जानने और उनका विश्लेषण करने के कार्य को सुगम बनाया जाये जिससे समुदाय एकजुट होकर कार्य करने के लिये उद्यत हो जाये और खुले में शौच से मुक्त स्तर को प्राप्त कर ले. जिन स्थितियों में बाहर से आये लोग समुदाय के सदस्यों को "पढ़ाते" हैं उन्हें इस हस्तपुस्तिका के आलोक में समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता नहीं कहा जा सकता.

समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की प्रक्रियाएं पहले संचालित होती हैं और इन प्रक्रियाओं के बाद कई प्रकार के परिवर्तन आ सकते हैं - शौचालयों के डिजाइन में सुधार, स्वास्थ्यकर स्वच्छता सम्बन्धी व्यवहार का अंगीकार किया जाना तथा इसमें सुधार, कूड़े कचरे का प्रबन्धन, गन्दे जल की निकासी और निपटान, पीने के पानी के स्रोतों का संरक्षण और स्वास्थ्यकर तथा पर्यावरण को बेहतर बनाये रखने के लिये उठाये जाने वाले अन्य कदम. कई मामलों में समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के माध्यम से खुले में शौच से मुक्त हुए समुदायों के द्वारा एकजुट होकर कई स्थानीय विकास कार्यों का कार्यान्वयन करने के लिये सकारात्मक पहल की जाती है.

शौचालय और प्रक्षालन: शौचालय का अर्थ है मल के सीधे गड्ढे में जाने की व्यवस्था तथा प्रक्षालन का मतलब है पानी सील के साथ फ्लश करने की व्यवस्था. इस हस्तपुस्तिका में कभी-कभी शौचालय शब्द का प्रयोग इन दोनों के लिये किया गया है. प्रक्षालन शब्द का प्रयोग वहां किया गया है जहां सीधे गड्ढे वाली व्यवस्था के सापेक्ष पानी सील के प्रयोग की अधिक सम्भावना है.

स्वाभाविक नेता (अंग्रेजी में इन्हें सहज नेता भी कहा जाता है) वह सक्रियतावादी और उत्साही लोग हैं जो कि समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता प्रक्रिया के दौरान उभर कर सामने आते हैं और नेतृत्व प्रदान करते हैं. पुरुष, महिला, युवा और बच्चे, इनमें से कोई भी स्वाभाविक नेता हो सकता है. कुछ स्वाभाविक नेता सामुदायिक सलाहकार बन जाते हैं, ट्रिगर करते हैं तथा अपने समुदाय के इतर अन्य समुदायों को भी प्रेरित करते हैं तथा सहयोग प्रदान करते हैं.

खुले में शौच का अर्थ है खुले में शौच करना और मल को उसी जगह उसी हालत में छोड़ देना. **खुले में शौच से मुक्त** का अर्थ है समुदाय के द्वारा खुले में शौच करने की आदत को पूरी तरह छोड़ देना और इस स्थिति/प्रक्रिया से पूरी तरह मुक्त हो जाना. इस स्तर को पा लेने का तात्पर्य है कि गांव में कहीं भी मल बिखरा हुआ पड़ा नहीं होगा और वातावरण इससे होने वाले संदूषण से मुक्त होगा. बिना ढक्कन वाले एक गड्ढे के शौचालय की व्यवस्था भी एक प्रकार से खुले में शौच का ही एक रूप है (खुले में शौच के लिये निश्चित स्थान), परन्तु यदि मक्खियों से बचाव करने वाला ढक्कन लगा दिया जाये (शौच के बाद राख डाल कर मल को ढकने की व्यवस्था के साथ या इसके बिना) तो यह खुले में शौच से मुक्त होने के लिये उपयुक्त माना जायेगा. गड्ढा खोदकर उसमें शौच करना तथा शौच के बाद मल को मिट्टी से ढक देना खुले में शौच की स्थिति से खुले में शौच से मुक्ति की स्थिति की ओर बढ़ता हुआ एक कदम माना जायेगा.

सत्यापन से तात्पर्य है निरीक्षण का जिससे यह पता लग सके कि क्या सम्बन्धित समुदाय के द्वारा खुले में शौच से मुक्त होने का स्तर प्राप्त कर लिया गया है (प्रमाणीकरण से तुलना करें)

शौचालय के लिये गड्ढा खोदना, [illegible] में, केन्या, छायांकन: [illegible], प्लान केन्या

संक्षेपाक्षर

सीएलटीएस	कम्युनिटी लेड टोटल सैनिटेशन
आईआरएसपी	इंटीग्रेटेड रूरल सपोर्ट प्रोग्राम, मरदान, पाकिस्तान
एनजीओ	नॉन-गवर्नमेंटल ऑर्गेनाइजेशन
एनईडब्ल्यूएएच	नेपाल वाटर फॉर हैल्थ
एनएल	नेचुरल लीडर्स
एनडब्ल्यूएफपी	नॉर्थ वेस्ट फ्रंटियर प्रोविन्स, पाकिस्तान
ओडी	ओपन डेफेकेशन
ओडीएफ	ओपन डेफेकेशन फ्री
पीआरए	पार्टिसिपेटरी रूरल एप्रेजल
आरईएसए	प्लान इंटरनेशनल का रीजनल ईस्टर्न एण्ड सदर्न अफ्रीका ऑफिस
आरटीआई	[illegible] टू इंटरनेशनल, इथियोपिया में कार्यरत
	आधारित नॉन-गवर्नमेंटल ऑर्गेनाइजेशन
एसडीयू	सोशियल डेवलपमेंट यूनिट
एसएफडी	सोशियल फण्ड फॉर डेवलपमेंट, यमन
एसएनएनपीआर	सदर्न नेशन्स नेशनलिटीज एण्ड पीपुल्स रीजन, इथियोपिया
शौहार्दो	स्ट्रेन्थनिंग हाउसहोल्ड एबिलिटीज टु रिस्पॉण्ड टु डेवलपमेंट अपार्च्युनिटीज
यूनिसेफ	यूनाइटेड नेशन्स चिल्ड्रेन्स फण्ड
वीईआरसी	विलेज एजुकेशन रिसोर्स सेंटर, बांग्लादेश
डब्ल्यूएसएलआईसी	वाटर एण्ड सैनिटेशन फॉर लो इनकम कम्युनिटीज
डब्ल्यूएसपी-ईएपी	वाटर एण्ड सैनिटेशन प्रोग्राम - ईस्ट एशिया एण्ड पैसिफिक
डब्ल्यूएसपी-एसए	वाटर एण्ड सैनिटेशन प्रोग्राम - साउथ एशिया

अध्याय 1

परिचय एवं पृष्ठभूमि

''कौन कहां शौच करता है?'' टोरोरो, युगाण्डा के समुदाय सदस्य खुले में शौच के स्थलों का मानचित्रीकरण करते हुए.
छायांकन: फिलिप ओटियानो, प्लान केन्या

समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की अवधारणा उत्पत्ति, प्रसार एवं विस्तार

कमाल कार द्वारा वॉटरऐड के भारत गृह एवं उनकी सहयोगी स्थानीय संस्था वी.ई.आर.सी. (विलेज एजुकेशन रिसोर्स सेन्टर एक स्थानीय गैर-सरकारी संगठन है) के द्वारा चलाये जा रहे परम्परागत जल एवं स्वच्छता कार्यक्रम का मूल्यांकन किया गया तथा बाद में उनके द्वारा 1999 के अन्त में तथा वर्ष 2000 में बांग्लादेश में स्वच्छता के क्षेत्र में बहुत काम किया गया. इन गतिविधियों से उनके विचारों एवं अनुभव के आधार पर समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की अवधारणा का विकास हुआ. समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की अवधारणा के अन्तर्गत सहभागी ग्रामीण अध्ययन (पीआरए) विधि का उपयोग होने से स्थानीय समुदाय स्वयं अपनी स्वच्छता की स्थिति का विश्लेषण करते तथा खुले में शौच के सार्वजनिक स्वास्थ्य पर तथा आस-पास के पूरे पर्यावरण पर पड़ने वाले भयानक दुष्परिणामों को स्पष्ट रूप से समझ जाता है. (विस्तृत विवेचन के लिये परिशिष्ट क पृष्ठ 84 देखें). जब इस विधि का प्रयोग कुशलतापूर्वक ढंग से किया जाता है तथा सुगमकर्ता द्वारा शौचालय निर्माण की सामग्री पर मिलने वाली आर्थिक सहायता नीति तथा शौचालय निर्माण की विधियों के निर्धारण की बातों को बीच में नहीं लाया जाता है तो समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता विधि के द्वारा समुदाय में इस प्रकार की अन्त:प्रेरणा की चिंगारी जगाई जा सकती है कि वे सब मिल कर समस्या के निदान के लिये तुरंत खुले में शौच से पूर्ण तरह मुक्त होने के लिये कार्य करने को उद्यत हो जायें. सुगमकर्ताओं की कार्यविधि की एक नई शैली विकसित हुई है. अपने आदर्श रूप में इसके अन्तर्गत इस बात पर बल दिया जाता है कि "मानव मल" के लिये स्थानीय भाषा में प्रचलित अपरिष्कृत शब्द का ही प्रयोग किया जाये तथा स्थानीय समुदाय के सदस्यों को आसपास के सबसे गन्दे और सबसे अधिक मलयुक्त स्थान का भ्रमण करने के लिये प्रोत्साहित किया जाये. जब वे अपनी शौच करने की आदत को इस प्रकार पुन: देखते तथा विश्लेषित करते हैं तो उन्हें गहरा आघात लगता है, घृणा और शर्म महसूस होती है. यह शैली उकसाती है, यह मनोविनोदपूर्ण भी है तथा इसमें सारे निर्णय समुदाय पर ही छोड़ दिये जाते हैं.

कमल कार द्वारा वर्ष 2000 से किये जा रहे व्यावहारिक प्रशिक्षणों के कारण तथा कई संगठनों की सहायता तथा विभिन्न देशों में पारस्परिक भ्रमण से समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता विधि बांग्लादेश की अन्य संस्थाओं तक तथा दक्षिण एवं दक्षिण पूर्व एशिया, अफ्रीका, लेटिन अमेरिका, और मिडिल ईस्ट के देशों तक भी पहुंच गई. संगठनों के निःस्वार्थ सदस्यों के द्वारा बहुत महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया गया. आज बांग्लादेश, भारत, कम्बोडिया, इण्डोनेशिया और पाकिस्तान में समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता का व्यापक प्रसार हो गया है. प्रशिक्षणों के माध्यम से इसका प्रसार विभिन्न स्तरों तक चीन, मंगोलिया और नेपाल में भी हो चुका है. हाल ही में इथियोपिया, जाम्बिया, कीनिया और अफ्रीका के अन्य देशों, दक्षिण अमेरिका के बोलीविया तथा मिडिल ईस्ट के यमन में भी इसकी उत्साहवर्धक शुरुआत हो गई है. कमल कार द्वारा प्रदान किये जा रहे इन प्रशिक्षणों के प्रायोजकों में वाटर एण्ड सैनिटेशन प्रोग्राम - विश्व बैंक, केयर, वाटरएड, सिमावी (वाटर एण्ड सैनिटेशन फॉर लो इनकम कम्युनिटीज, इण्डोनेशिया), बि बिल एण्ड मेलिण्डा गेट्स फाउण्डेशन द्वारा पूर्वी जावा में सहायतित सम्पूर्ण स्वच्छता एवं स्वच्छता विस्तार परियोजना, यमन की सोशियल फण्ड फॉर डेवलपमेन्ट, इण्डोनेशिया में कार्यरत आयरलैण्ड की गैर-सरकारी संस्था चाइल्ड रिफ्यूजी एण्ड इन्टरनेशनल, प्लान इन्टरनेशनल तथा यूनिसेफ आदि सम्मिलित हैं.

इस हस्तपुस्तिका की आवश्यकता क्यों है ?

शुरुआत में समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के अन्तर्गत लोगों में प्रेरणा की चिंगारी जगाने पर ही सारा ध्यान केन्द्रित और सीमित था. इन्स्टिट्यूट ऑफ डेवलपमेन्ट स्टडीज द्वारा नवम्बर 2005 में कमल कार के द्वारा समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता पर लिखी गई व्यावहारिक मार्गदर्शिका का प्रकाशन किया गया. इस मार्गदर्शिका का विषय है कि कैसे समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता को सक्रिय रूप से गतिमान किया जाये. इस मार्गदर्शिका की मांग बहुत रही है और इसका अनुवाद अम्हारिक, अरेबिक, बहासा इण्डोनेशिया, चीनी, बंगाली, हिन्दी, खमेर, मराठी, नेपाली, मंगोलियन, स्वाहिली, उर्दू तथा अन्य भाषाओं में किया जा चुका है. लेकिन समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता में लोगों में चिंगारी जगाने या उन्हें प्रेरित करने के आगे भी बहुत कुछ है यद्यपि यह उसका सबसे महत्वपूर्ण और केन्द्रीय भाग है. एक ऐसी हस्तपुस्तिका की आवश्यकता और मांग महसूस की जा रही थी जो कि उद्दीपन (ट्रिगरिंग) से पहले, उद्दीपन के बाद की महत्वपूर्ण स्थितियों तथा इसके प्रसार तथा इससे आगे विकास जाने की स्थितियों के विषय में अनुभवों एवं परामर्शों का स्रोत हो सके. साथ ही उद्दीपन विधि भी अनुभवों के कारण अधिक प्रभावी, परिष्कृत एवं अधिक समृद्ध हो गई है. यह हस्तपुस्तिका अनुभवों, विविध व्यावहारिक सबकों तथा अलग-अलग देशों में विकसित किये गये अभिनव तरीकों को एक साथ लाकर समय की मांग को कुछ हद तक पूरा करने का एक प्रयास है. इस हस्तपुस्तिका में अद्यतन सामग्री का समावेश है इसलिये अब पुरानी मार्गदर्शिकाओं को छोड़कर इसका ही प्रयोग करना चाहिये. स्थानीय स्तर पर या राष्ट्रीय स्तर पर प्रशिक्षकों या कार्यान्वयन से जुड़े व्यक्तियों के द्वारा स्थानीय परिस्थितियों के अनुसार विकसित मार्गदर्शिकाओं को त्यागने की आवश्यकता नहीं है वरन् इस हस्तपुस्तिका के आधार पर उन्हें, यदि उपयुक्त हो तो, वांछित परिवर्द्धन, किया जा सकता है.

यह हस्तपुस्तिका ऐसे विचारों एवं अनुभवों के संकलन के रूप में विकसित की गई है जिसका उपयोग समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के अन्तर्गत अभिमुखीकरण कार्यशालाओं, स्टेकहोल्डरों हेतु परामर्श, सुगमकर्ताओं, स्वाभाविक नेताओं के प्रशिक्षण और समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की गतिविधियों के कार्यान्वयन में एक साधन के रूप में किया जा सकता है. स्थानीय स्तर पर कार्यरत कर्मियों, सुगमकर्ताओं और प्रशिक्षकों को समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के लिये नियोजन, कार्यान्वयन एवं अनुवर्ती गतिविधियों में यह एक मार्गदर्शन के स्रोत के रूप में सहायक सिद्ध होगी.

इस हस्तपुस्तिका का प्रयोग करने वालों को चाहिये कि वे इसके मार्गदर्शन का उपयोग उस प्रकार करने के लिये अपने को पूर्ण रूप से स्वतंत्र समझें जो उन्हें सबसे अच्छा और उपयुक्त लगता हो. समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के क्रियान्वयन के लिये केवल यही विधियां नहीं है जो कि इसमें दी गई हैं. समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की तैयारी के लिये, ट्रिगरिंग, ट्रिगरिंग के बाद की अनुवर्ती गतिविधियों के लिये तथा गतिविधियों को स्थानीय परिस्थितियों, संस्कृतियों एवं अवसरों के अनुरूप ढालने के लिये भिन्न-भिन्न अभिनव तरीकों का प्रयोग करने के लिये प्रोत्साहित किया जाता है. सुगमकर्ता नये तरीके खोजते और विधियों को स्थानीय परिस्थितियों के अनुकूल ढालने के लिये पूर्ण रूप से स्वतंत्र हैं और उन्हें अपने अनुभव एवं ज्ञान के आधार पर निर्णय करना चाहिये कि क्या करें और क्या न करें तथा किस तरीके का किस स्थान पर प्रयोग करें. इस हस्तपुस्तिका में दिये गये विचार और परामर्श का कई बार व्यावहारिक रूप से प्रयोग किया जा चुका है तथा उन्हें व्यावहारिक कसौटी पर खरा पाया गया है परन्तु यह सुगमकर्ता को ही तय करना होगा कि उनके कार्य स्थल के संदर्भ में क्या करना उचित होगा. मूल सिद्धान्त है स्थानीय समुदायों का सशक्तिकरण जिससे वे स्वयं अपनी स्थिति का विश्लेषण कर सकें और पूर्ण रूप से खुले में शौच से मुक्त होने के लिये अपनी कार्य योजना बना कर उसका क्रियान्वयन कर सकें.

समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता

समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता लोगों के स्वच्छता सम्बन्धी व्यवहार में परिवर्तन के लिये आत्म प्रेरणा की चिंगारी जगाने पर ही केन्द्रित है न कि शौचालयों के निर्माण पर. स्थानीय अथवा बाहर से आये सुगमकर्ताओं के द्वारा सामाजिक जागृति के माध्यम से व्यवहार परिवर्तन के लिये प्रेरणा जगाने की इस प्रक्रिया का क्रियान्वयन किया जाता है.

इसके अन्तर्गत व्यक्तिगत व्यवहार के स्थान पर पूरे समुदाय के व्यवहार पर ध्यान केन्द्रित किया जाता है. खुले में शौच से मुक्त होने का लाभ पूरे समुदाय को प्राप्त होता है और इसीलिये यह बोध हो जाने पर समुदाय की सहकारिता बढ़ जाती है. सभी लोग मिल कर यह निर्णय करते हैं कि सभी के लाभ के लिये किस प्रकार से स्वच्छ एवं आरोग्यपूर्ण वातावरण बना सकते हैं. मूल बात यह है कि इस अवधारणा के अन्तर्गत व्यक्तिगत स्तर पर मिलने वाली आर्थिक सहायता का कोई उल्लेख नहीं किया जाता तथा न ही शौचालयों के किसी मॉडल विशेष को अपनाने की बात कही जाती है. परिवारों के बीच एकता, सहकारिता और परस्पर सहायता की भावना समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की सफलता की कुंजी है. यह भी उल्लेखनीय है कि जैसे-जैसे समुदाय खुले में शौच से मुक्त होने की दिशा में आगे कदम बढ़ाने लगता है तो समुदाय में से ही कुछ स्वाभाविक नेता उभर कर सामने आ जाते हैं, स्थानीय स्तर पर उपलब्ध

इस मसौदे, यमन में खुले में शौच के विरोध में नारे लगाते हुए बच्चों का समूह

सामग्री से निर्मित होने वाले कम लागत शौचालयों के मॉडल भी लोगों के द्वारा स्वयं विकसित कर लिये जाते हैं तथा समुदाय द्वारा स्वयं ही पुरस्कार और दण्ड की एक व्यवस्था विकसित करके लागू कर दी जाती है. समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के अन्तर्गत समुदाय को सम्पूर्ण स्वच्छता का पूर्ण उत्तरदायित्व लेने तथा अपनी कार्य योजना बना कर क्रियान्वित करने के लिये प्रोत्साहित किया जाता है.

सही अर्थ में सम्पूर्ण स्वच्छता में कई चीजें सम्मिलित हैं जैसे, पूर्ण रूप से खुले में शौच बन्द करना, सुनिश्चित करना कि सभी स्वच्छ शौचालय का ही प्रयोग करें, खाना बनाने से पहले और खाने से पहले, शौच के बाद तथा बच्चों के मल को साफ करने या जानवरों और चिड़ियों के सम्पर्क में आने के बाद हाथों को साबुन से ठीक से धोना, भोजन सामग्री और जल को हमेशा आरोग्यपूर्ण ढंग से लाना और रखना, जानवरों की गन्दगी तथा घरेलू अवशिष्ट का सुरक्षित निपटान जिससे सुरक्षित एवं स्वच्छ वातावरण का निर्माण हो सके. समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के अन्तर्गत महत्वपूर्ण पहले चरण के रूप में खुले में शौच से मुक्ति पर ध्यान केन्द्रित किया जाता है जिससे लोगों के स्वच्छता सम्बन्धी व्यवहार परिवर्तन की शुरुआत हो सके. इसके अन्तर्गत सबसे पहले लोगों को इस प्रकार सक्षम करने का प्रयास किया जाता है कि वे खुले में शौच की अपनी आदतों के मूल्यांकन, अवलोकन और विश्लेषण तथा इसके दुष्परिणामों के बोध के माध्यम से अपनी स्वच्छता की स्थिति को स्वयं स्पष्ट रूप से समझें. परिणाम होता है सार्वजनिक रूप से शर्म और घृणा का अनुभव जिसके कारण अकसर खुले में शौच बन्द कर आस-पड़ोस को स्वच्छ करने की तीव्र इच्छा जाग जाती है.

जब समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता का क्रियान्वयन ठीक से होता है तो

- यह पूर्ण होता है अर्थात् यह समुदाय के सभी सदस्यों तथा आगन्तुकों को प्रभावित करता है
- यह समुदाय के सभी सदस्यों के द्वारा मिल कर लिये गये निर्णय पर आधारित होता है और इस पर सभी के द्वारा कार्रवाई की जाती है
- यह सभी के द्वारा मिलकर प्राप्त की जाने वाली उपलब्धि की भावना से प्रेरित होता है तथा इस अभिप्रेरणा का स्रोत समुदाय का बोध ही होता है न कि बाहरी आर्थिक सहायता या सब्सिडी

- इस प्रक्रिया के दौरान नये स्वाभाविक नेताओं की पहचान हो जाती है या विद्यमान नेताओं में नई प्रतिबद्धता जाग जाती है जिससे वे अपने ढंग से अपनी स्थिति को बदलने के लिये प्रयासरत हो जाते हैं न कि किसी निर्दिष्ट योजना का अनुसरण करके
- विभिन्न प्रकार के कार्यों के तरीके तथा नये उपाय स्थानीय स्तर पर विकसित हो जाते हैं
- स्वयं सहायता और सहकारिता की पारम्परिक परिपाटी पुनर्जीवित हो जाती है और खुले में शौच से मुक्त होने का स्तर प्राप्त करने की प्रक्रिया में अमीरों और गरीबों के बीच में सामाजिक सहकारिता एवं एकता के नये उदाहरण उभर जाते हैं
- खुले में शौच को समाप्त करने तथा सम्पूर्ण साफ सफाई की स्थिति प्राप्त करने के अभियान और स्थानीय कार्रवाई में पुरुष, महिला, किशोर और बच्चे सभी जुड़ जाते हैं
- समुदाय के द्वारा सभी की सहभागिता से चलाये जा रहे अभियान की ओर बहुधा स्थानीय नेता, चुने हुए जन प्रतिनिधि, स्थानीय सरकारी लोग एवं गैर-सरकारी संगठन आकर्षित हो जाते हैं तथा सहायता, समर्थन एवं सहयोग प्रदान करते हैं और विचारों के प्रसार हेतु प्रोत्साहन देते हैं
- खुले में शौच से मुक्त समुदाय स्वच्छता की सीढ़ी में और ऊपर बढ़ने लगते हैं तथा स्वच्छता सम्बन्धी सामग्री के स्थानीय व्यापारियों, विक्रेताओं, मिस्त्रियों से सम्पर्क साध कर अपने शौचालयों के निर्माण तथा डिज़ाइन में सुधार करने लगते हैं
- बहुधा खुले में शौच से मुक्त समुदाय इस स्तर को प्राप्त करके चुप नहीं बैठ जाते, वे अब साथ मिल कर अपने समाज को बदलना सीख चुके हैं इसलिये वे अन्य लक्ष्यों को प्राप्त करने की ओर भी उद्यत हो जाते हैं जैसे, "गांव में कोई भूखा न रहे", "कोई बच्चा स्कूली शिक्षा से वंचित न रहे और सभी बच्चे स्कूल जायें", "सभी श्रमिकों को समान मजदूरी मिले और महिलाओं एवं पुरुषों के श्रम को मान्यता मिले", इत्यादि.

1990 में जब सहभागी ग्रामीण आकलन विधियों का प्रसार हुआ तो लोगों के द्वारा इसकी शब्दावली का तो प्रयोग किया परन्तु विधि की मूल भावना और आत्मा को विस्मृत कर दिया गया. परन्तु हम यह आशा करते हैं कि इस हस्तपुस्तिका के द्वारा प्रशिक्षकों, कार्यान्वयन कर्ताओं, प्रबन्धकों और नीति-निर्माताओं को इस प्रकार प्रेरित किया जा सकेगा कि वे तैयारी, क्रियान्वयन एवं अनुवर्ती गतिविधियों के लिये उच्च स्तर सुविधियां का सकेंगे साथ ही संख्यात्मक लक्ष्य निर्धारण विधि को हतोत्साहित किया जा सकेगा क्योंकि लक्ष्य निर्धारण विधि शौचालयों की संख्या की गिनती करने तथा संख्यात्मक लक्ष्य प्राप्त करने तक ही सीमित रह जाती है और इस बात पर बहुत ध्यान नहीं जाता कि कितने समुदायों के द्वारा खुले में शौच से पूर्ण मुक्ति प्राप्त कर ली गई है.

दो अति महत्वपूर्ण पूर्वापेक्षाएं

1. सुगमकर्ताओं की अभिवृत्ति एवं व्यवहार

सभी अच्छे सुगमकर्ता नहीं हो सकते. समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के अन्तर्गत सुगमकर्ता के रूप में अच्छा कार्य कर पाने के लिये एक उपयुक्त अभिवृत्ति या व्यवहार की आवश्यकता होती है. यह सीख कर विकसित किया जा सकता है परन्तु कुछ लोगों की अपेक्षा अन्य में यह अधिक स्वाभाविक रूप से और सहज ढंग से विकसित हो जाता है. यह कार्य पारम्परिक सहभागी ग्रामीण आकलन जैसी प्रक्रियाओं के संचालन विधि से भिन्न है.

अभिवृत्ति और व्यवहार से जुड़े मुख्य बिन्दु

क्या अवश्य करना चाहिये	क्या नहीं करना चाहिये
स्थानीय स्वच्छता की अपनी स्थिति का विश्लेषण एवं आकलन करने के लिये समुदाय के कार्य को सुगम बनाये	लोगों को शिक्षित करना, भाषण देना या उन्हें निर्देशित करना कि उन्हें क्या करना है
समुदाय को उन्हीं के द्वारा किये गये विश्लेषण के आधार पर स्थिति को समझने दें	लोगों को बताना कि क्या अच्छा है और क्या बुरा
प्रक्रिया को इस प्रकार सुगम बनाइये कि समुदाय के सदस्य स्वयं एकजुट होकर कार्रवाई करने के लिये तत्पर हो जायें	कार्रवाई के लिये विवश करना या दबाव डालना
अलग खड़े हो जाइये और इसके आगे जो कुछ होता है उसे स्थानीय नेताओं पर छोड़ दीजिये	प्रभारी बनने की चेष्टा करना
जब समुदाय के सदस्यों में अन्तःप्रेरणा जागने का समय आने वाला हो तो शांत बने रहिये और उन्हें आपस में बातचीत करने दीजिये	जब उत्तेजना से भरे समुदाय सदस्य खुले में शौच करने और अन्य स्वच्छता सम्बन्धी व्यवहार के लिये अपने लोगों को शर्मसार कर रहे हों तो उन्हें बीच में टोकना और रोकना
लोगों को खुले में शौच के पक्ष और विपक्ष में खुल कर तर्क प्रस्तुत करने दीजिये और स्वयं तटस्थ बने रहिये. याद रखिये कि यह अन्तःप्रेरणा जागने की स्थिति के आगमन का सही लक्षण और संकेतक है	समुदाय के सदस्यों को आपस में तर्क-वितर्क करने या एक दूसरे को शर्मसार करने पर हतोत्साहित करना अथवा जल्दी ही यह निष्कर्ष निकाल लेना कि इस प्रकार की प्रतिक्रियायें नहीं होनी चाहिये क्योंकि यह सांस्कृतिक दृष्टिकोण से असंवेदनशील है
आगे आकर पहल करने तथा प्रक्रिया में पूरे मनोयोग से संलग्न हो जाने वाले लोगों की सराहना कीजिये	उभर रहे स्वाभाविक नेताओं की नज़रअन्दाज़ करना
महिलाओं तथा निर्धन वर्ग के सदस्यों को प्रक्रिया में सहभागिता करने के लिये सदा ही प्रोत्साहित कीजिये	महिलाओं, बच्चों और अन्य जो बहुधा उपेक्षित रह जाते हैं को नज़रअन्दाज़ करना
गरीब सदस्यों की सहायता करने के लिये पहल करने वाले सदस्यों की खुली सराहना कीजिये	लोगों की सहायता के लिये आगे आने वाले लोगों को नज़रअन्दाज़ करना
समुदाय के सदस्यों को सरलता से बन सकने वाले शौचालयों के अभिनव डिज़ाइन बनाने और प्रस्तुत करने का अवसर दीजिये	शौचालय के किसी मॉडल विशेष को समुदाय पर थोपना
स्थानीय स्तर पर कार्य योजना बनाने और कार्यान्वित करने तथा स्वयं सहायता को प्रोत्साहित कीजिये	शौचालय निर्माण के लिये अनुदान का प्रस्ताव करना
निर्भीक परन्तु सतर्क रहिये	बहुत नम्र रहना, बहुत नम्रता के साथ लोगों को बदलने का प्रयास करना
हर बात को बहुत ध्यान से सुनिये	लोगों को रोकना और टोकना

व्यवहार और अभिवृत्ति बहुत ही महत्वपूर्ण है. समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की प्रक्रिया को प्रारम्भ करने के लिये निर्भीकता, परानुभूति, मनोविनोद आदि के सम्मिश्रण की आवश्यकता होती है. इसके लिये आवश्यक है कि पढ़ाने या भाषण देने का प्रयास न किया जाये वरन् समुदाय को उनके पर्यावरण के कड़वे सच का सामना करने के लिये सक्षम बनाने के लिये अपना हाथ सुगमकर्ता द्वारा खींच लिया जाये.

2. संस्थाओं का लोचनशील सहयोग

सभी संस्थाएं समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता को आगे बढ़ाने के लिये उपयुक्त नहीं होती हैं. यह आवश्यक है कि संस्थागत सहयोग लचीला हो तथा सदा उपलब्ध हो.

जहां हर निर्देश ऊपर से आता है और कितना अनुदान वितरित कर दिया गया इस पर ही ध्यान केंद्रित होता है ऐसी संस्था के जुड़ने से समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की मूल भावना के ही विघटित हो जाने की आशंका हो जाती है. यह भी ठीक है कि सामान्य स्वच्छता अभियान भी प्रभावी हो सकते हैं यदि वे समुदाय के सशक्तिकरण पर आधारित हो न कि निर्देशों के अनुसार: अनुदान तथा संख्यात्मक भौतिक लक्ष्यों की प्राप्ति पर. दो बातें घातक हैं: बहुत पैसा क्योंकि समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के लिये बहुत कम पैसे की आवश्यकता होती है और कार्मिकों की त्वरित नियुक्तियां तथा उनका अपर्याप्त अभिमुखीकरण और प्रशिक्षण. इसके लिये एक प्रकार के अंकुश और अनुशासन की आवश्यकता होती है जो कई नौकरशाही व्यवस्थाओं में मुश्किल से मिलता है. (अगले पृष्ठ पर दी गई तालिका देखें, मूल अभिवृत्ति और व्यवहार).

उठाये जाने वाले कदमों का अनुक्रम

उठाये जाने वाले कदमों का अनुक्रम निम्नवत् हो सकता है. साथ ही उन साधनों का भी उल्लेख किया गया है जिनका उपयोग गांव के स्तर पर लोगों को प्रेरित करने तथा अभिप्रेरणा की चिंगारी जगाने के लिये किया जा सकता है. इस कार्य को करने का यही एक मात्र तरीका नहीं है परन्तु इसमें कुछ आवश्यक अवयवों को अवश्य ही रेखांकित किया गया है. स्थानीय स्थिति के अनुसार आप इसमें परिवर्तन करने के लिये स्वतंत्र हैं परन्तु क्या करना चाहिये और क्या नहीं इसका अवश्य ही ध्यान रखें क्योंकि यह बहुत महत्वपूर्ण है.

ट्रिगरिंग से पूर्व

समुदाय का चयन
परिचय तथा सहजीकरण

ट्रिगरिंग

सहभागी विधि से गांव की स्वच्छता की स्थिति का विश्लेषण
अभिप्रेरणा की चिंगारी जगाने का क्षण

ट्रिगरिंग के बाद

समुदाय के द्वारा कार्य योजना तैयार करना
अनुवर्ती भ्रमण तथा अन्य गतिविधियां

प्रसार एवं समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के आगे की यात्रा

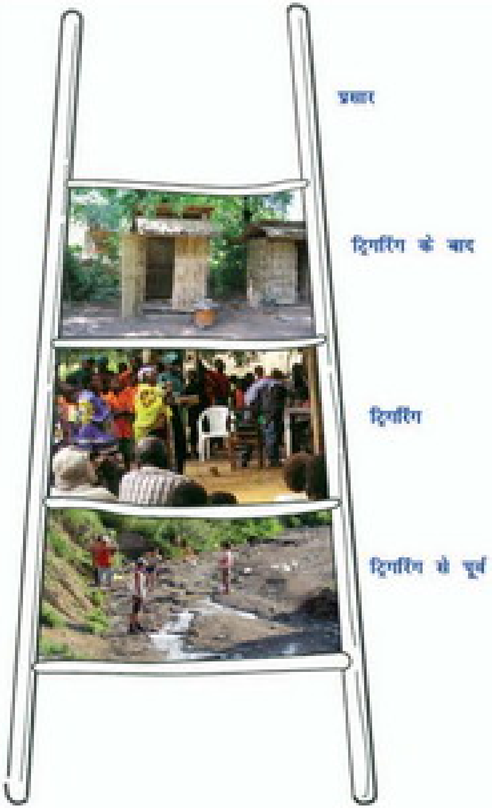

अध्याय 2
ट्रिगरिंग से पहले

समुदाय का चयन

यह एक निर्णायक चरण है

समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता प्रक्रिया पर भिन्न-भिन्न समुदायों की प्रतिक्रिया अलग-अलग होती है. कुछ समुदाय तो परिवर्तन लाने के लिये तत्काल ही प्रेरित हो जाते हैं जबकि अन्य प्रारम्भ में तैयार नहीं होते या अनिर्णय की स्थिति में रहते हैं परन्तु जब उनके सामने आसपास के गांवों में आये परिवर्तन की जानकारी आती है तो उनमें भी परिवर्तन लाने के प्रति तत्परता जागने लगती है. मोटे तौर पर यह देखा गया है कि जिन गांवों में अधिक सफलता प्राप्त हुई है उनमें अधिक जोशीले नेताओं का नेतृत्व था. ऐसे नेता परम्परा की देन भी हो सकते हैं परन्तु बहुधा देखा गया है कि प्रक्रिया के दौरान नये स्वाभाविक नेता उभर कर सामने आते हैं. यह नेता किसी भी वर्ग के हो सकते हैं. गरीब, अमीर, महिला, पुरुष, युवा, समुदाय के सम्मानित सदस्य, जो कि अपने विशिष्ट कौशल से समुदाय को विभिन्न प्रकार से सेवायें प्रदान करते हैं, जैसे दाई, धार्मिक नेता या शिक्षक आदि, इनमें से कोई भी इस प्रकार का स्वाभाविक नेता हो सकता है.

समुदाय में प्रेरणा की स्थिति को जगाने के लिये अच्छे नेतृत्व के अतिरिक्त स्थानीय सामाजिक, भौतिक एवं संस्थागत स्थितियों का अनुकूल होना भी आवश्यक होता है. अभियान संचालन के प्रति समुदायों की प्रतिक्रियाओं में बहुत अन्तर होता है (पृष्ठ 40-42 देखें). "पेट्रोल पम्प में माचिस" जैसी विस्फोटक स्थिति से लेकर "सोयी हुई निष्क्रियता" की सी निराशाजनक स्थितियों तक. कहाँ शुरू करना चाहिये? इस प्रश्न का सही उत्तर ढूँढने के लिये कई लोगों एवं क्षेत्रों के द्वारा अनुकूल एवं चुनौतीपूर्ण स्थितियों की निम्नांकित सूची तैयार करने में महत्वपूर्ण योगदान किया गया है. उन जगहों में भी अभूतपूर्व सफलता प्राप्त हो सकती है जिनके विषय में पहले यह समझा गया हो कि यहाँ तो सफलता की कोई संभावना ही नहीं है. परन्तु यह उचित ही होगा कि आप पहले उन जगहों से शुरू करें जिनमें सफलता की संभावना अधिक हो. इस प्रकार सफलता के कुछ दृष्टान्त सामने आ जायेंगे, आपको अनुभव मिल जायेगा और आपका आत्मविश्वास बढ़ जायेगा. इसके बाद इन उदाहरणों एवं स्वाभाविक नेताओं की सहायता से अभियान को अधिक कठिन स्थानों तक फैलाने का प्रयास कीजिये. यह सूची स्थानों का चुनाव करने में आपके लिये सहायक हो सकती है परन्तु हमेशा की तरह यहाँ भी आप अपने विवेक से ही निर्णय कीजिये.

खुले में शौच से मुक्त समुदायों द्वारा प्रयुक्त किये गये तालाब एवं
लोम्बोक के आसपास, जम्बी, पश्चिमी इण्डोनेशिया

उलानबातर, मंगोलिया शहर के बाहरी भाग में गंदला नाली - ऐसे स्थान जहाँ समान रूप से बहाव वाले ढाल संचालित हो जाते हैं वहां खुले में शौच के स्थानों को अनुकूल रूप से चिन्हित अलग से बनाए जाने चाहिये और समुदाय के लोगों को जागरूक करना चाहिये

क. अधिक अनुकूल

- छोटी बस्ती (बड़े गाँव के बजाय छोटा पुरवा या टोला)
- शहरों और बड़ी सड़कों से दूरस्थ स्थित बस्ती
- सामाजिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से समरूप
- आस-पड़ोस में जंगल का न होना
- नम वातावरण जिससे मल इधर-उधर फैल कर बदबू फैलाता है
- प्रदूषित एवं असुरक्षित जलापूर्ति, जैसा कि कुछ पहाड़ी स्थानों पर पाया जाता है
- जहाँ परिवारों को शौचालय निर्माण के लिये आर्थिक सहायता की कोई योजना न तो वर्तमान में है, न ही पहले थी और न ही पास में या कोई राष्ट्रीय कार्यक्रम चल रहा है
- जहाँ फैली हुई गन्दगी स्पष्ट रूप से दिखाई दे रही हो
- जहाँ डायरिया का प्रकोप और बाल मृत्यु दर अधिक हो
- युवा और प्रगतिशील नेतृत्व हो
- समुदाय में सक्रिय समूह अस्तित्व में हो

कार्यक्रम नीति वातावरण

- जब परिवारों को शौचालय निर्माण की सामग्री पर आर्थिक सहायता का कोई कार्यक्रम न हो और न ही प्रस्तावित हो
- जहाँ समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता अभियान को सफलतापूर्वक चलाने के लिये सुगमकर्ता पूर्ण रूप से प्रशिक्षित, ठीक से प्रेरित और उपयुक्त अभिवृत्ति और व्यवहार वाले हों और उन्हें अपने संगठन से लचीला सहयोग मिल रहा हो
- जहाँ समुदाय को प्रेरित करने के बाद अनुवर्ती प्रोत्साहन और सहयोग की व्यवस्था हो
- दिखावटी राजनीतिक नेतृत्व और कारगर स्थानीय सरकारी तंत्र

वर्तमान स्थितियाँ एवं परिपाटियाँ

- घृणा पैदा करने वाली दिखाई दे रही गन्दगी जहाँ मल के द्वारा फैला प्रदूषण विचलित करने वाला हो
- जहाँ एकान्तता के अभाव के कारण शौच करने में कठिनाई आती हो
- जहाँ शौच करने के लिये निजी, सुरक्षित और सुविधाजनक जगहें न हों अथवा कम हों
- जहाँ मल का कोई आर्थिक मूल्य न हो या बहुत कम मूल्य हो
- जहाँ स्थितियाँ एवं परिपाटियाँ अभियान क्रियान्वयन के प्रारंभ करने तथा प्रक्रिया को आगे ले जाने के लिये अच्छे अवसर प्रदान करती हों यथा; लोग इस बात का विश्लेषण कर सकते हैं कि किस प्रकार वे अपना ही मल खाते हैं और दूसरों के मल से भरे पानी में नहाते हैं
- जहाँ वर्षा होने पर या रात के समय लोग आस पास ही मल विसर्जित कर देते हैं

भौतिक स्थितियाँ

- मिट्टी स्थिर है और आसानी से खोदी जा सकती है
- जल स्तर काफी नीचा है और समय-समय पर बाढ़ या भूस्खलन की आशंका नहीं है
- बस्ती की बनावट ऐसी है कि उसमें पर्याप्त जगह उपलब्ध है
- आसपास के कुंए प्रदूषित नहीं होंगे
- जलापूर्ति असुरक्षित है और उसके विषाक्त होने की आशंका है

सामाजिक और सांस्कृतिक स्थितियाँ

- बीमारियों की भयावह स्थिति, विशेष रूप से डायरिया और बाल मृत्यु
- बस्ती और समुदाय का छोटा आकार (बड़े गाँव के स्थान पर टोला या पुरवा)
- सामाजिक दृष्टि से समरूप समुदाय और परस्पर आपसी मेलजोल
- महिलाओं को परिस्थितियों पर गंभीर अंकुश और पर्दा जहाँ महिलाओं को अपने घर के अन्दर ही कठिनाई में मल विसर्जन करना पड़ता है जिसका निपटान वे रात के अंधेरे में घर से बाहर ले जाकर और फेंक कर करती हैं
- एकजुट होकर काम करने की सुदृढ़ परम्परा
- महिलाओं की बात सुनी जाती है
- प्रगतिशील स्थानीय नेतृत्व

वर्गीकरण के माध्यम से लोगों से सम्पर्क करने और स्वच्छता बढ़ाने की विविधतापूर्ण प्रक्रिया
- पानीपत का तरीका

भारत के हरियाणा राज्य के पानीपत जनपद में समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के 6-7 सुगमकर्ताओं के द्वारा एक गांव में वर्गीकरण की प्रक्रिया प्रारम्भ की गई. उनके द्वारा प्रत्येक परिवार से भेंट की गई और एक छोटे से प्रारूप पर उनके विवरण को अंकित किया गया. इससे बुनियादी जानकारी तो प्राप्त होती ही है साथ ही सुगमकर्ताओं को समुदाय के विषय में जानने और उनसे घनिष्ठता बढ़ाने का अवसर भी मिल जाता है. वर्गीकरण के अन्त में उन्हें घरों में से स्वच्छता के साथ पानी निकालने के लिये प्लास्टिक के बने छल्ले वाले लोटे देने से एक सद्भावना का वातावरण भी बन जाता है. इसकी सहायता से पीने का पानी निकालते समय गन्दे हाथों के उसमें डूबने से पानी के प्रदूषित होने की आशंका समाप्त हो जाती है. वर्गीकरण के लिये दिये गये समय और सहयोग के लिये आभार के रूप में हर परिवार को यह जानकारी भेंट की जाती है. इसके बाद समुदाय के सदस्यों को एक बैठक में भाग लेने के लिये आमंत्रित किया जाता है जो कि सामान्यतया अगले दिन के लिये निर्धारित की जाती है जब कि ट्रिगरिंग की जाती है. तीसरे दिन गांव की जल एवं स्वच्छता समिति की बैठक आयोजित की जाती है जिसमें नियोजन और कार्ययोजना तैयार करने पर विचार किया जाता है.

स्रोत: डॉ. अनिल अग्रवाल, आई.ए.एस.

ख. अधिक चुनौतीपूर्ण

जहाँ निम्नांकित बातें पाई जाती हैं वहां स्थितियाँ अधिक चुनौतीपूर्ण हो सकती हैं, विशेषकर उस समय जब इनमें से कई एक साथ होती हैं. यहाँ यह विचार करने की आवश्यकता होती है कि क्या इन स्थितियों के एक साथ होने के कारण यह समुदाय या उस स्थान को ट्रिगरिंग के लिये कम उपयुक्त बना देती हैं और इसलिये वहां बाद में काम करने की आवश्यकता होगी.

- बड़ी बस्ती
- मुख्य सड़कों एवं शहरों के पास
- सामाजिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से विविधतापूर्ण
- आसपास घना जंगल
- शुष्कता की स्थिति जिससे मल सूख कर विघटित हो जाता है
- शुद्ध पानी के लिये अच्छी तरह सुरक्षित किये गये जल स्रोत
- परिवारों को शौचालय निर्माण की सामग्री पर आर्थिक सहायता का पता है, वर्तमान में या कुछ समय पहले आसपास में चल रहा राष्ट्रीय कार्यक्रम जिसमें शौचालय निर्माण के लिये परिवारों को अनुदान देने की व्यवस्था हो
- थोड़े तौर पर साफ सफाई की अच्छी स्थिति
- डायरिया, रोग का कम प्रकोप और न्यून बाल-मृत्यु दर
- बूढ़े और प्रतिक्रियावादी स्थानीय नेतृत्व
- समुदाय में सक्रिय समूहों का अभाव

कार्यक्रम नीति वातावरण

- जहाँ हाल ही में या वर्तमान में शौचालय निर्माण हेतु अनुदान प्रदान करने का कार्यक्रम चल रहा है या लोगों की जानकारी के अनुसार प्रस्तावित है
- ऐसी संस्थाओं की उपलब्धता जिनके पास अनुदान देने के बड़े बजट हैं तथा शौचालय निर्माण के निर्धारित लक्ष्य एवं भौतिक रूप से निर्मित शौचालयों की संख्या के आधार पर प्रगति का मूल्यांकन करने की व्यवस्था
- ऐसी संस्थाओं के कर्मियों के द्वारा समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता अभियान का विरोध
- ट्रिगरिंग के बाद अनुवर्ती कार्रवाई और प्रोत्साहन के लिये संभावना का अभाव
- समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता चला रही संस्था और उसके कर्मियों में परम्परागत आधारित कार्य संस्कृति कि सेवा ऊपर से बदल जायेगा नहीं किया जायेगा
- बड़े कार्यक्रम जिनमें निर्माण सामग्री पर व्यय करने के लिये बहुत धन उपलब्ध है और वे समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता को अंगीकार करने के लिये उत्सुक हैं परन्तु आर्थिक सहायता प्रदान करने के क्रम और तरीके को बदल कर अधिक लचीला बनाने के लिये तैयार नहीं हैं.

वर्तमान स्थितियाँ एवं परिपाटियाँ

- सुरक्षित जलापूर्ति जिस पर खुले में शौच से मुक्त होने से कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा
- पानी के जल स्रोत का उपयोग जो कि मल को आगे बहा ले जाता है (सरिता, नदी या समुद्र में ज्वार भाटा)
- मछली पालन के लिये मल का आर्थिक उपयोग, मल का खाद और सब्जी उगाने के लिये उपयोग
- मल विसर्जन के लिये मिट्टी, सुलभ एवं सुविधाजनक स्थानों का होना (उदाहरण के लिये हर समय उपलब्ध जल के साथ लटकते हुए शौचालय)
- बहुत सी झाड़ियाँ, वृक्ष और ऐसी भूआकृति कि मल विसर्जन के लिये अच्छी ओट मिल सके

भौतिक स्थितियाँ

- ठोस पथरीली जमीन जिसमें खुदाई करना कठिन
- बहुत ही भुरभुरी और ढह जाने वाली भूतल
- बस्तियों की इस प्रकार की संरचना कि उनमें खाली जगह ढूँढना कठिन और शौचालय के गड्ढे के शीघ्र ही भर जाने की आशंका
- शौचालयों के कारण जल के कुँओं के प्रदूषित हो जाने का जोखिम
- शुष्क क्षेत्र जिसमें मल जल्दी सूख कर कायांतरित और हानिरहित हो जाता है, उदाहरण के लिये [illegible] रेगिस्तान
- जहाँ बिना दिखाई दिये नियमित रूप से शौच करने के अवसर उपलब्ध हैं, जैसे कि जब पानी लाने के लिये लोग दूर जाते हैं, या स्कूल जाते हैं
- जहाँ लोग खेतों से काफी दूर होते हैं

सामाजिक स्थितियाँ

- जहाँ लोग बहुत स्वतन्त्र हों तथा सामुदायिक बहुत कम हो
- सामाजिक रूप से बंटा हुआ समाज जिसमें बहुत कम एका हो
- जहाँ एकजुट होकर काम करने की परम्परा बहुत कमजोर हो
- जहाँ महिलाओं की बात शायद ही कभी सुनी जाती हो
- जहाँ एक ही शौचालय का परिवार के सभी सदस्यों के द्वारा उपयोग वर्जित हो
- जहाँ अलग-अलग मौसम में बाहर से लोगों का आना-जाना लगा रहता हो और जनसंख्या अस्थिर हो उदाहरण के लिये ऋतु विशेष में बाहर से मजदूरों का आना, खानाबदोश जनजाति, गरीब सीमान्त किसान जो वर्ष में कभी-कभी मजदूरी करने के लिये बाहर चले जाते हैं
- जहाँ कामकाजी का अनुपात अधिक हो और भू-स्वामी कम

ग. अधिक अनुकूल या चुनौतीपूर्ण स्थितियों पर निर्भर होना

- पानी सस्ता/कीमत
- सांस्कृतिक और धार्मिक मूल्य एवं आस्था और विश्वास

यदि चयन करने का अवसर हो तो यह अच्छा होगा कि समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता अभियान को ऐसे गाँवों से प्रारम्भ किया जाये जिनमें अधिक अनुकूल स्थितियाँ विद्यमान हों. यद्यपि ऐसे कई उदाहरण सामने हैं जिनमें चुनौतीपूर्ण स्थितियों के संदर्भ में भी सफलता प्राप्त हुई है. ऐसे गाँवों में भी जहाँ कार्यक्रम के तहत शौचालय निर्माण के लिये आर्थिक सहायता प्रदान करने की व्यवस्था थी. चुनौतीपूर्ण स्थितियाँ तो बस ऐसी स्थितियाँ हैं जिनमें चुनौती छिपी हुई है. चुनौतियों का सामना किया जा सकता है और उनसे पार पाया जा सकता है. कई कारकों का उल्लेख तो बाद में किया जायेगा परन्तु पाठक की सुविधा के लिये कुछ मुख्य सुझाव यहाँ तालिका में दिये जा रहे हैं (पृष्ठ 20-21).

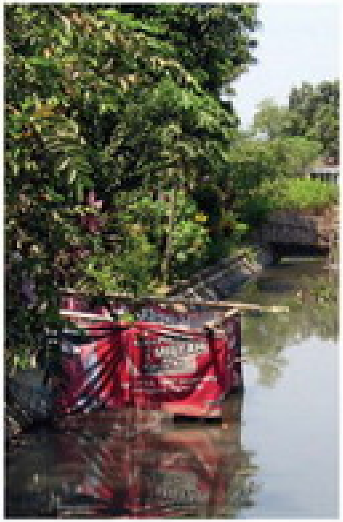

इण्डोनेशिया में नदी या नहर में शौच करना सामान्य परिपाटी है. उसी पानी का इस्तेमाल नहाने और कपड़े धोने के लिये भी किया जाता है

ट्रिगरिंग के लिये स्थिति मूल्यांकन से पहले परिचय और मेल-जोल बढ़ाकर घनिष्ठता स्थापित करना

ट्रिगरिंग के लिये तैयारी करने के कई तरीके हैं और विभिन्न प्रकार के अनुभव परन्तु विभिन्न आशयवाले गये तरीकों और अनुभवों को अपेक्षित मात्रा में अभिलेखित नहीं किया गया है. इस पर गंभीरता से विचार करने और समीक्षा करने की आवश्यकता है. कुछ साधारण बातें भी हैं जिन पर विचार करना होता है जैसे बैठक के लिये उपयुक्त तिथि, स्थानों और समय का चयन. जहाँ प्रायोजक गैर-सरकारी संस्था पहले से ही समुदाय के साथ कार्यरत है वहाँ परिचय और घनिष्ठता स्थापित करने के लिये अधिक समय लगाने की आवश्यकता नहीं होगी. यदि कोई गैर-सरकारी संस्था पहले से कार्यरत नहीं है तो समुदाय के सदस्यों को अपने भ्रमण का कारण बताने के लिये आपको अधिक समय लगाना पड़ सकता है.

सावधानी से की गई तैयारी यह सुनिश्चित करने के लिये बहुत आवश्यक है कि ट्रिगरिंग की बैठक में समुदाय के सभी वर्गों का प्रतिनिधित्व हो सके. ऐसा हो सकता है कि इस प्रकार की बैठकों में केवल विशेष या महिलाएं और बच्चे अथवा बस्ती के किसी मोहल्ले विशेष से ही लोग भाग लेने आयें. ऐसा हो सकता है कि ट्रिगरिंग बैठक में अलग-अलग बस्तियों से पुरुष, मध्य/उच्च वर्ग के लोग और समुदाय के अधिक प्रभावशाली सदस्य उपस्थित हों न हों. यदि समाज के सभी वर्गों के लोग बैठक में उपस्थित नहीं होंगे तो ट्रिगरिंग के परिणामस्वरूप सबके द्वारा एकजुट होकर कार्यक्रम को कार्यान्वित करने की संभावना कम हो जायेगी.

सीएलटीएस के विभिन्न चरणों के लिये एक प्रतीकात्मक समय सारणी

(शौच की अनुभवी गतिविधियों को समझ से समय करना हमेशा महत्वपूर्ण होता है. स्थानीय स्थितियों पर बहुत कुछ निर्भर होता है तथा एक स्थान के लिये जो उपयुक्त है और दूसरे स्थानों के लिये जो उपयुक्त पाया जायेगा उसमें बहुत अन्तर हो सकता है).

चरण	सुझायात्मक समयावधि	स्टाफ तथा अन्य सदस्य	अतिरिक्त टिप्पणियाँ
ट्रिगरिंग से पहले तैयारी	जिन गाँवों में गैर-सरकारी संस्थाएँ/सहयोगी संस्थाओं के द्वारा कार्यक्रम चलाये जा रहे हैं उनमें आधे दिन से लेकर एक सप्ताह तक का समय लग सकता है. एक या दो बार गाँव का भ्रमण जरूरी होना चाहिये	सामान्यतया कम से कम एक या दो कर्मियों का कार्यक्रम से पहले गाँव का भ्रमण करना जरूरी है ताकि सुगमकर्ताओं के भ्रमण की तिथियाँ एवं बैठक के स्थान का निर्धारण किया जा सके और समुदाय को भ्रमण के उद्देश्य से अवगत कराया जा सके	स्थानीय नेताओं, गाँव के मुखिया से मिले गाँव के सभी पुरुषों का भ्रमण करें जिससे गाँव के आकार, जनसंख्या, सबसे गरीब क्षेत्र और आर्थिक सहायता के इतिहास, यदि कोई हो, की जानकारी हो सके. ऐसी कि क्या गाँव समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के लिये अनुकूल है अथवा चुनौतीपूर्ण. जिस दिन गाँव का हाट हो या कहीं शादी हो या कोई शोक हो उस दिन बैठक नहीं रखनी चाहिये.
ट्रिगरिंग	पूरी प्रक्रिया एक ही दिन में सम्पन्न होनी चाहिये (3 से 5 घण्टों में).	कम से कम 3-4 और अधिकतम 5 सुगमकर्ताओं के दल के द्वारा ट्रिगरिंग सम्पन्न की जानी चाहिये परन्तु समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की प्रशिक्षण कार्यशाला में अधिक सुगमकर्ता हो सकते हैं	खुले विचार से प्रक्रिया को शुरू करने का प्रयास कीजिये और पहले से निर्धारित विशिष्ट धारणा या कार्यसूचना अथवा अपेक्षित परिणाम को लेकर न चलिये. यदि किसी कारण से समुदाय में ट्रिगरिंग की स्थिति न बनती हो तो भी वहाँ से धन्यवाद के साथ ही विदा लीजिये.
ट्रिगरिंग के बाद	तीन सप्ताह से लेकर तीन माह की अवधि के अन्दर किसी भी समय गाँव को खुले में शौच से मुक्त हो जाना चाहिये. 6 माह से 1 वर्ष की अवधि बहुत लम्बी है. जो सबसे महत्वपूर्ण बात लोगों के मन में उठनी चाहिये वह यह है कि "हम अब एक दूसरे का मल नहीं खायेंगे". सभी इस घृणास्पद स्थिति से बाहर निकलने का प्रयास करें	ट्रिगर किये गये गाँव में स्थानीय स्थिति को देखते हुए पहले सप्ताह में 1 या 2 बार भ्रमण एक या दो कर्मियों द्वारा किया जायेगा. उसके बाद कई अवसरों पर भ्रमण इस प्रकार किया जायेगा कि समुदाय को प्रोत्साहित किया जा सके और उसकी सहायता की जा सके, लेकिन भ्रमण बहुत जल्दी- जल्दी नहीं किये जाने चाहिये. याद रहे कि समुदाय को ही आगे आना है और बाहरी सहायता पर निर्भर नहीं रहना है	सहयोग कीजिये, प्रोत्साहित कीजिये परन्तु उन्हें सलाह नहीं. यदि आवश्यक हो तो स्वाभाविक नेताओं, समुदाय के सदस्यों को पड़ोसी गाँवों या स्थानीय बाजारों का भ्रमण करने की व्यवस्था कीजिये जहाँ स्वच्छता की सामग्री मिलती हो. खुले में शौच से मुक्त हो गये गाँवों के स्वाभाविक नेताओं को अतिथि सुगमकर्ताओं के रूप में कम लागत शौचालयों का प्रदर्शन करने के लिये आमंत्रित कीजिये.

चुनौतीपूर्ण स्थितियों से कैसे निपटा जाये
कुछ सुझाव

चुनौतीपूर्ण या अनुकूल न होने का अर्थ यह नहीं है कि इस प्रकार के गांवों में समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता का कार्यान्वयन करने का प्रयास नहीं करना चाहिये. वास्तव में बांग्लादेश, नेपाल, तंजानिया, इथियोपिया, बोलीविया के जिन गांवों में पहली बार या प्रशिक्षण कार्यशालाओं के दौरान समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता को क्रियान्वित कर सफलतापूर्वक ट्रिगरिंग की गई वे सभी "अधिक चुनौतीपूर्ण" गांव थे. दूसरे शब्दों में इन गांवों में 'पहल' के द्वारा संचालित स्वच्छता की पारम्परिक विधि के अन्तर्गत शौचालयों के निर्माण के लिये परिवारों को आर्थिक सहायता प्रदान की गई थी. परन्तु फिर भी इनमें से कई गांवों में खुले में शौच की प्रथा व्यापक रूप से फैली हुई थी और कई शौचालयों का उपयोग नहीं किया जा रहा था. दिलचस्प बात यह है कि समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के क्रियान्वयन के बाद इनमें से अधिकतर गांवों के द्वारा खुले में शौच से मुक्त होने का स्तर प्राप्त कर लिया गया. ट्रिगरिंग के लिये सुगमकर्ता का अच्छा कौशल और स्थानीय परिस्थिति को समझते हुए स्वविवेक से निर्णय लेना अत्यन्त महत्वपूर्ण है.

इस प्रकार के गांवों में ट्रिगरिंग के लिये कुछ सुझाव इस प्रकार हैं:

- समुदाय के सदस्यों को अपना और अपने दल के सदस्यों का परिचय इस प्रकार दीजिये कि आप सब सीखने आये हैं (स्वच्छता सम्बन्धी व्यवहार, खुले में शौच के कारणों एवं प्रथा का अध्ययन करने) न कि स्वच्छता के अधिकारियों के रूप में शौचालयों के आर्थिक सहायता के साथ या इसके बिना शौचालय निर्माण को बढ़ावा देने के लिये

- समुदाय को बिल्कुल स्पष्ट कर दीजिये कि आप लोगों से खुले में शौच करना बन्द करने के लिये या उनके स्वच्छता सम्बन्धी व्यवहार को बदलने के लिये अनुरोध करने के लिये नहीं आये हैं. यह भी पूरी तरह स्पष्ट कर दीजिये कि आप आर्थिक सहायता प्रदान करने वाली किसी भी संस्था से जुड़े नहीं हैं और न ही किसी प्रकार विशेष के शौचालय निर्माण को बढ़ावा देने के लिये हैं.

- ट्रिगरिंग की प्रक्रिया के दौरान (विशेष रूप से जब परोक्ष शौचालय निर्माण के लिये आर्थिक सहायता के विषय में पूछें) उन्हें नम्रतापूर्वक बता दीजिये कि आप न तो स्वच्छता की सामग्री बेचने वाले हैं और न ही उनकी आदतों को बदलने के लिये प्रयास करने वाले हैं. वे अगर चाहें तो खुले में शौच करना जारी रख सकते हैं. कुछ चरम स्थितियों में अन्य संस्थाओं द्वारा पिछले वर्षों में मुफ्त में दिये गये ऐसे शौचालय उन्हें दिखा सकते हैं जिनका कभी उपयोग ही नहीं किया गया. उन्हें यह बता दीजिये कि आप को स्पष्ट है कि शौचालयों का प्रयोग न करने तथा खुले में शौच जारी रखने का निर्णय उनका था और इस स्थानीय निर्णय में आप कोई हस्तक्षेप नहीं करना चाहते. वे खुले में शौच करते रहने के लिये स्वतंत्र हैं. आप तो केवल समुदाय के द्वारा खुले में शौच करते रहने के निर्णय के कारणों को समझना चाहते हैं. और यही आप उनसे समझकर सीखना चाहते हैं.

- यदि ट्रिगरिंग की प्रक्रिया समाप्त होने के बाद आप यह पाते हैं कि समुदाय में एकजुट होकर खुले में शौच से मुक्त होने के लिये कुछ करने का जोश नहीं आया है तो उनसे पूछिये कि क्या आप उनकी एक फोटो खींच सकते हैं, या उनके गांव के नाम को अपनी रिपोर्ट में इस टिप्पणी के साथ लिख सकते हैं कि गांव के लोगों ने यह फैसला किया है कि वे एक दूसरे का मल खाते रहेंगे और खुले में शौच करते रहेंगे. यह अच्छा ही है. वे क्यों अपनी सदियों पुरानी खुले में शौच करने की आदत को बदलने का प्रयास करें? हो सकता है कि वे कहें कि वे शीघ्र ही खुले में शौच करना बन्द कर देंगे. उन्हें बता दीजिये कि वे खुले में शौच करते रहने के लिये स्वतंत्र हैं और वे आपको गलत न समझें तथा किसी दबाव में न आयें.

- समुदाय को ही अपने निर्णय करने के लिये प्रोत्साहित कीजिये. उनका सशक्तीकरण कीजिये. उन्हें तय करने दीजिये कि क्या अच्छा है और क्या बुरा. बाहर से आने वालों से उन्हें प्रभावित नहीं होना चाहिये चाहे बाहरी व्यक्तियों के द्वारा नकद राशि या मुफ्त सामग्री ही क्यों न दी जा रही हो. गांव के संदर्भ में उचित निर्णय लेने के लिये स्थानीय लोगों का विवेक ही सबसे उपयुक्त होता है.

- अधिकतर मामलों में आपको समुदाय के तात्कालिक प्रतिरोध का सामना करना पड़ेगा. जो लोग अगले दिन खुले में शौच करने जायेंगे उनसे अपने हाथ खड़े करने को कहिये. अगर कोई हाथ खड़ा न करे तो पूछिये कि अगर वे खुले में शौच नहीं करेंगे तो क्या करेंगे. कुछ लोग कहेंगे कि उन्हें सरल गड्ढे वाले शौचालय बनाने में कुछ समय लगेगा. हो सकता है कि कुछ लोग कहें कि जब अगली बार वे बाहर जायेंगे तो अपने साथ बेल्चा ले जायेंगे तथा छोटा गड्ढा खोद कर उसमें शौच करेंगे तथा उसके बाद उसे मिट्टी से ढक देंगे. पूछिये कि क्या सभी लोग ऐसा करेंगे? अगर अगले दिन से सभी ऐसा करने लगेंगे तो उसका क्या तात्कालिक प्रभाव होगा? उन्हें प्रोत्साहित कीजिये और उनके द्वारा उत्तर देने के लिये ताली बजा कर उनका अभिवादन कीजिये.

- हर बार जब समुदाय के किसी सदस्य के द्वारा खुले में शौच मुक्त होने के लिये किसी नई पहल का उल्लेख किया जाता है तो सभी को उस समय ताली बजाने के लिये कहिये. जोर से ताली बजाइये और समुदाय के सदस्यों को भी जोर से ताली बजाने के लिये प्रोत्साहित कीजिये. हो सकता है कि पहल करने वालों के बाद कुछ और लोग भी उत्साहित हो जायें और अपने हाथ उठा दें. ताली बजा कर उनका भी अभिवादन कीजिये. पूछिये कि क्या समुदाय के और कुछ लोग कुछ अलग तरीके से करने के बारे में सोच रहे हैं?

- इसकी संभावना बहुत अधिक है कि भीड़ में से कोई निकल कर सामने आये और कहे कि वह एक सरल गड्ढे वाला शौचालय बनायेगा. पूछिये कि वह कब ऐसा करेगा. पूछिये कि क्या कोई सरल गड्ढे वाले शौचालय के निर्माण की प्रक्रिया को देखने के लिये आना चाहेगा? खूब जोर से ताली बजाइये और प्रोत्साहित कीजिये.

- जिनके द्वारा शीघ्र पहल करने का साहसपूर्ण निर्णय लिया गया है उन सभी को सामने आकर खड़े होने के लिये कहिये. उनसे पूछिये कि क्या खुले में शौच बन्द करने और तत्काल कार्यवाई करने के लिये तत्पर हुए लोगों के समूह की आप फोटो खींच सकते हैं? उनसे हाथ खड़ा करने को कहिये और उनकी एक फोटो खींचिये. इसके बाद पूरे समुदाय की फोटो खींचने की अनुमति लीजिये जिसमें शेष बचे अधिक संख्या वाले लोग भी हों जिन्होंने खुले में शौच करते रहने का निर्णय लिया है और वह छोटा समूह भी जिसके द्वारा खुले में शौच बन्द करने का निर्णय लिया गया है. बीच में हस्तक्षेप मत कीजिये. उन्हें इस बात को स्वयं सुलझाने दीजिये.

- हो सकता है कि प्रक्रिया के दौरान इस समय आपका सामना किसी ऐसे व्यक्ति से हो जाये जो कि किसी स्थानीय राजनीतिक दल या दाता या आर्थिक सहायता अथवा शौचालय निर्माण की सामग्री के वितरण कार्यक्रम को लागू करने वाले किसी सरकारी/गैर-सरकारी संगठन से जुड़ा रहा हो और समुदाय को स्व-प्रेरित होने से रोक रहा हो. सामान्यतया ऐसे लोगों के निजी स्वार्थ होते हैं और समुदाय को अपने वश में करना चाहते हैं जिसके लिये वे मुफ्त की सामग्री आदि का लालच देकर उन्हें अपनी ओर खींचते हैं. ऐसे लोगों से सावधानी के साथ व्यवहार कीजिये. उन्हें अलग ले जाइये और गंभीर परिचर्चा में उलझा दीजिये. उनसे कहिये कि उनके पास बहुत मूल्यवान जानकारी है और वे आपको गांव की स्वच्छता की स्थिति तथा स्थानीय परिस्थितियों को समझने में बहुत सहायक हो सकते हैं. ट्रिगरिंग के स्थान से दूर उनसे चाय, सिगरेट पीने के लिये कहिये और उनके द्वारा जो कुछ भी कहा जाये उसे ध्यान से सुनिये तथा उसे कागज पर लिखते भी जाइये.

- सबसे सरल तरीकों में से एक तो यह हो सकता है कि इस प्रकार के चुनौतीपूर्ण गांवों के पास के किसी ऐसे गांव में समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता अभियान को चलाइये जहाँ आर्थिक सहायता के कारण लोगों की मानसिकता प्रभावित नहीं हुई है. एक बार जब यह गांव खुले में शौच से पूर्ण रूप से मुक्त हो जायेगा तो अधिक चुनौतीपूर्ण गांव को भी उसी राह पर चलाना सरल हो जायेगा.

- अपने विवेक का प्रयोग करते हुए बहुत सी अन्य अभिनव बातों का प्रयोग स्वतंत्रता से कीजिये. यह बहुत कठिन नहीं होगा.

अध्याय 3
ट्रिगरिंग

कई देशों में सैकड़ों गांवों में समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के अंतर्गत समुदायों को सफलतापूर्वक प्रेरित करने के लिये ट्रिगरिंग की जा चुकी है. यह अच्छा होगा कि ऐसे गांवों में ट्रिगरिंग की पहल की जाये जहाँ स्वच्छता की स्थिति में सुधार लाने के लिये पहले कोई प्रयास नहीं किये गये हैं. इस प्रकार के अछूते गांवों में अनुभवी सुगमकर्ताओं के द्वारा ट्रिगरिंग का काम अच्छे ढंग से सफलतापूर्वक किया जा सकता है.

समुदाय द्वारा स्वच्छता स्थिति मूल्यांकन और विश्लेषण को सुगम बनाना समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की चिंगारी जगाने के लिये आधार

जब समुदाय के द्वारा खुले में शौच की सच्चाई और इसके प्रतिकूल प्रभावों का प्रत्यक्ष सामना किया जाता है तो उनमें घृणा और शर्म के तीव्र भाव जागते हैं. यही ट्रिगरिंग का आधार है. आधारभूत सिद्धान्त यह है कि कोई भी लोग यह जानने के बाद कि खुले में शौच के कारण वे एक दूसरे का मल खा रहे हैं बिना विचलित हुए नहीं रह सकते. सुगमकर्ता का लक्ष्य है समुदाय की इस प्रकार सहायता करना कि वह स्वयं यह समझ सकें कि खुले में शौच के कितने भयानक दुष्परिणाम होते हैं और एक दूषित वातावरण बनता है. इसके बाद यह समुदाय पर ही निर्भर है कि वह निर्णय करे कि इस समस्या से कैसे निपटना है और क्या कार्यवाही करनी है.

समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता पर तंजानिया में आयोजित एक व्यावहारिक प्रशिक्षण के दौरान प्लान केन्या के किलिफि ऑफिस से समुदाय को पीने के पानी को पीने के लिये प्रस्तुत करने से पहले उसे मल से संदूषित करते हुए.
छायांकन: सैमुअल मुसियमकी, प्लान केन्या

समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की चिंगारी जगाने के लिये पृष्ठभूमि और कुछ मूल बातें

समाज के कुछ वर्ग ऐसे होंगे जो अपने ही विशेष कारणों से पहलशक्ति को अपनाना चाहेंगे. उदाहरण के लिये,

- शौचालय वाले परिवार जिन्हें जब यह स्पष्ट हो जाता है कि बिना शौचालय वाले अन्य लोगों की खुले में शौच की आदत से उन्हें भी संदूषण का खतरा है
- भूमिहीन लोगों को बहुधा दूसरों की भूमि पर खुले में शौच करने का दोषी माना जाता है और उन्हें गाली दी जाती है
- खुले में शौच की प्रथा होने पर एकान्तता न मिलने से सबसे अधिक कष्ट महिलाओं एवं जवान बालिकाओं को उठाना पड़ता है. बहुधा वे पहले से पहले या रात का अंधेरा हो जाने पर ही निपटने के लिये उन्हें बाध्य होना पड़ता है.
- धार्मिक नेताओं को स्पष्ट हो जाता है कि साफ कपड़े पहनने का कोई लाभ ही नहीं हो सकता यदि मल पर बैठी मक्खियां उनके साथ गंदे कर रही हों.

समुदाय के इन वर्गों की प्रबल भावनाएं, पूरे गांव को खुले में शौच से मुक्त करने के लिये एकजुट होकर उपयुक्त कार्यवाही करने हेतु महत्त्वपूर्ण उत्प्रेरक हो सकती हैं. इन लोगों को इकट्ठा करके एक प्रभावशाली समूह बनाया जा सकता है जो कि अन्य लोगों को भी व्यवहार में परिवर्तन लाने के लिये प्रोत्साहित कर सकता है.

विशेष सुझाव

सुगमकर्ता की अभिवृत्ति और कार्यशैली ही सफलता की कुंजी है. सुगमकर्ता में यह भी कुशलता होनी चाहिये कि वह समुदाय को स्पष्ट कर सके कि जो अभ्यास कराया जा रहा है उसका उद्देश्य यह नहीं है कि कोई बाहरी व्यक्ति खुले में शौच बन्द कराने का प्रयास कर रहा है वरन् यह है कि समुदाय के सदस्य स्वयं ही अपनी स्वच्छता की स्थिति का विश्लेषण करें और अपने आप उचित निर्णय लें. समुदाय के सदस्य खुले में शौच करते रहने और एक दूसरे के मल का सेवन करते रहने का निर्णय भी यदि लेते हैं, तो वह भी सुगमकर्ता को स्वीकार है. परन्तु यदि समुदाय के सदस्य सहमत हों तो उनके गांव का नाम रिपोर्ट में दर्ज कर लिया जायेगा तथा जो नई सीख मिलती है उसे भी लिख लिया जायेगा.

नीचे दी गई विधियों के अलावा नई विधियों को विकसित करने और प्रयोग में लाने के लिये अपने को स्वतंत्र समझिये

यद्यपि प्रयोग की जाने वाली विधियों का अनुक्रम महत्त्वपूर्ण नहीं है परन्तु फिर भी गांव के अनुप्रस्थ भ्रमण से शुरू करना बहुत उपयोगी सिद्ध होता है.

कमल और कोर्नेलिया कमल की ट्रिगरिंग की महिला सुगमकर्ता यमन के इब्ब गवर्नरेट के गांवों की महिलाओं के बीच समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता को ट्रिगरिंग करती हुई

सभी यमन, पाकिस्तान और अन्य मुस्लिम देशों में समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की प्रत्येक ट्रिगरिंग टीम में महिला सुगमकर्ता का होना आवश्यक है. यदि अनुकूल वातावरण सुनिश्चित किया जाता है तथा ट्रिगरिंग की बैठक कमरों में या उन स्थानों में आयोजित की जाती है जहाँ पुरुष उन्हें न देख सकें तो महिलाएं खुल कर बहुत मज़े से प्रतिभाग करती हैं, अपने विचार व्यक्त करती हैं और खुले में शौच के विरुद्ध एकजुट होकर कार्यवाही करने की पहल भी करती हैं

क्या आवश्य करें

निम्नलिखित को अपने साथ अवश्य ले जायें

- फ्लिप चार्ट, रंगीन कार्ड, कैंची, मास्किंग टेप, मार्कर कलम
- जल की शुद्धता का परीक्षण करने के लिये हाइड्रोजन सल्फाइड की बोतलें (जल जनित संदूषण और सालमोनेला तथा कोलिफार्मों की उपस्थिति के लिये)
- कैमरा
- रंगीन पाउडर जिससे पीला पाउडर पसंदीदा माना है तो जिससे शौच के स्थानों को चिह्नित जा सके
- यदि किसी कारण से उपर्युक्त में से कोई वस्तु नहीं मिल पाती तो स्थानीय रूप से उपलब्ध वस्तुओं का उपयोग हो सकता है जैसे: राख, लकड़ी का बुरादा, चावल का भूसा, पत्तियां, घास इत्यादि

टीम में महिला सदस्य अवश्य होने चाहिये

टीम में महिला सुगमकर्ता अवश्य होने चाहिये. जिन क्षेत्रों में महिलायें पुरुषों के साथ भाग नहीं ले सकतीं (जैसा यमन या एनडब्ल्यूएफपी पाकिस्तान में) वहाँ कम से कम दो महिला सुगमकर्ता टीम में अवश्य रखी जानी चाहिये.

टीम के सदस्यों की भूमिकायें निर्धारित होनी चाहिये. इसमें निम्नलिखित को शामिल किया जा सकता है:

- मुख्य सुगमकर्ता
- सह-सुगमकर्ता. यदि मुख्य सुगमकर्ता स्थानीय भाषा न बोल सकता हो तो दो सह-सुगमकर्ता रखे जा सकते हैं.
- रिपोर्ट, प्रक्रिया को अभिलेखित करने के लिये
- एक या अधिक वातावरण बनाये रखने वाले लोग जो कि प्रक्रिया के दौरान उपयुक्त वातावरण बनाये रखने के लिये उत्तरदायी हों. उनके दायित्व में कार्यान्वितिकरण के लिये उपयुक्त स्थान की व्यवस्था, किसी भी प्रकार की गड़बड़ी को रोकना, बेवजह पोलों को कम करवाना, अवसरों का निरीक्षण, सुनिश्चित करना कि कोई भागनेवाली न हो, महिलाओं, पुरुषों एवं बच्चों के समूहों को व्यवस्थित करना, लोगों को जोश दिलाना और सम्मिलित होंगे.
- टीम के सभी सदस्यों का दायित्व होगा कि वे समुदाय में से उभरने वाले स्वाभाविक नेताओं पर नज़र रखें और उनके सामने आने पर उन्हें बोलने और नेतृत्व करने के लिये प्रोत्साहित करें.

तरीका

विश्लेषण प्रक्रिया इतनी सुगम कीजिये कि समुदाय स्वयं विश्लेषण करे तथा उन्हें खुले में शौच के प्रति घृणा और शर्म महसूस होने लगे. समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के अन्तर्गत लोगों को एकजुट होकर अपनी स्थिति बदलने के लिये कार्यवाही करने का जोश पैदा हो. इस जोश को पैदा करने के लिये मुख्य अवयव होते हैं भय, शर्म और अपनी आदतों के प्रति घृणा, लज्जा, गन्दगी का बोध, अपवित्रता जो कि कई धर्मों में बुरी मानी जाती है और एकान्तता के अभाव के कारण असुविधा (विशेषकर महिलाओं के लिये). बहुधा इन्हीं बातों के कारण लोग खुले में शौच बन्द करके स्वच्छता के साथ निर्धारित स्थान पर शौच करने की आदत डालने के लिये आन्दोलित हो जाते हैं.

प्रश्न अवश्य पूछिये. बिना भाषण दिये या उन्हें कुछ बताने का प्रयास किये बिना भी समुदाय के सदस्यों में खुले में शौच के प्रति घृणा जगाने में सहायक होने के लिये कई तरीके हैं. प्रश्न पूछने में सृजनात्मक होने का प्रयास कीजिये. (सूचे के प्रश्नों के लिये परिशिष्ट ग देखिये).

गतिविधियों में बच्चों को अवश्य ही सम्मिलित कीजिये और उनसे पूछिये कि क्या वे खुले में शौच करने को अच्छा समझते हैं या बुरा? अगर अच्छा नहीं समझते हैं तो खुले में शौच को बन्द करने के लिये वे क्या करेंगे? बहुत बच्चे इकट्ठे होकर खुले में शौच के विरोध में नारे लगाते हुए जुलूस निकालते हैं. बच्चों को इस प्रकार की गतिविधियों में बहुत आनन्द आता है.

भाषण मत दीजिये, न ही समुदाय के सदस्यों को शिक्षा देने का प्रयास कीजिये कि खुले में शौच की परिपाटी के कारण कितनी बीमारियाँ होती हैं, मक्खियाँ किस प्रकार संदूषण फैलाती हैं या कि हाथ ठीक से धोने और साफ रखने की आवश्यकता क्यों है?

आर्थिक सहायता का उल्लेख भी न कीजिये जिससे उन्हें स्पष्ट हो सके कि आप यहाँ आर्थिक सहायता देने या शौचालय के किसी मॉडल विशेष पर कोई सुझाव देने नहीं आये हैं. (कृपया 'चुनौतीपूर्ण स्थितियों से कैसे निपटा जाये' शीर्षक के अन्तर्गत दिये गये सुझावों को देखिये).

शुरुआत कैसे करें

गाँवों में काम करने के लिये जो परामर्श दिये जाते हैं वही यहाँ पर भी लागू होते हैं. बहुत दिखावे वाला पहनावा मत पहनिये. विनम्र व्यवहार कीजिये. उत्साहपूर्ण और मित्रवत रहिये. जल्दबाजी बिल्कुल मत कीजिये. दिमाग खुला रखिये और जिनसे मिलें उनसे सम्बन्ध स्थापित करने का प्रयास कीजिये. चर्चा रखिये और हर बात को ध्यान से देखिये. ध्यान से सुनिये. अच्छी बातों की सराहना कीजिये - पहले अच्छी बातों की सराहना करने से बाद में ऐसे मुद्दे उठाना आसान हो जाता है जिनसे घृणा उपजती है और समुदाय शर्मिंदा हो जाता है. समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की ओर प्रेरित करने के लिये सीधे प्रश्न पूछना भी सरल हो जाता है.

गाँव पहुँचने पर गाँव के लोगों को अपना परिचय दीजिये. उन्हें अपने भ्रमण का प्रयोजन बताइये. यदि आपके भ्रमण के विषय में सवाल उठाये जाने लगें तो उन्हें यह बताना उपयोगी होगा कि आप और आपकी टीम के सदस्य जिले के गाँवों की स्वच्छता की स्थिति का अध्ययन कर रहे हैं. आप उन गाँवों की संख्या का पता लगाने का प्रयास कर रहे हैं जहाँ खुले में शौच करने की परिपाटी है. साथ ही आप यह भी जानना चाहते हैं कि इस परिपाटी के कारण समाज पर पड़ने वाले प्रभाव क्या हैं.

खुले में शौच और गाँव की स्वच्छता पर चर्चायें प्रारम्भ करने के कई तरीके हैं. बहुधा गाँव में अनौपचारिक रूप से टहलते समय आप कुछ लोगों के साथ चर्चायें प्रारम्भ कर सकते हैं. रास्ते में मिल गये कुछ थोड़े से लोगों से बातचीत करते हुए भी आप चर्चायें प्रारम्भ कर सकते हैं. आप उनसे अनुरोध कर सकते हैं कि वे आपको साथ मकानों के पिछवाड़े की ओर, झाड़ियों के पास, नदियों के आसपास, या अन्य खुली जगहों पर चलें जहाँ लोग सामान्यतया खुले में शौच करने जाते हैं. इस प्रकार के स्थानों पर कुछ लोग जब इकट्ठा होकर बातचीत करने लगते हैं तो और लोग भी आकर्षित हो कर वहाँ चले आते हैं.

आप शुरुआत इस प्रकार के प्रश्नों से कर सकते हैं: "क्या यही वह जगह है जहाँ गाँव के अधिकतर लोग शौच करते हैं? इसके अलावा और कहाँ?, यह किसका मल है?" अनुरोध कीजिये कि जिन लोगों ने उस दिन खुले में शौच किया था वे अपने हाथ उठायें फिर उन्हें सुझाव दीजिये कि वे उस स्थान पर जायें जहाँ उन्होंने शौच किया था और देखें कि क्या उनका मल अभी भी वहीं पड़ा है. कई बतायेंगे कि उनका मल अब वहाँ नहीं है. जब आप उनसे पूछेंगे कि उसका क्या हुआ होगा तो अधिकतर लोग बतायेंगे कि कुत्ते और सुअर खा गये होंगे. उनसे पूछिये किसके कुत्ते? पूछिये कि जब कुत्ते घर आते हैं तो वे परिवार के सदस्यों को किस प्रकार सूंघते, चाटते हैं या बच्चों के साथ खेलते हैं? एक बार जब उनकी दिलचस्पी बढ़ जाये तो उन्हें प्रोत्साहित कीजिये कि वे समुदाय के अन्य सदस्यों को भी इकट्ठा कर लें जिससे ट्रिगरिंग की प्रक्रिया शुरू की जा सके. आपको एक ऐसी जगह भी ढूंढनी होगी जिसमें अधिक संख्या में लोग खड़े हो सकें, बैठ सकें और काम कर सकें.

सुनिश्चित कीजिये कि समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की ट्रिगरिंग के स्थान पर अधिकतर लोग इकट्ठा हो जायें और गाँव के अधिकतर पुरवों का प्रतिनिधित्व हो सके. निम्नलिखित बातें की जा सकती हैं:

- मुनादी करायी जा सकती है (जिसेल नियेल के कोबस जिले में इस्तेमाल पाया गया)
- गुरुद्वारे या मंदिर के माइक्रोफोन की सहायता से उद्घोषणा (भारत के पंजाब और हरियाणा राज्यों में प्रभावी पाया गया)
- मस्जिद के लाउडस्पीकर और माइक्रोफोन का उपयोग करके लोगों को बैठक के लिये आमंत्रित करना कई देशों में सामान्य रूप से पाया गया है
- बच्चों को गाँव में अलग-अलग दिशाओं में भेजकर बैठक की सूचना पहुँचायें
- कार्यान्वितिकरण से पहले गाँव का अनुसरण भ्रमण लोगों को आकर्षित करने के लिये उपयोगी पाया गया है. गाँव की सड़कों, गलियों और गलियारों से गुजरते हुए जो भी मिले उसे आमंत्रित कीजिये. चलते हुए साथ चल रहे लोगों से बातचीत करते रहिये. एक आदमी को अपने मित्रों और सम्बन्धियों के साथ टहलते और बात करते देख कर अन्य लोग भी उत्सुक होकर साथ आ जायेंगे.

संचालन कीजिये एवं प्रक्रिया को सुगम बनाइये

समुदाय के सदस्यों से पूछिये कि "मल" और "मल त्याग" के लिये स्थानीय भाषा में किन शब्दों का प्रयोग किया जाता है, इसके बाद उन्हें बताये शब्दों का ही प्रयोग कीजिये

'मल' और 'मल त्याग' के लिये शिष्ट शब्दों के स्थान पर लोगों के द्वारा बताये गये भद्दे शब्दों का ही प्रयोग कीजिये

सच्ची स्थानीय भाषा का उपयोग करने में हिचकिये नहीं

जब आप समुदाय के सदस्यों को ध्यान से मिल चुके हों और उनकी दिलचस्पी जग चुकी हो तो फिर एक बैठक आयोजित की जानी चाहिये. अच्छा होगा कि बैठक में महिलायें, पुरुष, बच्चे तथा समुदाय के सभी समूहों के लोगों के द्वारा प्रतिनिधित्व किया जाये. बैठक का लक्ष्य है सहभागी ग्रामीण अध्ययन के साधनों का प्रयोग करके समुदाय को ऐसे प्रेरित करना कि वे सहायता के साथ खुले में शौच तथा स्वच्छता सम्बन्धी आदतों तथा इनके प्रभाव का विश्लेषण कर सकें.

ट्रिगर के स्थानों में अनुसरण भ्रमण के दौरान स्थानीय समुदाय के द्वारा खुले में शौच के उपयुक्त स्थानों की पहचान की जाती है. यमन में इस स्थान के एक गाँव समुदाय के सदस्य लोगों के द्वारा सुबह और शाम खुले में शौच के लिये उपयोग की जाने वाली सामान्य जगहों को दिखाने के लिये अनुसरण भ्रमण का नेतृत्व करते हुए

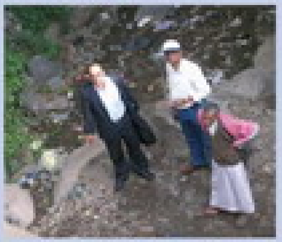

थोड़े से ही समय में समुदाय के सदस्य टीम को पहाड़ की ढलान पर एक बहुत गन्दी जगह ले गये जो कि कूड़े, मल और प्लास्टिक से भरी पड़ी थी. यही गाँव के लिये पानी का मुख्य स्रोत भी था. यह स्थान गाँव की महिलाओं के लिये [illegible] न तो कोई एकान्तता थी और न ही हाथ धोने की व्यवस्था. लोग दिन में कई बार साबित में आते थे और उन्हें वे कई तो प्रयोग में लाते थे [illegible]. उसी स्थान पर की गई चर्चायें ट्रिगरिंग के लिये बहुत प्रभावशाली सिद्ध हुई

बाँई तरफ की टोली की खोज में झाड़ियों के बीच भ्रमण। अथवा हिमाचल के एक ग्रामवासी खुले में शौच के स्थानों के अनुक्रम भ्रमण के लिये रास्ता का पैदल जाते हुए।

अक्सर बच्चों को खुले में शौच के सभी स्थान बहुत ठीक से पता हैं. एक पहाड़ीय गाँव में खुले में शौच की जगहों का अनुक्रम भ्रमण करते हुए बच्चे

शुरुआत करने के लिये ऐसे प्रश्नों के उत्तर में उनसे हाथ खड़ा करने का अनुरोध कीजिये: "आज किसने खुले में शौच किया?", "क्या आज आपने अपने गाँव में मानव मल को देखा और उसकी बदबू को महसूस किया?"

हिमाचल प्रदेश के एक गाँव में ट्रिगरिंग के दौरान लोग सच्चाई को छिपाना चाहते थे और उन्होंने कहा कि यहाँ कोई भी खुले में शौच नहीं करता. जब उनसे पूछा गया कि क्या वे खुले में शौच करते हैं तो कोई हाथ खड़ा नहीं हुआ. तब उनसे कहा गया कि वे अपनी आँखें बन्द कर लें और अपने बच्चों के बारे में सोचें. उनसे यह चिंतन करने के लिये कहा गया कि क्या उनमें से कोई ऐसा है जिसे लगता है कि खुले में शौच से उनके बच्चों पर हानिकारक प्रभाव पड़ता है. उनसे फिर एक बार पूछा गया कि क्या उनके गाँव में खुले में शौच करने की परिपाटी है. यदि ऐसा है तो उनसे हाथ खड़ा करने के लिये कहा गया. तब 50 में से 35 ने हाथ खड़े कर दिये.

स्रोत: सतीश भूषण पाण्डे, नॉलेज लिंकस

वाहन चालक और उनके सहायक भी ट्रिगरिंग में मददगार हो सकते हैं. हिमाचल प्रदेश के एक गाँव में समुदाय ने यह दावा किया वे खुले में शौच से मुक्त हैं, यद्यपि खुले में शौच करना सभी की सामान्य आदत थी. वाहन चालक के युवा सहायक को एक सुगमकर्ता द्वारा यह कहने के लिये प्रेरित किया कि उसे तुरन्त मल विसर्जन की आवश्यकता हो गई है. तब उसने एक ग्रामवासी से पूछा कि गाँव में खुली जगह कहाँ है जहाँ वह निवृत्त हो सकता है. ग्रामवासी ने चुपचाप एक जगह की ओर इशारा किया और उससे कहा कि वह वहाँ जाकर शौच कर सकता है. उसने वाहन चालक से अनुरोध किया कि वह इस बात का ज़िक्र किसी से न करे. वाहन चालक का सहायक वहाँ गया और उसने जगह-जगह मल बिखरा हुआ देखा तथा इस बात की जानकारी सुगमकर्ता को दे दी. सुगमकर्ता अनुक्रम भ्रमण के लिये उसी स्थान की ओर चल पड़ा. एक युवा महिला ने ही उनके साथ जाना स्वीकार किया तथा अन्य सभी ने साथ जाने से मना कर दिया. इस महिला की हाल ही में शादी हुई थी और एक सप्ताह पहले ही वह गाँव में आई थी. जो कुछ उसने देखा उससे वह भयभीत हो गई - खड़ी ढलान वाली जगह पर मल के विशाल ढेर. देखते ही वह उल्टी करने लगी और घृणा से भर गई. मल के ढेर के पास ही पानी का स्रोत था जिससे से पानी पम्प के द्वारा टैंक में भेजा जाता था जहाँ से वह गुरुत्व आधारित वितरण प्रणाली की सहायता से घरों को वितरित किया जाता था. उसने कहा कि जो भी लड़कियाँ गाँव में शादी करके आयेंगी उन्हें वह प्रेरित करेगी कि वे इस बात पर ज़ोर दें कि उनके लिये शौचालय बनवाये जायें. उसने समुदाय के लोगों को इस सच्चाई को छिपाने लिये दोषी कहा.

स्रोत: के.पी. शुक्ला, नॉलेज लिंकस

खुले में शौच के स्थानों का अनुक्रम भ्रमण

अनुक्रम भ्रमण अभिप्रेरित करने के लिये सबसे प्रभावी साधनों में से एक है. अनुक्रम भ्रमण के दौरान समुदाय के सदस्यों को घोर घृणा और शर्म का जो अनुभव होता है उसके कारण उनमें तत्काल खुले में शौच जाना बन्द करने और गन्दी जगहों की सफाई करने की तीव्र इच्छा पैदा हो सकती है. यद्यपि गन्दगी और मल को लोग रोज़ ही देखते हैं परन्तु वे समस्या के प्रति तभी सजग जागते दिखाई देते हैं जब किन्हीं बाहरी व्यक्तियों के द्वारा उन्हें वैसी गन्दगी को देखने और स्वच्छता की स्थिति का स्वयं विश्लेषण करने के लिये प्रोत्साहित किया जाता है.

अनुक्रम भ्रमण का अर्थ है समुदाय के सदस्यों के साथ गाँव के एक छोर से दूसरे छोर तक टहलना, हर चीज़ का बारीकी से साथ अवलोकन करना, प्रश्न पूछते रहना और समुदाय के सदस्यों को ध्यान से सुनना. समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के लिये अनुक्रम भ्रमण के दौरान आप उन जगहों को पहचान कर सकते हैं जिनका प्रयोग खुले में शौच के लिये किया जाता है. साथ ही रास्ते में पड़ने वाले विभिन्न प्रकार के शौचालयों को भी आप देख सकते हैं. समुदाय के साथ यह समझने का प्रयास कीजिये कि "असफल शौचालय" किसे कहा जायेगा. उन शौचालयों को देखिये जिनके गड्ढे ढके नहीं हैं या जिनसे मल बह कर बाहर चला आता है. खुले गड्ढे वाले शौचालय के छेद में टॉर्च से रोशनी करके समुदाय के कुछ सदस्यों को उसमें झाँक कर देखने और जो देखा उसका वर्णन करने के लिये कहिये. पूछिये कि क्या वहाँ मक्खियाँ पैदा हो रही हैं. और यदि ऐसा है तो क्या गड्ढे को खुला रखना सुरक्षित है.

मुख्य बात है खुले में शौच की जगह पर खड़े रहना, बदबू भरी हवा में सांस लेना तथा पानी और गीले मल के अधिक दूषण को देखना. यदि लोग आपको वहाँ से हटा कर आगे कहीं और ले जाना चाहें तो उनके शर्मिंदा हो जाने के बावजूद वहीं पर रुकने पर बल दीजिये. समुदाय के सदस्यों में एक साथ घृणास्पद दृश्य और असहनीय बदबू की अनुभूति तथा बाहरी व्यक्तियों के सामने उनकी व्यक्तिगत गन्दी आदत का सामने आना इतना बड़ा आघात होता है कि इससे समुदाय एकजुट होकर तत्काल कुछ करने के लिये उद्यत हो जाता है.

सुझाव

अनुक्रम भ्रमण में:

- ऐसे प्रश्न पूछिये: कौन से परिवार शौच के लिये किस जगह का प्रयोग करते हैं? महिलायें शौच के लिये कहाँ जाती हैं? रात को या डायरिया के प्रकोप के चलते आपातकालीन स्थिति में क्या होता है? आदि. कभी-कभी लोग यह भी बता देते हैं कि कौन सा मल किसका है.
- खुले में शौच की जगहों से बच कर मत निकलिये बल्कि वहाँ जितनी अधिक देर रुक सकें रुकिये. प्रश्न पूछते रहिये और समुदाय के सदस्यों को अपने ही मल की बदबू भरी हवा में सांस लेने दीजिये. उन्हें किसी बाहरी आदमी को वहाँ लेकर आने के लिये घोर शर्म का अनुभव भी करने दीजिये. इससे उनके मन में घृणा और शर्म के प्रबल भाव जागेंगे और इससे उनमें इस समस्या से निपटने के लिये तत्काल कुछ करने की प्रबल इच्छा पैदा हो जायेगी. यदि कहीं मल के ढेर नहीं दिखाई दे रहे हैं तो हो सकता है कि डायरिया फैला हो जिसके कारण मल पानी जैसा हो जाता है और मिट्टी उसे सोख लेती है या वर्षा के कारण मल पानी के साथ बह गया हो.
- मल पर मंडराती मक्खियों की ओर ध्यान आकर्षित कीजिये. दिखाइये कि किस प्रकार मुर्गियाँ मल पर चोंच मार कर उसे खा रही हैं. पूछिये कि किसके घर उनके और उनके बच्चों के भोजन पर मक्खियाँ मंडराती हुई पाई जाती हैं और क्या वे इस प्रकार मल खाने वाली मुर्गियों को खाना चाहेंगे?
- ठोस और तरल मल की पहचान कीजिये. पूछिये कि सभी मल का आकार और स्वरूप क्यों नहीं होता? तरल मल पानी के आसपास अधिक पाया जाता है जहाँ बच्चों और बड़े लोगों में संक्रमण होने के फैलने का अधिक खतरा होता है.

पाकिस्तान के नॉर्थ वेस्ट फ्रंटियर प्रोविन्स के मरदान जिले के एक गाँव में अनुक्रम भ्रमण के दौरान एक मस्जिद के पानी के बहुत पास ही बहुत से ठोस और तरल मल को बिखरा हुआ पाया. बाद में भ्रमण कर रहे समुदाय के एक सदस्य ने बताया कि गाँव में डायरिया व्यापक रूप से फैला हुआ है जिसके कारण बच्चे और बूढ़े शौच के लिये दूर स्थित जगहों पर नहीं जा पा रहे हैं और इस आपातकालीन स्थिति में घरों के पास बैठ कर ही शौच करने को विवश हो गये हैं. इससे साफ तौर पर पता चला कि गाँव में आधे से अधिक लोग डायरिया से पीड़ित थे.

बायें: डंडेल्डा, नेपाल के ग्रामीण समुदाय ने गरीब, मध्यम और अमीर परिवारों को दर्शाने के लिये रंगीन कार्ड का प्रयोग किया. ध्यान देने योग्य है कि गरीबों वाले घरों वाले वार्ड गाँव की बाहरी सीमा के पास ही ज्यादा संख्या में हैं. अमीरों वाले इलाका वाले लोग दूर खुले शौच के लिये जाते हैं. पहले वार्ड गरीबों तथा निम्न आर्थिक के लोगों ने कहा कि उनके घरों के आसपास का इलाका इतना गन्दा रहता है. उन्होंने यह भी कहा कि उच्च वर्गों के लोग उन क्षेत्रों में क्यों जाते हैं जहाँ लोग शुरू पाते हैं. गरीबों ने समुदायों को चेतावनी दी कि वे अपने गाँव से उनके आसपास के इलाकों में खुले में शौच करना बन्द करें ये यह परिवर्तन के लिये तैयार नहीं

बायें: माडागास्कर और इथियोपिया के अमारा के पास के मोकाहीन गाँव में लोगों के द्वारा मानचित्रीकरण अभ्यास प्रगति पर. इसके समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की ट्रिगरिंग की गई जिसका मुख्य रूप से नेतृत्व बच्चों ने किया और इस अभ्यास के दौरान बहुत ही स्वाभाविक पुरुष व्यावहारिक नेता उभर कर सामने आये

बायें: समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की अच्छी तरह शुरुआत करवाई गई. ट्रिगरिंग प्रक्रिया में बहुत से लोग मानचित्रीकरण में एक साथ काम करते हैं और अपने घरों, खुले में शौच के स्थानों को इंगित करते हैं तथा सम्बन्धित परिवारों के द्वारा उपयोग स्थल का आकलन करते हैं. यमन के हज़ गवर्नरेट में मानचित्रीकरण प्रगति पर

खुले में शौच की जगहों का मानचित्रीकरण

समुदाय के सदस्यों से अनुरोध कीजिये कि वे जमीन पर गाँव का एक सरल मानचित्र बनायें जिसमें घर, संसाधन, शौच की जगहें, जल स्रोत और समस्याओं को दर्शाया जाये जिससे परिचर्चा शुरू करने का आधार मिल सके. इस कार्य को उनके लिये यथासम्भव सुगम बनाने का प्रयास कीजिये. इस कार्य के लिये उन्हें एक उपयुक्त खुली और बड़ी स्थान को चुनने के लिये कहिये. मानचित्रीकरण की प्रक्रिया में सभी समुदाय सदस्यों का ध्यान लग जाता है और वे समुदाय की स्वच्छता की स्थिति का व्यावहारिक विश्लेषण करने में जुट जाते हैं.

मानचित्रीकरण करते समय गाँव के सभी भागों के लोगों को बुलाया जाना चाहिये और उनसे कहना चाहिये कि वे जमीन पर बनाये जाने वाले मानचित्र में दर्शायें कि उनके घर कहाँ स्थित हैं. इसके लिये वे एक पत्ती का अथवा पत्थर के टुकड़े का उपयोग कर सकते हैं. साथ ही उन्हें यह भी दर्शाना है कि उनके पास अपना शौचालय है या नहीं. खुले में शौच के स्थानों को किसी रंगीन पाउडर से दर्शाया जा सकता है और उन्हें रेखाओं की सहायता से उन घरों के साथ जोड़ा जा सकता है जो कि उनका शौच के लिये उपयोग करते हैं. मानचित्र में कई चीजों को प्रमुखता के साथ दर्शाया जा सकता है. लोगों का ध्यान इस बात की ओर आकर्षित कीजिये कि कुछ लोगों को शौच के लिये कितनी दूर जाना पड़ता है और दिन में किस समय जाना पड़ता है. क्या सुरक्षा से जुड़े कोई मुद्दे हैं? लोगों से कहिये कि वे यह दर्शायें कि किस प्रकार खुले में शौच के स्थानों से मल बह कर जलधाराओं और अन्य जलाशयों तक पहुँच जाता है जिसके कारण जल स्रोत संदूषित हो जाते हैं.

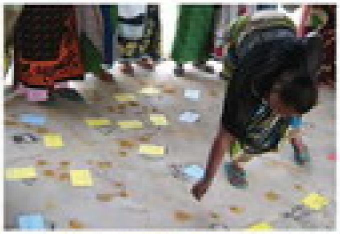

ऊपर और बायें: इथियोपिया और तंजानिया में महिलाएं, आवश्यकतानुसार स्थानों सहित शौच के स्थानों का मानचित्रीकरण करते हुए. तंजानिया, फ़ियोना ... के उपयोग के लिये विभिन्न रंग की पर्चियों को भी प्रत्येक परिवार के नाम के कार्ड पर अंकित किया गया है

नीचे: समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के सुगमकर्ताओं के द्वारा जब आवश्यकतानुसार शौच के स्थानों तथा मल के स्थानों के सम्बन्धित शौच के स्थानों के विषय में पूछा गया तो गाँव का मानचित्र पहले दर्शायी गई सीमाओं से बहुत आगे तक बढ़ गया. तंजानिया (मुमि बार्दी) में इस प्रकार शौच से जुड़ी गतिविधियों की नई तस्वीरें सामने आईं

ऊपर: बोलीविया के एण्डीज पहाड़ों के एक गांव में महिलाएं शौच के स्थानों का मानचित्रीकरण करती हुई. "कौन कहां शौच करता है?"

दायें: बोलीविया में जमीन पर गांव के मानचित्रीकरण करते समय खुले में शौच के स्थानों को दर्शाने के लिये ऊनी धागे का प्रयोग करती हुई महिलाएं.

ऊपर और दायें: मानचित्र पर पीला पाउडर खुले में शौच के स्थानों को दर्शाता है. जैसे-जैसे समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता ट्रिगरिंग की प्रक्रिया आगे बढ़ती है और समुदाय के द्वारा आपातकालीन शौच के स्थानों को इंगित किया जाता है, मानचित्र पर पीले पाउडर के ढेर स्थानों का आकार और संख्या बढ़ती जाती है. बोलीविया के एक गांव में मानचित्र देखते हुए विस्मित समुदाय सदस्य. पूरा की सहज प्रतिक्रियाएं तथा इस तरह को व्यक्त करने के लिये इस्तेमाल हो रहे शब्दों पर सावधानी से ध्यान दीजिये

मानचित्रीकरण को सुगम बनाना जिससे वह स्पष्ट हो, जल्दी बने और प्रक्रिया में लोगों को मजा आये

कभी-कभी एक अच्छा मानचित्रीकरण के लिये बहुत समय की आवश्यकता हो जाती है. जब लोग अपने गांव का मानचित्र बनाने में संलग्न हो जाते हैं तो उनमें बारीकियों में उतरने की प्रवृत्ति दिखाई देती है. जैसे वह हर परिवार के सदस्यों की संख्या, पुरुष, महिला, बच्चे या गलियां और उप-गलियां भी दिखाने की कोशिश करने लगते हैं. समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के ट्रिगरिंग के लिये बहुत विस्तृत सूचनाओं जैसे, सामाजिक-राजनीतिक पक्ष, जातियों, आवश्यकताओं और संसाधनों से जुड़ी सूचनाओं की आवश्यकता नहीं होती. समय प्रबन्धन के विषय में सतर्क रहना चाहिये है. शुरुआत में ही अनावश्यक सूचनाओं को एकत्र करने में खर्च किये गये समय के कारण ट्रिगरिंग प्रक्रिया के निर्णायक चरण में समय संकट की स्थिति आ सकती है.

युक्तियुक्त समय (3 से 4 घण्टे के भीतर) में समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की ट्रिगर करने के उद्देश्य से खुले में शौच की जगहों के मानचित्रीकरण के लिये मैंने अपेक्षाकृत अतिशीघ्र सम्पन्न होने वाली विधि का प्रयोग किया है. गांव के परिवारों की संख्या के आधार पर यह प्रक्रिया आधे घण्टे से लेकर एक घण्टे तक में पूरी की जा सकती है.

शीघ्र सम्पन्न होने वाली विधि

- गांव के लोगों से कहिये कि वे बाहर आकर एक खुले स्थान के चारों ओर खड़े हो जायें (अच्छा होगा यदि यह स्थान साफ और खुला हो जिसमें कंकड़, पत्थर और घास न हो).
- अपनी इच्छा से जो आगे आना चाहें ऐसे कुछ लोगों को आमंत्रित करके उनसे कहा जाता है कि वे रस्सियों, लकड़ियों, रंगीन पाउडर इत्यादि का प्रयोग करके गांव की बाहरी हद को जमीन पर बनायें. एण्डीज पर्वतमाला में स्थित बोलीविया के गांवों में महिलाओं ने ऊन के गोले (जिन्हें वे सामान्यतया साथ लेकर चलती हैं) के उसी धागे का प्रयोग जमीन पर गांव की सीमा बनाने के लिये किया था. (पृष्ठ पर उद्धृत छायाचित्र देखें).
- किसी से इस रूपरेखा के अन्दर गांव की कुछ खास चीजों को बनाने के लिये कहिये (जैसे स्कूल, सड़क या मुख्य चौराहा, पूजा के स्थान इत्यादि).
- उनमें से किसी से आगे आकर रूपरेखा के अन्दर उस स्थान पर खड़े होने के लिये कहिये जो गांव के उस स्थान को दर्शाता हो जहां उस समय वह खड़े हुए हैं.
- एक युवक या युवती को पहचान कीजिये और उससे कहिये कि वह यह बताये कि उसका घर इस मानचित्र में कहां पर होगा.
- समुदाय से पूछिये कि क्या युवक/युवती ने सही स्थान चुना है. यदि नहीं है तो सभी से कहिये कि वे उसके लिये जोर से ताली बजायें. इस तरह खेल से सभी उपस्थित लोग मानचित्र से परिचित हो जाते हैं.
- लोगों को निम्नलिखित बहुत सावधानी के साथ स्पष्ट कीजिये.

क. हर परिवार से केवल एक ही सदस्य के द्वारा एक कार्ड उठाया जायेगा (कार्डों को ऐसे को मानचित्र के बाहर रखा जाना चाहिये) और उसके बाद वह सदस्य घर का मानचित्र में अपना ठीक उसी स्थान पर खड़ा हो जायेगा जहां उसका घर है.

ख. लोगों को इस प्रक्रिया को ठीक से पूरी करने के लिये कुछ समय दीजिये.

ग. अब उनसे कहिये कि वे अपने हाथ में लिये हुए कार्ड पर घर के मुखिया का नाम लिखें और कार्ड को अपने घर के स्थान पर रख दें (जहां वे खड़े हैं वहीं अपने पैर के पास).

घ. उन्हें बताइये कि ये कार्ड उनके घर को दर्शाते हैं. अब उनसे कहिये कि वे अपने घर से एक सिरा उस स्थान तक खींचें जहां वे शौच करने जाते हैं. उनसे कहिये कि वे चॉक से अपने घरों और खुले में शौच के स्थान को जोड़ने वाली रेखा बना दें. लोगों को ढेरों आ जायेंगी और बातचीत शुरू हो जायेगी. इसे चलने दीजिये. याद रखिये कि अब कार्ड और चॉक अपने हाथ से लोगों को नहीं दें. सामग्री को मानचित्र के एक कोने में रख दीजिये और उनसे कहिये कि वे स्वयं जाकर उठा लें. लोगों को इस तरह आगे आने के लिये प्रोत्साहित करें और उन्हें स्वतन्त्रता से काम करने दें.

ङ. मानचित्र के बीच में रखे पीले पाउडर की ओर संकेत कीजिये और उनसे कहिये कि वे इस पाउडर को लेकर उन स्थानों को दर्शायें जहाँ वे खुले में शौच करते हैं. जहाँ ज्यादा मल होता है वहाँ अधिक पाउडर डालें और जहाँ कम मल होता है वहाँ कम पाउडर डालें. इस समय कुछ हंसी ठट्ठा होगा. याद रखिये कि पीले पाउडर के थैले को आप न उठायें बल्कि लोगों को स्वयं पीला पाउडर निकालने दें. लोग जल्दी से पाउडर डालने का प्रयास करते हुए दिखाई देंगे. इस समय आपको कुछ ऐसे स्थानों पर भी पीला पाउडर बिखरा हुआ मिलेगा जिनके बारे में आपको पता उनकी अभिलाषाओं को भी नहीं होगा.

च. इस काम को पूरा करने के लिये लोगों को कुछ समय दीजिये.

छ. इसके बाद सबसे कहिये कि वे पुनः अपने घरों के स्थान पर खड़े हो जायें. उनसे पूछिये कि आपातकालीन स्थिति में वे शौच करने कहाँ जाते हैं? अर्थात् वर्षा के दौरान, रात को, दस्तरोग से पीड़ित होने पर या किसी बीमारी की स्थिति आदि में. उनसे पीला पाउडर उठाकर आपातकालीन शौच की जगहों को दर्शाने के लिये कहिये. फिर कुछ लोगों के परिवारों पूछिये और उनके घरों के आसपास ही पीले पाउडर के ढेर के लग जायेंगे. हो सकता है कि लोग बतायें कि आपातकालीन स्थितियों में वे अपने पड़ोसियों के पिछवाड़े जाते हैं और पड़ोसी कह सकता है कि बदले में वह उनके घर का प्रयोग करता है. लोगों को दिखाई देने लग जायेगा कि मानचित्र पीले रंग से भरता जा रहा है. अब उनसे पूछ सकते हैं कि क्या पूरा गांव मल से भरा हुआ नहीं दिखाई दे रहा है.

ज. अब उसी मानचित्र की सहायता से वह भी आकलन कर सकते हैं कि प्रत्येक परिवार से कितना मल निकलता है और उस परिवार की पहचान भी कर सकते हैं जो कि गांव के वातावरण में प्रतिदिन सबसे अधिक मल फैलाने के लिये जिम्मेदार है. सभी से कहिये कि वे जोर से ताली बजा कर उस परिवार को बधाई दें.

झ. उनसे बिना कार्डों को छोड़े मानचित्र से बाहर खड़े हो जाने को कहिये. ऐसे गांव के घरों का मानचित्र तैयार हो जाता है.

विकल्प: रंगीन कार्ड ज़मीन पर रख दीजिये. अलग-अलग रंग के कार्ड समाज के अलग-अलग वर्गों को दर्शाने के लिये प्रयोग में लाये जा सकते हैं. उदाहरणस्वरूप धनी, मध्यम वर्ग, निर्धन और कभी-कभी बहुत ही गरीब वर्गों को दर्शाया जा सकता है. लोगों से इसी हिसाब से कार्ड को उठाने, उस पर घर के मुखिया का नाम लिखने और फिर मानचित्र में घर के स्थान पर रखने के लिये कहा जा सकता है. इससे अक्सर यह दिखाई देता है कि गरीब लोग बाहर की ओर शौच के स्थानों के पास ही रहते हैं और यह भी पता चलता है कि धनी लोग गरीबों के घरों के पास ही शौच के लिये जाते हैं.

समुदाय पर दोष लगाने की गलती. भूले से भी किसी ढंग से, कभी मत कीजिये. उदाहरण के लिये कार्डों तथा तीलियों को एक स्थान पर रख कर उनसे अपने आप इन्हें उठाने को कहने के बजाय समुदाय के सदस्यों को एक-एक करके वितरित करना.

सुझाव

- ज़मीन पर बनाये गये मानचित्र को कागज़ पर भी उतारा जा सकता है जिससे यह दर्शाया जा सकता है कि किन घरों में शौचालय है और किनमें नहीं. इस मानचित्र का उपयोग अनुश्रवण के लिये किया जा सकता है. (नीचे देखें)
- एक मानचित्र बनाने के लिये आपको बहुत सी सामग्री की आवश्यकता नहीं है. समुदाय के सदस्यों को पत्तियाँ, बीज, टहनियाँ, तिनको आदि आसानी से मिल जाने वाली वस्तुओं से अलग-अलग चीज़ों को दर्शाने के लिये प्रोत्साहित किया जा सकता है. परिचय ठीक से दीजिये. लोगों की सृजनात्मकता को प्रोत्साहित कीजिये और पूरी प्रक्रिया को मनोविनोदपूर्ण बनाइये.
- यदि अलग-अलग रंगों के द्वारा विभिन्न वस्तुओं को दर्शाया जाता है तो निर्णय करने में अधिक समय न लगाने दें कि प्रक्रिया धीमी पड़ने लगे.
- यदि आपके पास पीला पाउडर है जो कि खुले में शौच के स्थानों को दर्शाता है तो कुछ पीला पाउडर अपने हाथ पर मल लीजिये और लोगों से कहिये कि वे अपने हाथ दिखायें, तब उनसे पूछिये कि हाथ मिलाने से उनके हाथों में क्या लग गया?
- "मानचित्र का साक्षात्कार लीजिये" इसका मतलब है प्रश्न पूछना और मानचित्र में जो कुछ दर्शाया गया है उसके प्रभाव को समझने का प्रयास करना. यह मानचित्र एक ऐसा साधन है जिसकी सहायता से समुदाय अपने गांव की स्वच्छता की स्थिति को बेहतर तरीके से समझ सकता है. यह मानचित्र अपने आप में एक साध्य नहीं है.

सबसे गन्दी जगहों की पहचान

मानचित्रीकरण के दौरान समुदाय के सदस्यों से कहिये कि वे मुहल्लेवार छोटे-छोटे समूह बनाकर खड़े हो जायें. उनसे कहिये कि अपने समूहों में परिचर्चा करके पता लगायें कि गांव का सबसे गंदा स्थान कौन सा है और दूसरे नम्बर पर गन्दा कौन सा इत्यादि और परिचर्चा के परिणामों को कागज़ के छोटे टुकड़ों पर लिख दें. इसके बाद इन टुकड़ों को इकट्ठा कर लीजिये और एक-एक करके खुले स्वर में पढ़िये. अधिकतर मामलों में आप पायेंगे कि जिस जगह को किसी एक समूह के द्वारा सबसे गन्दा बताया गया है उसी जगह को अन्य समूहों के द्वारा भी सबसे गन्दा पाया गया.

इसके बाद लोगों से कहिये कि वे लिखें कि वे कहाँ शौच के लिये जाते हैं. इस अभ्यास के माध्यम से, स्वाभाविक बात, सबसे गन्दी जगह के पास रहने वाले लोगों को भान होता है कि अन्य जगहों के लोग भी उनके इलाके में आकर शौच करते हैं और फिर उन्हीं के इलाके को सबसे अधिक गन्दा भी बताते हैं. इस जानकारी के मिलने पर लोगों को तत्काल आगन्तुकों को अपने इलाके में शौच करने से रोकने के लिये कुछ कार्यवाही करने की आवश्यकता अनुभव होने लगती है. अधिकतर गांवों में देखा गया है कि इस बोध के होने पर गरीब और छोटे कहे जाने वाले लोग गांव में समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता लाने में सबसे अधिक सक्रिय भूमिका अख्तियार कर लेते हैं. उन्हें ही सबसे अधिक लाभ भी होता है क्योंकि वे डायरिया और अन्य बीमारियों पर होने वाले खर्चों को बचा पाते हैं.

समुदाय के साथ खुले में शौच के स्थानों के मानचित्र का विश्लेषण. प्रति परिवार उत्पादित मल का आकलन, मल से मुंह तक संदूषण मार्गों के चार्ट पर परिवारों बहुत विचलित होते हैं. मध्य में एक गांव में प्रति परिवार उत्पादित मल का आकलन इंगित पर है

समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की अपनी तरह से शुरुआत करते हुए ट्रिगरिंग के दौरान तीलियों को दर्शाकर प्रति परिवार उत्पादित मल का आकलन करते हुए, बहुत सरलतम ढंग इस प्रकार से आकलन को समझ आ जाता है

मल की मात्रा और चिकित्सा पर व्यय का आकलन

उत्पन्न किये जा रहे मल का आकलन स्वच्छता की समस्या की गंभीरता को उजागर करने में बहुत सहायक सिद्ध होता है. प्रति दिन प्रति व्यक्ति या प्रति परिवार कितना मल उत्पन्न किया जा रहा है? परिवार अपनी ही विधियों एवं माप करने की स्थानीय इकाइयों के अनुसार आकलन कर सकते हैं कि प्रतिदिन इस समस्या में वे कितना योगदान कर रहे हैं. सभी परिवारों के द्वारा दिये गये आंकड़ों को जोड़ने से यह पता चल जाता है कि पूरे समुदाय द्वारा कितना मल उत्पन्न किया जा रहा है. दैनिक उत्पादन के आंकड़े को गुणा करके यह अनुमान लगाया जाता है कि प्रति सप्ताह, प्रति माह और प्रति वर्ष समुदाय द्वारा कितना मल पैदा किया जाता है. इस प्रकार यह मात्रा टनों में आ जाती है और इसे देख कर समुदाय आत्मावलोकित हो सकता है.

पूछिये कि कौन सा परिवार सबसे अधिक मल उत्पन्न करता है. सभी से तालियाँ बजा कर उस परिवार को बधाई देने के लिये कहिये जो गांव को सबसे अधिक मल का उपहार देता है. इसी प्रकार से दूसरे, तीसरे, चौथे आदि स्थानों पर आने वाले परिवारों की पहचान कर लीजिये और उनके योगदान की सराहना कीजिये. उस परिवार की पहचान भी कर लीजिये जो सबसे कम मल का उत्पादन करता है. उनसे पूछिये कि उनका मल इतना कम क्यों होता है? उनसे कहिये वे ठीक से खायें जिससे उनका मल भी अधिक हो सके. इस सबमें बहुत हंसी-मज़ाक होता है परन्तु सच्चाई चुपचाप घर कर जाती है.

लोगों से पूछिये कि वे स्वास्थ्य के लिये इलाज पर कितना व्यय करते हैं. मानचित्र के चारों ओर खड़े हो जाइये. साधारणतः प्रभावक समुदाय को इस समय चुप करा देते हैं. कार्ड्स की ओर इशारा कीजिये और पूछिये कि उनके द्वारा डायरिया, पेचिश, कॉलरा आदि खुले में शौच के कारण होने वाले रोगों के इलाज पर खर्च किया जाता है. उनसे जानिये कि क्या वे साप्ताहिक या वार्षिक आकलन करना चाहेंगे और इसके बाद उनके द्वारा खर्च की बताई गई राशि को अपने कार्ड पर मार्कर से लिखने को कहें.

जैसा कि मल के आकलन में किया गया था यहाँ भी पूछिये कि बीमारियों के इलाज पर सबसे अधिक खर्च किस परिवार के द्वारा किया जाता है. उन्हें दिखाइये कि क्या वे खुले में शौच की जगहों के पास रहते हैं या सबसे गन्दे इलाके में रहते हैं. क्या वे गरीब हैं या अमीर? किसे सबसे ज़्यादा कष्ट उठाना पड़ता है - अमीर, मध्यवर्गीय या गरीब को?

फ्लिप चार्ट को बोर्ड पर लगा कर आकलन करने के लिये कहें कि पूरे समुदाय द्वारा रोगों के इलाज पर एक माह, एक वर्ष में और दस वर्ष में कितना व्यय किया जाता है. माह, वर्ष और 10 वर्ष में उत्पन्न मल के आकलन के चार्ट के बगल में इस चार्ट को भी लगा दीजिये.

उनसे कहिये कि वे तो वास्तव में बहुत धनी हैं तभी तो वह इतना पैसा खर्च कर पाते हैं. जानने का प्रयास कीजिये कि क्या आपातकालीन स्थिति में किसी गरीब परिवार के किसी सदस्य को हो गये डायरिया के इलाज के लिये उसे

पैसा उधार लेना पड़ा है? किससे और कहाँ? क्या उधार लेना और फिर उसको लौटाना आसान था? आपातकालीन इलाज के लिये कौन पैसा उधार देता है और ब्याज की दर क्या रहती है? गैर-सरकारी संगठन, बिचौलिये? उन्हें खुले में शौच बन्द करने और शौचालय बनाने के लिये कभी सुझाव मत दीजिये. आप वहां सुझाव देने और आदेश देने के लिये नहीं गये हैं.

मल जनित संदूषण मार्ग और और घृणा जगाना

खुले में बिखरे मल का मुँह तक पहुंचना

लोगों से पूछिये यह सारा मल कहां जाता है. जैसे लोग जब बताने लगें कि वर्षा के पानी के साथ बह जाता है या जमीन के अन्दर चला जाता है तो मल के ढेर का एक चित्र बनाकर जमीन पर रख दीजिये. इसके पास ही कार्ड और मार्कर रख दीजिये. लोगों से कहिये कि वे कार्ड उठायें और उनमें लिखें कि किन चीजों के माध्यम से और किन मार्गों से मल उनके घरों तक पहुंचता है. उदाहरण के लिये:

- मक्खियां
- वर्षा का जल
- हवा
- पालतू जानवरों के खुर
- मुर्गियां जो मल को खाती हैं और जिनके पैरों और पंखों पर मल लगा रहता है
- कुत्ते जो कि मल को खाते हैं और जिनके पंजों तथा शरीर पर मल लगा रहता है
- मल लगी रस्सियां (उदाहरण के लिये जानवरों को बांधने के लिये प्रयोग में लाई जाने वाली रस्सियां)
- साइकिल के टायर
- जूते
- बच्चों के खिलौने, फुटबॉल इत्यादि

- हवा द्वारा उड़ाई गई प्लास्टिक की वस्तुएं
- संदूषित जल

इसके बाद पूछिये कि मल किस प्रकार मुंह तक पहुंच जाता है. उदाहरण के लिये

- हाथ, नाखून
- भोजन पर मडराती मक्खियां
- फल और सब्जियां जो कि मल पर गिर पड़ी हों या उनके सम्पर्क में आई हों और जिन्हें ठीक से धोया नहीं गया हो (जैसा खेत में होता है)
- संदूषित पानी से धोये गये बर्तन
- लोगों को चाटते हुए कुत्ते

आपको चाहिये आप किसी भी दशा में यह मार्ग समुदाय को न सुझाएं. उन्हें स्वयं परिचर्चा करने, पहचान करने और दिखाने/चित्र बनाने का अवसर दें.

पानी का गिलास।

एक गिलास पीने का पानी मांगिये. जब पानी का गिलास आपके पास आ जाये तो उनसे पूछिये कि क्या कोई उस गिलास से पानी को पीने के लिये तैयार है. जब कोई हां कहे तो अन्य लोगों से यही सवाल कीजिये. इस प्रकार समुदाय के सभी लोग गिलास से पानी पीने को तैयार हो जायेंगे. तब अपने सिर से एक बाल तोड़िये और उनसे पूछिये कि क्या वे उसे देख सकते हैं और क्या वो जानते हैं कि यह क्या है. इसके बाद बाल को जमीन पर बिखरे मल पर इस प्रकार छुआइये कि सभी देख सकें. अब उस बाल को गिलास के पानी में डुबाइये और पूछिये कि क्या उन्हें पानी में कुछ दिखाई दे रहा है. इसके बाद पास खड़े व्यक्तियों को वह गिलास पकड़ा कर उस पानी को पीने के लिये कहिये. (पृष्ठ 22 भी देखिये). वे तुरन्त मना कर देंगे. अब

उत्तरी पाकिस्तान के नॉर्थ वेस्ट फ्रंटियर प्रोविन्स के मर्दान के एक गांव में एक समुदाय के सदस्य खुले में शौच बन्द करने के लिये हाथ खड़ा करके पूर्ण सहमति देते हुए

नीचे "मल, रोटी और मक्खियां" प्रदर्शन, टोरोरो, युगान्डा

प्रज्वलन क्षण। निकोल ओस्बर्ट, वाटर एड बोलिविया के एक अनुभवी सुगमकर्ता, मल से संदूषित पानी का गिलास एक महिला को पीने के लिये प्रस्तुत करते हुए जो कि घृणा से अपना मुंह और नाक बन्द करती हुई दिखाई दे रही है. इस समय सब को अहसास होता है कि सभी व्यक्ति एक दूसरे के मल का सेवन कर रहे हैं प्रक्रिया की सफलता का आभास है. यह बहुत ही निर्णायक क्षण है जो कि प्रज्वलित प्रक्रिया को तेज कर देते हैं.

लोगों से पूछिये कि क्या वे उस पानी को पी सकते हैं. कोई भी उस पानी को पीने के लिये तैयार नहीं होगा. उनसे पूछिये कि वे ऐसा क्यों कर रहे हैं. उनका उत्तर होगा कि क्योंकि इसमें मल मिला है. इसके बाद पूछिये कि मक्खी की कितनी टांग होती हैं. हो सकता है कि वह सही जवाब दे दें. यदि नहीं तो उन्हें बता दीजिये कि मक्खी की 6 टांग होती हैं और वे बालदार आरी की तरह लगी होती हैं. पूछिये कि क्या मक्खी की टांग में उससे अधिक मल लग सकता है जितना आपके पानी में डुबाये बाल में लगा था. उत्तर होना चाहिये "हाँ". अब उनसे पूछिये कि जब मक्खियां उनके या उनके बच्चों के भोजन और थाली पर बैठती हैं तो क्या होता है. जहां खुले में शौच की परिपाटी है वहां मक्खियां अपने साथ क्या लाती हैं? अन्त में उनसे पूछिये कि वे अपने भोजन के साथ और क्या खा रहे हैं.

जब कोई कहता है कि वे एक दूसरे का मल खा रहे हैं तो उन्हें सामने लाइये और सभी को यह बात बताने के लिये कहिये

सच्चाई यह है कि गांव में सभी एक दूसरे का मल खा रहे हैं. जब एक बार समुदाय के किसी सदस्य के द्वारा यह सार्वजनिक रूप से कह दिया जाये तो आप भी इसे बार-बार कह सकते हैं. उनके कहने से पहले ऐसा मत कहिये. यह उनके द्वारा किये गये विश्लेषण के आधार पर उन्हीं के द्वारा कही गई बात होनी चाहिये न कि वह जो कि आप उन्हें बताने गये हैं.

उनसे कहिये कि वे अनुमान करें कि उनके द्वारा कितना मल प्रतिदिन खाया जा रहा है. उनसे पूछिये कि खुले में शौच के कारण एक दूसरे के मल को खाने के लिये बाध्य हैं तो उन्हें कैसा लग रहा है? इस समय कोई सुझाव मत दीजिये. उन्हें इस पर मनन करने दीजिये और इसकी याद उन्हें उस समय दिलाइये जब समुदाय द्वारा विश्लेषण की प्रक्रिया पूर्ण की जा रही हो.

प्रज्वलन क्षण

प्रज्वलन क्षण के लिये बहुत सतर्क रहिये. यह वह समय है जब पूरे समुदाय को एक साथ समझ में आ जाता है कि खुले में शौच के कारण समुदाय का प्रत्येक सदस्य किसी दूसरे सदस्य के मल का सेवन कर रहा है और यह तब तक चलता रहेगा जब तक पूरा समुदाय खुले में शौच से मुक्त नहीं हो जाता. जब ऐसा हो जाये तो अन्य गतिविधियों को चलाये रखने की कोई आवश्यकता ही नहीं रह जाती है.

साधारणतया इस स्थिति तक पहुंचने पर लोगों में जोश बहुत बढ़ जाता है और जोरदार बहस शुरू हो जाती है कि किस प्रकार खुले में शौच को बन्द किया जाये. उन्हें न तो बीच में टोकिये और न कोई सुझाव ही दीजिये. ध्यानपूर्वक उनकी बहस को ध्यान से सुनिये.

कुछ सुझाव और विचार

- **एक बच्चे को उठाइये.** चारों ओर देखिये और कोई ऐसी चीज़ या तो बच्चे को उठाइये जिसके कारण बच्चे के मुंह पर मक्खियां भटक रही हों. लोगों से पूछिये कि यह किसका बच्चा है? इसके बच्चे का क्या दोष है कि वह गूह और मल का सेवन कर रहा है? किसका दोष है कि बच्चे को इतने गन्दे वातावरण में जीना पड़ रहा है? जो अभिभावक अपने बच्चों को इस तरह से देखना पसन्द नहीं करते वे कृपया अपना हाथ खड़ा करें.

- **मक्खियों से घिरे मल को ढक दीजिये.** यदि वहां मल के ऊपर मक्खियां मंडराती दिखाई दें तो मल को मिट्टी से ढक दीजिये. आप देखेंगे कि मक्खियां वहां से चली जायेंगी.

- **दर्पण.** जब समुदाय के सदस्यों को समझ में आ जाता है कि वे एक दूसरे के मल का सेवन कर रहे हैं और अपनी भावनाओं को भी एक दूसरे के सामने व्यक्त कर रहे हैं तो उनके चेहरों पर घृणा और अप्रसन्नता के भाव उभर आते हैं. जब ऐसी स्थिति आये तो ठीक-ठाक चलाने वाली महिलाओं से कहिये कि वे दर्पण में अपना चेहरा देखें. उनमें से बहुत सी तो दर्पण देखने से ही मना कर देंगी.

- **मल, भोजन और मक्खियां.** मई 2006 में हिमाचल प्रदेश, भारत के सोलन जिले के एक गांव में खुले में शौच के इलाकों के अनुक्रम भ्रमण के दौरान ओपदी सैम गुप्ता, एक सहयोगी महिला प्रतिभागी, द्वारा एक पत्थर के टुकड़े पर ताजा खाना चावल उठा कर मानचित्र के स्थान के पास आयोजित बैठक में लाया गया. अनुक्रम भ्रमण में उसके साथ चल रहे लोग सब रह गये और उसके पीछे-पीछे बैठक के स्थान तक चले आये. महिला ने एक थाली में चावल, चेसाप और उसे मल से सने पत्थर के टुकड़े को बगल में रख दिया. देखते ही देखते मक्खियां इकट्ठा हो गईं और चावल तथा मल के बीच आवागमन करने लगीं. लोग उसे से चुपचाप देखते रह गये और दो महिलाओं ने तो उल्टी भी कर दी. एक गन्दी का झूठा मल को भू से छिपा हुआ नहीं पाया आया. इसके बाद किसी व्याख्या की आवश्यकता ही नहीं रह गई. लोगों ने समझ लिया और स्वीकार कर लिया कि वे एक दूसरे के मल का सेवन कर रहे हैं. इस घटना के बाद से लोगों में प्रेरणा जगाने के लिये इस युक्ति का प्रयोग दिखाना किया जाने लगा.

- **हंसी, मज़ाक कीजिये.** उदाहरण के लिये प्रक्रिया के दौरान कई बार क्षमा मांगिये. दोनों हाथ जोड़ कर खड़े रहिये. उनसे अनुरोध कीजिये कि वे आपको शौचालय की सब्सिडी देने वाला या सरकारी आदमी या किसी गैर-सरकारी संगठन के कुछ एजेन्ट न समझें जो उन्हें पकड़ने आया हो.... "हम यहां आपसे खुले में शौच बन्द करने के लिये कहने या शौचालय का निर्माण करने के लिये अनुरोध करने नहीं आये हैं. जैसा आप पीढ़ियों से करते आ रहे हैं उसी प्रकार खुले में शौच करते रहने के लिये आप स्वतंत्र हैं."

- यदि इस पर लोग आपसे पूछें कि फिर आप यहां किस लिये आये हैं तो कहिये "हम यहां सीखने आये हैं." कुछ अभ्यासों के बाद कहिये "हमने बहुत कुछ सीखा..."और जो सीखा उसे संक्षेप में बताइये. कितना मल निकलता है, बीमारियों के इलाज पर कितना खर्च होता है. ठोस सहभागी अभ्यास के बाद निकाले निष्कर्षों को औपचारिक करना बहुत आवश्यक है. (उदाहरण के लिये एक दिन, एक माह, एक वर्ष में खुले में विसर्जित किये गये मल की मात्रा, गांव से वर्ष भर में बाहर जाने वाला बिल इत्यादि). इन सूचनाओं को वहां इकट्ठा लोगों के सामने एक बड़े चार्ट पर लिख देना चाहिये. बहुत अच्छा होगा यदि समुदाय से ही किसी व्यक्ति के द्वारा इन्हें लिखा गया हो और सबको जोर से पढ़ कर सुनाया गया हो. पूछिये कि यह विश्लेषण किसने किया और निष्कर्ष किसके द्वारा निकाले गये.

- मल, भोजन और मक्खियों के बाद जब मक्खियां भोजन और मल के बीच चहल रही हैं तब कहिये "चिन्ता मत कीजिये. मक्खियां दो प्रकार की होती हैं. जो मक्खियां खराब मल पर बैठने वाली होती हैं वह भोजन और पानी के पास भी नहीं फटकतीं". हो सकता है कि आपकी इस बात को लोग स्वीकार न करें.

- जब लोगों को ठीक से समझ में आ जाये कि वे क्या कर रहे हैं तो कहिये "अच्छा, जाने दीजिये, एक दूसरे के मल का सेवन करते रहिये."

- कोई हास्यपूर्ण कहानी सुनाइये. हिन्दी की एक कथा इसका अच्छा उदाहरण है. एक युवक की पृथ्वी पर उसके द्वारा किये गये अच्छे कार्यों के कारण स्वर्ग में स्थान प्राप्त हो गया जहां उसे हर प्रकार का स्वादिष्ट भोजन दिया जाने लगा. परन्तु उसने अनुरोध किया कि उसे उसका मनपसन्द भोजन अर्थात् मल परोसा जाये. बेचारा युवक बहुत दुखी हुआ क्योंकि स्वर्ग में मल तो उपलब्ध था ही नहीं.

- अपने विचारों, अनुभवों, हास्य कथाओं को विकसित कीजिये और सुनाइये.

अगर प्रश्न पूछे जायें तो उन्हें बताइये कि चूंकि आप बाहर से आये हैं आपको स्थानीय स्थितियों का बहुत कम ज्ञान है और स्थानीय परिस्थितियों में क्या करना चाहिये इस विषय में समुदाय के लोग ही अधिक समझते और जानते हैं.

- उन्हें समझाइये कि निर्णय करने के लिये वे स्वतंत्र हैं. वे चाहें तो खुले में शौच करते रह सकते हैं. यह उन्हीं का निर्णय होगा.
- उन्हें बताइये कि आप समझ गये हैं कि स्थानीय समुदाय के सदस्य किस प्रकार खुले में शौच करते हैं. लोग एक दूसरे के मल का सेवन करते हैं, जबकि उन्हें मल से मुंह तक के मार्गों और विकार परिपथों की पूरी जानकारी है.
- उनसे कहिये वे यह न समझ लें कि आप उनसे खुले में शौच को बन्द करने के लिये कहने आये हैं या किसी प्रकार के शौचालय निर्माण की सहायता देने के लिये आये हैं. यदि वे चाहें तो खुले में शौच की परिपाटी को जारी रख सकते हैं.
- हो सकता है कि इस समय उनमें से कोई कहे कि वे इसे और आगे जारी नहीं रखना चाहते हैं. पूछिये क्यों? सामान्य रूप से उत्तर होगा कि शौचालय बहुत महंगे होते हैं. पूछिये कि सामान्य शौचालय की लागत कितनी होनी चाहिये और कम-से-कम लागत क्या होनी चाहिये? सामान्य उत्तर होता है रु. 5000/- से रु. 10000/- या अधिक. अन्य स्थानों पर बनाये गये कम लागत शौचालयों के बारे में बताइये और यह भी कि रु. 150/- से रु. 200/- में भी शौचालय बन सकता है. अधिकतर लोग इस पर विश्वास नहीं करेंगे. उनसे कहिये कि यदि वे वास्तव में जानना चाहते हैं तो हाथ खड़े करें.
- यदि वे सहमति जताते हैं तो चार्ट पेपर पर वैज्ञानिक कम कर दीवार पर टांग दीजिये और चित्र की सहायता से व्याख्या कीजिये. उनसे एक गड्ढे वाले शौचालय का चित्र चार्ट पेपर पर जमीन से बनवाइये. (पहले से बनाया चित्र अपने साथ रख लें पहले चाहे परन्तु नहीं उसको सामने बनवाइये). पूछिये कि इस प्रकार के शौचालय की क्या लागत होगी और इसे बनाने में कितनी कठिनाई आयेगी? उन्हें यह भी बता दीजिये कि यह डिज़ाइन आपके द्वारा विकसित नहीं किया गया है बल्कि दुनिया के गरीबतम देश के एक गांव के गरीब लोगों के द्वारा ही विकसित किया गया है. अन्य समुदायों के द्वारा किस प्रकार सफलतापूर्वक स्वच्छता की स्थिति प्राप्त की गई है यह भी उन्हें बता सकते हैं और इसी प्रकार के अन्य अनुभवों का उल्लेख भी कर सकते हैं. (नीचे दिये गये चित्र को देखें)
- उनसे इसकी लागत पूछिये. हो सकता है कि वे आपके द्वारा बताई गई लागत से भी कम लागत बतायें और कहें कि ऐसे शौचालय बनायेंगे. जो लोग ऐसा करने के लिये कहें उनसे हाथ खड़ा करने को कहें तथा उनके नाम लिख लें.

शौचालय के किसी मॉडल विशेष को ही बताने के लिये मत कहिये. याद रखिये कि समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता का लक्ष्य सबसे अच्छे और टिकाऊ शौचालय के मॉडल को समुदाय पर लादना नहीं है, वरन् स्थानीय सोच को इस प्रकार जगाना है कि स्थानीय स्तर पर ही लोग अपने हिसाब से खुले में शौच के निवारण ढूंढें.

ध्यान रख कीजिये यदि कोई भी स्थानीय स्तर पर किसी भी प्रकार की तत्काल कार्यवाई करने के विषय में उन्हें सलाह नहीं करता है. उन्हें धन्यवाद दीजिये और उन्हें बताइये कि अपनी रिपोर्ट में आप उनके गांव को ऐसे गांव के रूप में दर्ज करेंगे कि जहां लोग खुले में शौच करते रहना और एक दूसरे के मल का सेवन करते रहना चाहते हैं. (आगे चौंकी निपटाराई देखिये). सामान्यतया अपने वैचारिक स्तर पर प्रक्रिया प्रारम्भ कर दी है.

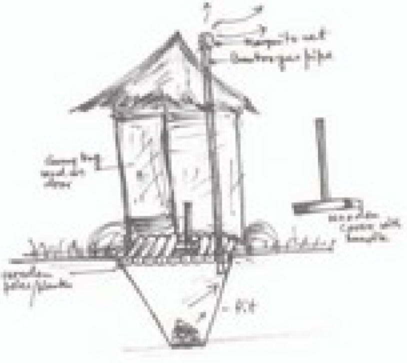

Drawing of a simple pit latrine

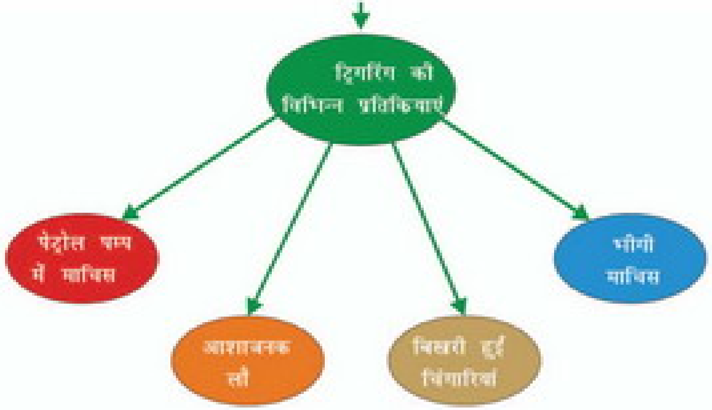

प्रतिक्रियाओं के सापेक्ष रणनीति

उपर्युक्त चित्र में कुछ सामान्य प्रतिक्रियाएं दर्शायी गई हैं. परन्तु समुदायों की प्रतिक्रियाएं बहुत ही अलग-अलग प्रकार की होती हैं. विभिन्न प्रतिक्रियाओं के अनुरूप आप अपनी कार्यविधि और योजना को अनुकूल बना सकते हैं. अतः की सहूलत की दृष्टि से इन्हें चार वर्गों में विभाजित किया जा सकता है.

सुझाव

विभिन्न स्थितियों के अनुसार आपकी कार्यवाई में भी परिवर्तन हो सकता है. कुछ सुझाव निम्नवत् हैं.

ट्रिगरिंग के बाद उसी दिन संचालित की जाने वाली गतिविधियां

कुछ कदम तो दो या अधिक स्थितियों में किये जाते हैं और कुछ और किये जा सकने वाले कार्यों का उल्लेख ट्रिगरिंग के बाद वाले भाग में किया गया है. जब स्वाभाविक नेता "समुदाय के परामर्शदाता" के रूप में किसी अन्य गांव में समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की प्रेरणा जगाने में संलग्न होते तो सम्भव की जाने वाली गतिविधियां सामान्यतया सुगमकर्ताओं के द्वारा संचालित की जाने वाली गतिविधियों से भिन्न हो सकती हैं. कई मामलों में पाया गया है कि स्वाभाविक नेता समुदाय के परामर्शदाता के रूप में खुले में शौच की आदत वाले गांव में आकर एक सप्ताह या उस समय तक के लिये वहां ठहर जाते हैं जब तक गांव खुले में शौच से मुक्त नहीं हो जाता या इस दिशा में उल्लेखनीय प्रगति नहीं कर लेता. कुछ उल्लेखनीय उदाहरण भी सामने आये हैं. समुदाय के परामर्शदाता के रूप में गांव में आये स्वाभाविक नेता - महिला/पुरुष - के द्वारा जब पाया गया कि गांव में मल के विशाल ढेर इकट्ठा हैं तो उन्होंने घोषणा कर दी कि वे तब तक भोजन नहीं करेंगे जब तक वह अपने लिये एक गड्ढे वाला सस्ता शौचालय बना कर सभी ग्रामवासियों को नहीं दिखा देते. ऐसे मामलों में बहुत कुछ सहज ही हो सकता है क्योंकि स्वाभाविक नेता भी उसी गांव में ठहर कर ग्रामवासियों के साथ ही निवास करते हैं.

पेट्रोल पम्प में माचिस

जब सम्पूर्ण समुदाय पूरी तरह से प्रेरित हो जाता है और खुले में शौच को तत्काल समाप्त करने के लिये स्थानीय स्तर पर एकजुट होकर कार्ययोजना क्रियान्वयन के लिये तैयार हो जाता है तब यह स्थिति होती है.

- कम लागत और सस्ता लागत शौचालयों के विकल्पों पर विस्तार से चर्चा कीजिये और यह भी जानकारी दीजिये कि निर्माण के लिये सामग्री कहां से और कैसे प्राप्त की जा सकती है.
- पूर्ण होने की तिथि सहित कार्ययोजना बनाने तथा समुदायिक समितियों के गठन की प्रक्रिया को सुगम बनाइये.
- समुदाय के उन सदस्यों की सूची तैयार करने में समुदाय की सहायता कीजिये जो शीघ्र ही शौचालय बनाने के इच्छुक हैं. शौचालय कब तक बन जायेंगे? तिथि और सप्ताह भी सूची में अंकित करने को कहें.
- अनुवर्ती भ्रमण के लिये आपसी सहमति से एक तिथि निर्धारित करवाइये.
- समुदाय के द्वारा बनाये गये मानचित्र की सहायता से समुदाय के द्वारा प्रगति का अनुश्रवण प्रारम्भ कराइये. (जमीन पर बनाये गये मानचित्र को एक बड़े चार्ट पेपर पर उतारने की आवश्यकता होगी. इसे ऐसे स्थान पर टांग दीजिये कि सभी लोग इसे देख सकें.)
- समुदाय के किसी सदस्य को पहचान कीजिये जो कि स्वच्छता सामग्री और पैन इत्यादि की आपूर्ति करने वालों के साथ सम्पर्क साध सके. सुगम बैठकों में लोगों से ही सुझाव मांगिये कि किस प्रकार बाजार से सम्पर्क साधा जाये और किस प्रकार से कम लागत और सुगम प्रकार की स्वच्छता सामग्री प्राप्त की जा सकती है?
- जल के संदूषण का परीक्षण करने के लिये साथ लाई गई हाइड्रोजन सल्फाइड की शीशियों को वहीं छोड़ दीजिये.
- लक्ष्य होना चाहिये गांव को आत्मनिर्भर बनाना. इसके लिये स्थानीय सम्पर्क सूत्र और नेतृत्व को आगे लाइये जिससे आप गांव से शीघ्र ही विदा हो सकें. अपनी उपस्थिति को ऐसा न बनाइये कि वे आप पर निर्भर होने लगें या स्थानीय अभिनव पहल व गतिविधियां अवरुद्ध हो जायें.

आशाजनक लौ

जब समुदाय के अधिकांश सदस्य सहमत हो गये हों परन्तु फिर भी काफी लोग संशय और अनिर्णय की स्थिति में बने हों.

- गांव की स्वच्छता की स्थिति के विस्तृत विश्लेषण के लिये समुदाय का धन्यवाद कीजिये और विदा होने के लिये अनुमति मांगिये.
- यदि समुदाय में से कोई व्यक्ति स्थानीय स्तर पर पहल प्रारम्भ करने के लिये तत्पर हो तो उसे सामने लाइये और प्रोत्साहित कीजिये कि वह समुदाय को बताये कि वह शौचालय निर्माण की दिशा में किस तरह पहल करने का विचार कर रहा है.
- सभी से पूछिये कि क्या वे जानना चाहेंगे कि अन्य समुदायों के द्वारा किस प्रकार कम लागत शौचालयों का निर्माण किया गया है.
- यदि सभी हाथ उठा कर सहमति व्यक्त करें तो एक पिट वाले सस्ता शौचालय का चित्र बनाकर उन्हें बताइये कि किस प्रकार स्थानीय सामग्री का उपयोग करके कम लागत का शौचालय बनाया जा सकता है.
- समुदायिक कार्य योजना तैयार करने की प्रक्रिया को सुगम बनाइये. कार्ययोजना में प्रति सप्ताह बनाये जाने वाले प्रस्तावित शौचालयों की संख्या कार्ययोजना के पूर्ण होने की तिथि भी अंकित कराइये.
- अनुवर्ती भ्रमण के लिये सबकी सहमति से तिथियों का निर्धारण कराइये.
- समुदाय के द्वारा बनाये गये मानचित्र की सहायता से समुदाय के द्वारा प्रगति का अनुश्रवण प्रारम्भ कराइये.
- समुदाय के किसी सदस्य की पहचान कीजिये जो कि स्वच्छता सामग्री और पैन इत्यादि की आपूर्ति करने वालों के साथ सम्पर्क साध सके. सुगम बैठकों में लोगों से ही सुझाव मांगिये कि किस प्रकार बाजार से सम्पर्क साधा जाये और किस प्रकार से कम लागत और सुगम प्रकार की स्वच्छता सामग्री प्राप्त की जा सकती है?
- जल के संदूषण का परीक्षण करने के लिये साथ लाई गई हाइड्रोजन सल्फाइड की शीशियों को वहीं छोड़ दीजिये.
- लक्ष्य होना चाहिये गांव को आत्मनिर्भर बनाना. इसके लिये स्थानीय सम्पर्क सूत्र और नेतृत्व को आगे लाइये जिससे आप गांव से शीघ्र ही विदा हो सकें. अपनी उपस्थिति को ऐसा न बनाइये कि वे आप पर निर्भर होने लगें या स्थानीय अभिनव पहल और गतिविधियां अवरुद्ध हो जायें.

बिखरी हुई चिंगारियां

जब मिल कर काम करने के संदर्भ में समुदाय के अधिकांश सदस्य संशय और अनिर्णय की स्थिति में हों और केवल कुछ ही लोगों के द्वारा ही आगे बढ़ने और समस्या से निपटने के लिये कुछ कर गुजरने का निर्णय लिया गया हो.

- गांव की स्वच्छता की स्थिति के विस्तृत विश्लेषण के लिये समुदाय का धन्यवाद कीजिये और उनसे कहिये कि वे आपको शौचालयों की सामग्री का विक्रेता या बहुत देर वाला न समझें. उनसे कहिये कि वे मक्खियों से भरी आ रही परिपाटी को जारी रखें.
- उनसे कहिये कि वे हाथ खड़ा करके बतायें कि उनमें से कितने लोग अगले दिन सुबह खुले में शौच के लिये जायेंगे.
- उन्हें बताइये कि आप इस जानकारी के साथ गांव को छोड़ कर जा रहे हैं कि यह ऐसा गांव है जहां के लोगों ने एक दूसरे का मल खाते रहने का निर्णय लिया है.
- जिन्होंने यह बताने के लिये हाथ खड़ा किया है कि वे खुले में शौच करते रहेंगे उनका एक समूह बनाकर उनकी फोटो खींचने की अनुमति मांगिये. अगर कोई अवसर होता है तो परिवर्तन और अपनी भागीदारी शुरू करने के लिये समय दीजिये. सामान्यतया थोड़ी देर बाद ही उन लोगों से हाथ खड़े करने के लिये कहा जा सकता है जो कि खुले में शौच

खुले में शौच के कारण सबसे ज्यादा नुकसान किशोरियों का होता है. यदि प्रक्रिया को उनके लिये ठीक से सुगम बनाया जाये तो वे खुले में शौच को बन्द करने के लिये तुरंत कार्यवाई करती हैं. तंजानिया के एक गांव में किशोरियां समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता ट्रिगरिंग के दौरान गतिविधियों में संलग्न. कॉलेज की कनिष्ठ स्कूली लड़कियों ने कहा कि क्योंकि उनके पास शौचालय हो गये हैं इसलिये अब उन्हें स्कूल पहुंचने में देरी नहीं होती. समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता से पहले उन्हें झाड़ियों के आवरण तक जाने का इंतजार करना पड़ता था जब कोई [illegible] आसपास न हो. सामान्य की तरह से स्कूल जाने से पहले नहीं जा पाती थीं.

बन्द करना चाहते हैं. उनके प्रभाव से अन्य लोग भी हाथ उठा देते हैं. उनसे फिर पूछिये कि क्या आप उन सभी का फोटो खींच सकते हैं जिन्होंने खुले में शौच बन्द करने के पक्ष में सहमति के रूप में हाथ खड़े किये हैं.

- इस समय किन्हीं ऐसे व्यक्तियों की पहचान कीजिये जिन्होंने खुले में शौच को बन्द करने के लिये स्थानीय स्तर पर पहल करने की इच्छा जताई हो. उन्हें सबके सामने लाइये और सभी से कहिये कि उन्हें सराहने के लिये ताली बजायें.
- दूसरी बार ट्रिगरिंग के लिये यहां आने की तारीख समुदाय की सहमति से तय कीजिये जिससे वे लोग भी भाग ले सकें जो इस बार किसी कारण उपस्थित नहीं हो सके थे.
- जल के संदूषण का परीक्षण करने के लिये साथ लाई गई हाइड्रोजन सल्फाइड की शीशियों को वहीं छोड़ दीजिये.

भौंदी दियासलाई

जहां पूरा समुदाय ही खुले में शौच बन्द करने के लिये कुछ भी करने को तैयार नहीं है.

- उन्हें धन्यवाद दीजिये और वहीं से प्रस्थान कीजिये. उन पर कोई दबाव मत डालिये.
- उन्हें बताइये कि आपको आश्चर्य है कि समुदाय के सदस्य यह जानने के बाद भी कि खुले में शौच की परिपाटी के कारण वे सभी एक दूसरे का मल खा रहे हैं, वे खुले में शौच की परिपाटी को चलाये रखते जा रहे हैं.
- अन्दाज़ कीजिये कि क्या उनसे उनकी फोटो लेने के लिये अनुमति मांगना ठीक होगा.
- जल के संदूषण का परीक्षण करने के लिये साथ लाई गई हाइड्रोजन सल्फाइड की शीशियों को वहीं छोड़ दीजिये.

- वहां से जाने से ठीक पहले उनसे पूछिये कि क्या वे पास के गांव का भ्रमण करना चाहेंगे जहां समुदाय ने अपने ही बलबूते पर खुले में शौच की परिपाटी को इतिहास की चीज बना दिया है.
- अन्त में, उनसे बात चलता करते हुए, आप उन्हें सांस्कृतिक रूप से उपयुक्त दिल दहलाने वाली परन्तु मर्मस्पर्शी कथा सुना सकते हैं यदि ऐसी कोई कथा आपके पास हो.

संदूषण के लिये परीक्षण

चाहे समुदाय की जो भी प्रतिक्रिया रही हो हाइड्रोजन सल्फाइड की शीशियों को वहीं छोड़ दीजिये. यह बाजार में आसानी से मिल जाती हैं. भारत के कुछ भागों में यह एचआईव नाम से मिल जाती हैं और इनकी कीमत लगभग 50 सेंट (यू.एस डॉलर) के बराबर होती है. अलग-अलग देशों में ये भिन्न-भिन्न नामों से मिलती हैं. इनकी उपलब्धता के विषय में जानकारी जल परीक्षण प्रयोगशालाओं या दवा विक्रेताओं से मिल सकती है. ट्रिगरिंग के अन्त में समुदाय के सदस्यों से कहिये कि वे इन शीशियों में पीने के पानी के स्रोतों से लिये गये पानी को भर दें - शीशियों पर अंकित निर्देशों का पालन करते हुए, इसके बाद इन्हें तत्काल ठीक से बन्द कर दें और कागज पर पानी भरने के समय को अंकित करते हुए उसे चिपकाने वाले टेप की सहायता से शीशी पर चिपका दें. उन्हें बताइये कि इन शीशियों को सूरज की धूप से दूर रखना है और कमरे के सामान्य तापक्रम पर - 25-35 डिग्री सेल्सियस, 24 से 48 घण्टे तक रखना है. ठंडी जगहों में इन्हें कपड़े में लपेट कर रखना चाहिये. यदि पानी पीने योग्य नहीं है तो यह काला हो जायेगा जिससे यह पता चलेगा कि उसमें मलजनित संदूषण है. समुदाय इन शीशियों को अपने पास रख सकता है. इस्तेमाल के बाद इन शीशियों को तोड़ कर गड्ढों में दबा दिया जाना चाहिये.

समुदाय की कार्य योजना का निर्माण (ट्रिगरिंग के दिन)

नियोजन की प्रक्रिया में तात्कालिक सकारात्मक कार्य योजनाओं पर ध्यान केन्द्रित करना चाहिये. गतिविधियों में निम्नांकित को सम्मिलित किया जा सकता है:

- एक फ्लिप चार्ट को टांगिये और जो लोग सबसे पहले पहल करने के लिये इच्छुक थे उन्हें आगे आने के लिये कहिये.
- उनके सामने आ जाने पर उनका उत्साह जोर से ताली बजा कर कीजिये और कहिये कि वे स्वच्छ भविष्य के लिये समुदाय का नेतृत्व करने वाले नेता हैं.
- उनके जीवन स्तर के विषय में जानकारी कीजिये और उनकी सराहना कीजिये विशेषकर यदि वे गरीब हैं.
- उपस्थित लोगों के सामने उन्हें खड़ा रहने दीजिये.

- जो लोग तत्काल सहायता करने के इच्छुक हैं उन्हें भी आगे बुला लीजिये और उनका भी जोरदार ढंग से स्वागत कीजिये.
- जो लोग इस प्रकार समुदाय के वातावरण को बदलने जा रहे हैं उनकी एक समूह फोटो खींचिये.

समुदाय की सहायता कीजिये जिससे समिति का गठन हो सके. समिति के सदस्यों के नाम लिख लीजिये.

उनसे पूछिये कि गांव को पूरी तरह खुले में शौच से मुक्त करने में कितना समय लगेगा. यदि वे कहते हैं 2-3 माह, तो उनसे पूछिये कि क्या उन्हें 60-90 दिनों तक एक दूसरे के मल का सेवन करते रहना स्वीकार है. उनका उत्तर हो सकता है कि वे एक दूसरे के शौचालय का उपयोग करेंगे और गड्ढे खोदेंगे तथा मल को मिट्टी से ढक देंगे. ऐसा वे तत्काल करना शुरू कर देंगे.

इस प्रक्रिया के दौरान 2-4 स्वाभाविक नेताओं की पहचान कीजिये जिनमें नेतृत्व क्षमता की अच्छी सम्भावना है.

यदि अनुभवों को बांटने के लिये अनुवर्ती प्रशिक्षण कार्यशाला प्रस्तावित है तो इसकी सूचना समुदाय को दीजिये और यह भी बताइये कि इसके लिये उन्हें क्या तैयारियां करनी हैं - ज़मीन पर बनाये गये मानचित्र को चार्ट पेपर पर उतारना, समुदाय के उन सदस्यों के नाम सूची में अंकित करना जो तत्काल कार्यवाई करने के लिये उद्यत हैं, स्थानीय सामग्री का उपयोग करके बनाये जा सकने वाले कम लागत शौचालय के उनके द्वारा ही बनाये गये डिज़ाइन का खाका, ट्रिगरिंग के बाद से की गई प्रगति का विवरण. कार्यशाला में भाग लेने के लिये महिलाओं, पुरुषों एवं बच्चों और स्वाभाविक नेताओं को आमंत्रित कीजिये.

वहां से जाने से पहले स्वाभाविक नेताओं से उन नारों का पूर्वाभ्यास करने के लिये कहिये जो कि खुले में शौच के विरोध में बच्चों के द्वारा लगाये जाते हैं. बच्चों के द्वारा की जाने वाली गतिविधियों को तुरन्त शुरू करवाइये. जब बाहर से आये लोग वहां से जाने लगें तो बच्चे नारे लगाते हुए जुलूस बनाकर कुछ दूर तक उनके साथ जायें.

लोगों को आस-पड़ोस के समुदायों द्वारा किये जा रहे कार्यों के विषय में बताइये. यदि यह उस क्षेत्र का पहला ही गांव हो तो उन्हें बताइये कि उन्हें कितना मान सम्मान मिलेगा और यदि वे पूर्ण रूप से खुले में शौच से मुक्त हो गये तो उन्हें उत्सव मनाने का एक अच्छा अवसर प्राप्त हो जायेगा.

किसी भी प्रकार के लाभ के विषय में कोई वादा न कीजिये और न ही आश्वासन ही दीजिये.

स्कूलों में ट्रिगरिंग और छात्रों की गतिविधियां

भारत के हरियाणा राज्य के पानीपत जनपद के स्कूलों में समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता कार्यक्रम की शुरुआत सितम्बर 2007 में हुई. छात्र जागरूक दलों का गठन किया गया. पहले चार सप्ताहों में पूर्वकालिक सुगमकर्ताओं के दलों द्वारा लगभग 125 स्कूलों में यह कार्यक्रम शुरू किया गया - जिले के कुल स्कूलों के आधे से अधिक स्कूलों में. छात्रों के द्वारा मानचित्रीकरण तथा अन्य गतिविधियों को सम्पन्न किया गया. जब वे अनुप्रम भ्रमण पर गये तो गांव के व्यस्क उत्सुकतावश उनके पीछे हो लिये. कभी-कभी उत्सर्जित मल की मात्रा का आंकलन खुले में शौच के स्थान पर ही खड़े रह कर किया गया जिसमें मल की ढेरियों को देखकर मल की मात्रा का अनुमान लगाया गया. घोर घृणा और शर्म से भी छात्र सक्रियतावादी बन गये. जो बहुत ही जल्द से उन्हें संगठित करके स्वाभाविक नेताओं का समूह गठित कर लिया गया और सदस्यों को टोपियां, सीटियां और लिखित सामग्री दी गई. उन्हें सामाजिक और पर्यावरणीय उत्पादक कार्यों के लिये पुरस्कृत भी किया जाता है जिसके लिये उन्हें अंक मिलेंगे. शिक्षकों को भी सहयोग के लिये उनके साथ संलग्न कर लिया गया है.

एक 12 वर्षीय बालक अन्य छात्रों का नेतृत्व कर रहा था. इसका कार्य था खुले में शौच करते दिखाई देने वाले लोगों को देख कर ज़ोर-ज़ोर से सीटी बजाना. इस बालक पर तीन बार आक्रमण हुआ परन्तु उसके अभिभावक भी उसे सीटी बजाने से रोक नहीं सके. उसने कहा, "मैं क्यों सीटी बजाना बन्द करूं. मैं कोई गलत काम नहीं कर रहा हूं." जब उस पर तीसरी बार आक्रमण हुआ तो गांव में एक विशेष बैठक बुलाई गई और निर्णय किया गया कि बहुत हुआ. खुले में शौच से मुक्त होने के लिये त्वरित कार्यवाई शुरू हो गई. एक रैली आयोजित की गई जिसमें सबसे अधिक सक्रिय छात्रों में से 300 छात्रों को आमंत्रित किया गया. लगभग 50 छात्रों ने भाषण दिया. सहायक जिला आयुक्त के द्वारा सभी को उपहार स्वरूप घड़ियां भेंट की गईं.

सम्पूर्ण स्वच्छता अभियान में संलग्न सरकारी परियोजना अधिकारी ने कहा, "यह आश्चर्यजनक है, छात्र इतने जोश से भरे हैं. वे तो सहज स्वाभाविक नेता सिद्ध हो रहे हैं. मैंने तो कभी नहीं सोचा था कि छात्र इतने उत्साही होंगे. कभी-कभी हम सोचते हैं कि यह विचार पहले हमारे मन में क्यों नहीं आया."

स्रोत: राकेश कौशिक, जिला ग्राम्य विकास अभिकरण, पानीपत, हरियाणा, भारत

अनुश्रवण के लिये सामुदायिक मानचित्रीकरण

जब ट्रिगरिंग के परिणामस्वरूप समुदाय ज्वलंत पल में पहुंच या आतातायक ली की स्थिति में आ जाये तो वहां कुछ चार्ट पेपर, मार्कर पेन और टेप छोड़ दीजिये जिससे ज़मीन पर बनाये गये मानचित्र को कागज़ पर उतारा जा सके, नई गठित समिति के नाम लिखे जा सकें, खुले में शौच से मुक्त होने के लिये बनाई गई कार्ययोजना अंकित की जा सके, उन सभी लोगों के नाम लिखे जा सकें जिन्होंने तत्काल या अगले सप्ताह गड्ढे खोदने का निर्णय लिया है. समुदाय के सदस्यों को ज़मीन पर बनाये गये मानचित्र को कागज़ पर उतारने के लिये उत्साहित कीजिये. यह कई कागज़ों में बनेगा और उन्हें टेप से जोड़ा जायेगा जिससे सभी उसे साफ-साफ देख सकें. मानचित्र को सार्वजनिक स्थान पर लगाया जाये और इस प्रकार सुरक्षित किया जाये कि वर्षा आदि से यह खराब न होने पाये. इसमें प्रत्येक परिवार की स्वच्छता की स्थिति को दर्शाया जायेगा या अंकन किया जायेगा जिससे प्रगति का पता चलता रहे.

स्कूलों में ट्रिगरिंग

स्कूलों में ट्रिगरिंग का अनुभव भारत और जाम्बिया में प्राप्त हुआ है. हो सकता है अन्य स्थानों पर भी ऐसे ही प्रयास किये गये हों. सभी विधियों का प्रयोग किया जा सकता है. स्कूली बच्चे बहुत जल्दी नई बातें सीखते हैं और बहुधा सामाजिक परिवर्तन के सक्रिय माध्यम या अभिकर्ता भी बन जाते हैं. अवधारणा के प्रसार के प्रारम्भिक चरण में ही स्कूलों में ट्रिगरिंग होती है. यह समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के लिये मुख्य और प्रमुख कारक हो सकता है जिसकी सामुदायिक ट्रिगरिंग के समानान्तर एवं अनुपूरक के रूप में एक महत्वपूर्ण भूमिका हो सकती है. स्कूलों में ट्रिगरिंग से अभिभावक, शिक्षक और विद्यार्थियों में एक सहक्रिया पैदा हो सकती है. छात्र जल्दी सीखते हैं और सक्रिय हो जाते हैं. नई पीढ़ी के रूप में छात्रों को इससे जोड़ना और उन्हें स्वयं स्वच्छता की स्थिति का मूल्यांकन तथा विश्लेषण करने का अवसर प्रदान करना खुले में शौच से मुक्ति की ओर बढ़ते समाज को स्वच्छ बने रहने के लिये एक मज़बूत आधार प्रदान करेगा. यह भविष्य के लिये एक बड़ी और महत्वपूर्ण लहर सिद्ध हो सकती है.

स्कूल में ट्रिगरिंग और फिर गांवों में छात्र, अभिभावक और शिक्षकों के साथ ट्रिगरिंग

जाम्बिया के चोमा जिले में अक्टूबर 2007 में यूनिसेफ के कार्मिकों के लिये एक व्यावहारिक प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन किया गया. इसमें यूनिसेफ के सहयोगी संगठन और पूर्वी तथा दक्षिणी अफ्रीका के संचालन अधिकारियों एवं सरकारी स्टाफ के द्वारा भी प्रतिभाग किया गया. एक उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में ट्रिगरिंग शुरू की गई जिसमें मानचित्रीकरण तथा अन्य साधनों का उपयोग किया गया. तीन गांवों के छात्रों, शिक्षकों एवं अभिभावकों के द्वारा इसमें प्रतिभाग किया गया. छात्रों को पता चला कि खुले में शौच की आदत उनके तीनों गांवों में व्यापक रूप से फैली हुई है. सभी तीनों गांवों में ट्रिगरिंग एक साथ चलाये रखी गई. उस, घर और परायी के अन्दर फिर गये. बच्चे, अभिभावक और शिक्षक सभी एक साथ अभियान में जुट गये. बहुत घृणा, हंसी-मज़ाक और उछल-कूद के बाद बच्चों ने एक जुलूस बना लिया और नारे लगाने लगे. अगले दिन प्रधानाध्यापक ने एक बैठक में घोषणा की कि उनका स्कूल जाम्बिया का पहला स्कूल होगा जहां के हर छात्र के घर में शौचालय होगा और हर छात्र गर्व से खुले में शौच से मुक्त गांव से स्कूल आयेगा.

अध्याय 4

ट्रिगरिंग के बाद मार्गदर्शिका

ट्रिगरिंग वह समय है जब या तो समुदाय के सदस्य एकजुट होकर खुले में शौच बन्द करने के लिये कार्रवाई करने को तत्पर हो जाते हैं या संशय, हिचक, असहमति या अनिर्णय की स्थिति में होते हैं. ट्रिगरिंग के बाद का चरण बहुत महत्वपूर्ण होता है. सामुदायिक गतिकी बहुत तेजी से बदल सकती है और समुदाय को विभिन्न दिशाओं की ओर ले जा सकती है. संवेदनशील सतत प्रोत्साहन और सहयोग निर्णायक सिद्ध हो सकते हैं.

सुगमकर्ता तथा अन्य लोग जो कि समुदाय की सहायता करने की भूमिका का निर्वहन करने में संलग्न होते हैं उन्हें जो कुछ हो रहा होता है उसके प्रति बहुत सतर्क रहने की आवश्यकता होती है. ठीक समय पर उपयुक्त हस्तक्षेप से बहुत अन्तर पड़ सकता है.

जब प्रशिक्षण कार्यशाला के अंत के रूप में संचालित ट्रिगरिंग के बाद कोई अनुवर्ती कार्रवाई नहीं होती तो कोई परिणाम भी सामने नहीं आता. बिना अनुवर्ती कार्रवाई के ट्रिगरिंग करना खराब बात है. इसलिये पहले से योजना बना लेनी चाहिये और उन व्यक्तियों एवं संस्थाओं के साथ सम्पर्क स्थापित कर लेना चाहिये जिनके द्वारा अनुवर्ती कार्रवाई की जानी प्रस्तावित है.

ताराकाहुआ, बोलीविया के ग्रामीण क्षेत्र में एक ग्रामीण महिला मिट्टी, ईंट और पत्थर से बने अपने नव निर्मित शौचालय को गर्व से दिखाती हुई. छायांकन: पेट्रा ब्राह्मा, यूनिसेफ, बोलीविया

खर्बो ओल्ड के खुले में शौच से मुक्त समुदाय के द्वारा सभी घरों को तथा उनमें बने विभिन्न प्रकार के शौचालयों को मानचित्र में दर्शाया गया. उन घरों को भी इंगित किया गया जिन्होंने शुरू में या बाद के दिनों में शौचालय नहीं बनाये. इससे दूसरों के बीच में एक प्रतिस्पर्धा शुरू हो गई

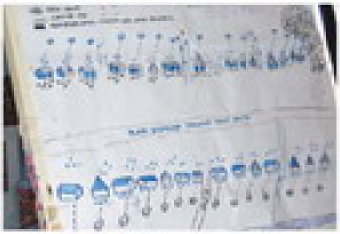

क्रमश: समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की ट्रिगरिंग के उपरान्त इंडोनेशिया में एक समुदाय के द्वारा प्रगति के अनुश्रवण के लिये मानचित्र का प्रयोग

नकारात्मक बातों के लिये सतर्क रहिये

- पूर्व में शौचालय निर्माण की सामग्री पर मिलने वाली आर्थिक सहायता की व्यवस्था से जुड़े नेता जो कि समुदाय को अपनी स्वयं की सहायता नहीं करने देना चाहते.
- राजनीतिक नेता और अफवाह फैलाने वाले जो कि प्रचार कर सकते हैं कि आर्थिक सहायता की शीघ्र घोषणा होने वाली है.
- आर्थिक सहायता कार्यक्रमों से जुड़े अन्य संगठन जो कि समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के मार्ग में अवरोध उत्पन्न करते हैं या लोगों का ध्यान हटाते हैं.
- तकनीकी या अन्य बातों के आधार पर संदेह व्यक्त करने वाले बाहरी लोग.
- गांव के स्तर पर काम करने वाले कर्मियों को यह महसूस होना कि उनका महत्व घट रहा है और उन्हें इस बात की आशंका भी हो सकती है कि भविष्य में उन्हें हटा दिया जायेगा.

इन बातों को प्रभावहीन करने के लिये:

- अपनी बात बलपूर्वक रखने के लिये स्वाभाविक नेताओं को प्रोत्साहित कीजिये.
- लोगों से पूछिये कि क्या पिछले वर्षों में प्रदान की जा रही आर्थिक सहायता से अपेक्षित परिणाम प्राप्त हुए.
- उन्हें स्पष्ट कीजिये कि समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता एक प्रक्रिया है और तकनीकी तथा अन्य समस्याओं का निराकरण यथासमय किया जा सकता है. उदाहरण के लिये स्वच्छता की सीढ़ी चढ़ते हुए.
- तकनीकी या किसी अन्य प्रकार के व्यक्त किये गये संदेहों को फैलाव की पूरी पड़ताल कीजिये.
- गांव के स्तर पर काम करने वाले कर्मियों को समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के लाभ बताइये और उन्हें प्रक्रिया का हिस्सा बनाइये.
- जिन समुदायों में समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की ज्योति जगाई गई है उनके साथ बैठक कीजिये जिससे अनुभवों, योजनाओं और किये गये कार्यों की जानकारी हो सके.

जब कई समुदायों में एक साथ ट्रिगरिंग की गई हो (जैसा कि बहुधा सुगमकर्ताओं के प्रशिक्षण के दौरान होता है) उनमें ट्रिगरिंग के बाद पंचायतीय बैठक आयोजित कीजिये. स्वाभाविक नेताओं से पूछिये कि ट्रिगरिंग की प्रक्रिया के बाद क्या

क्रमश: सियरा लियोन के ओगो फार्म के समुदाय के सामने साइन बोर्ड दिखाते हुए जिस पर घोषणा अंकित है कि उनका गांव सार्वजनिक खुले में शौच से मुक्त हो गया है

कार्रवाई हुई, समुदाय के द्वारा क्या निर्णय लिये गये, काम जो पहले ही पूरे किये जा चुके हैं, उनकी कार्ययोजनाएं क्या हैं, और पूर्ण रूप से खुले में शौच से मुक्ति की प्रस्तावित तिथि क्या है. जो अधिक जोशीले हैं वे "बिखरी हुई चिंगारियों" और "धीमी दियासलाई" की स्थितियों वाले समुदायों को प्रोत्साहित कर सकते हैं, यदि वे वहां हों.

शुरुआत में समुदाय के सदस्यों के द्वारा व्यक्तिगत स्तर पर जो निर्णय लिये गये और प्रतिबद्धता व्यक्त की गई उनके वीडियो बना लेना बाद में अन्य लोगों को प्रेरित करने के लिये बहुत असरदार सिद्ध हो सकता है. कम लागत शौचालय के निर्माण की वीडियो फिल्म बनाने से लोगों को स्पष्ट हो सकता है कि वे क्या कर सकते हैं.

सहभागी अनुश्रवण और संकेतक

जमीन पर बनाये गये मानचित्र को जब कागज पर उतारा जाता है तो उसमें दर्शाया जा सकता है कि किन घरों में शौचालय है और किनमें नहीं. बैठक की सार्वजनिक जगह पर इस मानचित्र को लगाने से, जहां सभी इसे देख सकें, लोगों को उनके द्वारा कार्रवाई करने के लिये लिये गये वचनों को याद दिलाने में मदद मिल सकती है. जैसे-जैसे लोगों को शौचालय उपलब्ध होने लगते हैं (अपने या किसी और के) और लोग खुले में शौच जाना बन्द करने लगते हैं तो अद्यतन स्थिति को दर्शाने के लिये समय-समय पर मानचित्र में भी संशोधन किया जा सकता है. यह काम नियमित रूप से स्वाभाविक नेताओं के द्वारा किया जा सकता है. कुछ लोगों के द्वारा कार्यान्वयन के अलग-अलग चरणों के लिये तथा दूसरों के शौचालयों के उपयोग के लिये भिन्न-भिन्न रंगों का प्रयोग किया गया है. इस प्रकार यह मानचित्र अनुश्रवण का एक साधन बन जाता है और समुदाय के सदस्यों में शौचालय निर्माण के लिये एक प्रतिस्पर्धा पैदा कर देता है. यह मानचित्र उस समय तक जीवन्त रहना चाहिये जब तक

ऊपर: सुन्दर और आत्मसम्मानित कम लागत शौचालय का मॉडल जिसे अहमदनगर, महाराष्ट्र, भारत के एक स्वाभाविक नेता और सामुदायिक स्वयंसेवक द्वारा अभिनव तरीके से बनाया गया. स्वाभाविक नेता अपने द्वारा विकसित इस सुन्दर शौचालय को प्रदर्शित करते हुए लोगों को यह बताता है कि यह समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के विषय में लोगों को बताने का एक श्रेष्ठ साधन नहीं बल्कि उनमें स्थानीय मॉडल का विकास भी देता है. ध्यान दीजिये कि किस प्रकार घरों के ढेर के बासों, लकड़ी, सूखी घास के पत्ते, प्लास्टिक शीट, मिट्टी और प्लास्टिक के डिब्बों का प्रयोग इस मॉडल को बनाने में किया गया है.

सभी परिवारों को शौचालय का उपयोग करते हुए नहीं पाया लिया जाता और गांव को पूरी तरह खुले में शौच से मुक्त घोषित नहीं कर दिया जाता.

समुदाय के सदस्यों और स्वाभाविक नेताओं से पूछिये कि वे प्रगति का अनुश्रवण करने के लिये और किन संकेतकों का प्रयोग करना चाहेंगे. उन्हें उनके द्वारा सोचे गये संकेतकों का उपयोग करने तथा उन्हें सार्वजनिक करने के लिये प्रोत्साहित कीजिये.

प्रक्रिया और प्रगति का अनुश्रवण

प्रक्रिया और प्रगति को दर्शाने के लिये निम्नांकित संकेतकों पर ध्यान दीजिये:

- महिलाओं, पुरुषों, युवाओं और अन्य वर्गों से उभर कर सामने आने स्वाभाविक नेताओं की संख्या
- संयुक्त रूप से शौचालयों का निर्माण कर रहे परिवार
- पड़ोसियों, सम्बन्धियों या पारम्परिक या अन्य समूहों द्वारा एक दूसरे के शौचालयों का उपयोग किया जाना
- नये समूहों का अस्तित्व में आना
- अच्छी माली हालत वाले लोगों का निर्धन वर्ग के लोगों की सहायता करने के लिये आगे आना
- पारम्परिक सामुदायिक सहकारिता समूहों का फिर से सक्रिय हो जाना (जैसा जाम्बिया में गोटेंग रोयोंग और इंडोनेशिया में ...)
- स्कूलों, पारम्परिक प्रमुखों और अन्य लोगों का सक्रिय हो जाना
- नये नारे, गीत और कविताएं
- बाजारों में स्वच्छता सामग्री की बिक्री में वृद्धि
- शौचालयों के विभिन्न मॉडलों का सामने आना
- शौचालयों के निर्माण के लिये गैर-पारम्परिक सामग्री का उपयोग
- खुले में शौच पर समुदाय द्वारा दण्ड देने की व्यवस्था का विकास
- कठिनाइयों का सामना कर रहे लोगों का पूरे समुदाय द्वारा एकजुट हो कर सहायता प्रदान करना
- स्वच्छता की सामग्री को उधार स्वीकार देना (उदाहरण के लिये यह विकासित दुकानदारों को)
- डायरिया आदि बीमारियों में कमी तथा इनकी दवाओं के बिक्री में कमी
- स्वास्थ्य सेवाओं पर खर्च में कमी और झोलाछाप चिकित्सकों की आमदनी में कमी

प्राकृतिक स्वाभाविक नेता

ट्रिगरिंग की प्रक्रिया से ही स्वाभाविक नेता उभर कर सामने आने लगते हैं. महिला, पुरुष, युवा, बच्चे/वृद्ध, या/तथा विशेष भूमिका निभाने वाले लोग जैसे नाई, गांव के मुखिया या अन्य कोई भी स्वाभाविक नेता हो सकते हैं. निर्णय, अभियान चलाने, अनुसरण, सामुदायिक मामलों एवं निगरानी के नियोजन और कार्यान्वयन, निर्माण तथा आदतों में बदलाव को, समाज के अन्दर और बाहर भी, बहुधा ऐसे ही प्रक्रियाओं में स्वाभाविक नेता सक्रिय रहते हैं. सभी चरणों में उनकी भूमिका निर्णायक होती है. स्वाभाविक नेताओं की निरन्तर खोज करना, उनकी सराहना और उन्हें प्रोत्साहित करना हर चरण की गतिविधियों का महत्वपूर्ण भाग होना चाहिये. स्वाभाविक नेताओं को एकत्रित समूह को सम्बोधित करने का अवसर प्रदान करना चाहिये. इण्डोनेशिया में स्वाभाविक नेताओं को विशेष रूप से सम्मानित करने के लिये हैट और टी-शर्ट प्रदान किये गये हैं. उन्हें बैठकों में आमंत्रित कीजिये. अन्य स्थानों पर आयोजित ट्रिगरिंग प्रक्रिया के दौरान उन्हें वार्ताकार और सूत्रधारों के रूप में योगदान करने के लिये बुलाइये. उन्हें ये चयनित लोगों को सूत्रधारों और प्रशिक्षक के रूप में अभियान से जोड़िये. इन कार्यों के माध्यम से उनका सम्मान कीजिये और उनकी प्रतिष्ठा बढ़ाइये.

महिला स्वाभाविक नेताओं की खोज में रहिये, उनका उत्साहवर्द्धन और सहयोग कीजिये

शौचालय निर्माण के मामले में तो महिला स्वाभाविक नेता पुरुष स्वाभाविक नेताओं की अपेक्षा कम ही सामने आती हैं परन्तु वे शौचालयों के रखरखाव, उनके प्रयोग के मामलों के निर्धारण और आरोग्यपूर्ण स्वच्छता सम्बन्धी व्यवहार को सम्पोषित बनाये रखने के मामले में अधिक सक्रिय और प्रभावशाली होती हैं. परिणामस्वरूप बच्चा, सामग्री उधार देने, ऋण चुकाने, और पारस्परिक आदान-प्रदान के अभिनव तरीके सामने आ सकते हैं. वास्तव में जैसे ही शौचालय बन कर तैयार हो जाते हैं महिलाएं इसकी व्यवस्था अपने हाथ में ले लेती हैं. वे शौचालयों का उपयोग सफाई के साथ करने के लिये बच्चों को प्रोत्साहित भी करती हैं.

धर्म और धार्मिक नेताओं की भूमिका का सम्मान कीजिये

खुले में शौच से पूर्ण रूप से मुक्त होने का स्तर प्राप्त करने की दिशा में प्रगति को गति देने के लिये धार्मिक नेताओं की भूमिका बहुत प्रभावी और सहायक सिद्ध होती है. गिरजाघरों, मन्दिरों, मस्जिदों के पादरियों को अनुसरण भ्रमण में सम्मिलित किया जा सकता है या स्थानीय समुदाय के सदस्यों से उन्हें बातचीत में शामिल किया जा सकता है. ऐसा करने से समुदाय को प्रार्थना-पूजा के स्थलों की गन्दगी और वातावरण को देखने में मदद मिलती है और यह पता चलता है कि धार्मिक नेता भी एक गन्दे वातावरण में जीने को विवश हैं. क्या यह लोगों को स्वीकार होगा कि उनके धार्मिक गुरु और पूज्य लोग भी उनके मल को खाने के लिये बाध्य हों, या यह कि लोग प्रार्थना-पूजा के लिये उन कपड़ों में जायें जिनपर मक्खियों के द्वारा मल लगा दिया गया है या चूहियों के द्वारा मल लगा दिया गया हो जब कपड़े सूखने के लिये धूप में डाले गये हों? इस प्रकार की बातों पर परिचर्चा बहुधा धार्मिक नेताओं को भी कुछ करने के लिये प्रोत्साहित कर देती है.

इण्डोनेशिया में अवाखा के पास एनएलकेबीकेएल में एक ट्रिगरिंग अभ्यास के दौरान अनुसरण भ्रमण दल को एक मस्जिद के पास घास में ताजा मल का एक ढेर मिला. जबकि कुछ लोग इसे सूखा मिट्टी से ढकने का प्रयास कर रहे थे कि जिससे लोग इसे न देख लें बहुत से लोगों ने इसे देख लिया था और वे चिन्तित थे कि उनके धार्मिक स्थल को भी खुले में शौच करने वालों ने नहीं छोड़ा. अनुसरण भ्रमण में साथ चल रही कई महिलाएं तो बहुत ही दुखी हो गईं और रोने लग गईं. इसका परिणाम यह हुआ कि प्रक्रिया तीव्र गति से होने लगी और प्रेरणा की चिंगारी जलाने का काम जल्दी ही पूरा हो गया.
बांग्लादेश के कई गांवों में इमामों के द्वारा मस्जिद के लाउडस्पीकर का उपयोग करते हुए नियमित रूप से लोगों से खुले में शौच बन्द करने अनुरोध किया जाता था. इस्लाम और पवित्र कुरान का हवाला देते हुए वे लोगों को स्वच्छता की आवश्यकता और प्रार्थना के समय स्वच्छ कपड़े पहनने के महत्व को स्पष्ट करते थे.

इण्डोनेशिया के लोम्बोक सुमावा में समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता अभियान से आच्छादित गांवों में साप्ताहिक कुरान पाठ प्रतियोगिताओं के दौरान खुले में शौच बन्द करने और शौच के बाद तथा भोजन से पहले साबुन से हाथ धोने से जुड़ी सूरों पर परिचर्चा की जाती थी. इन परिचर्चाओं के कारण गांवों ने कम समय में ही खुले में शौच से मुक्त होने का स्तर प्राप्त कर लिया.

कई समुदायों में खर्च के लिये उपलब्ध राशि का उल्लेखनीय भाग गिरजाघरों, मस्जिदों, मन्दिरों, मठों और अन्य धार्मिक सुविधाओं के निर्माण और रखरखाव पर खर्च किया जाता है. समुदाय के सदस्यों से विभिन्न रूपों में काफी बड़ी धनराशि नियमित रूप से इकट्ठा की जाती है. यह सामाजिक एकजुटता और सहकारिता का उत्कृष्ट उदाहरण है. यदि ट्रिगरिंग ठीक से की जाये तो अनौपचारिक रूप से इन धार्मिक इकाइयों का प्रबन्धन कर रहे लोग आगे आ जायेंगे और समुदाय के द्वारा एकजुट होकर कार्यवाई करने के प्रयास को बल प्रदान करेंगे तथा गरीबों की सहायता करेंगे जिससे खुले में शौच से शीघ्र मुक्ति प्राप्त हो सके.

समुदाय के निर्धन और निर्बल वर्ग की सहायता हेतु आगे आने वालों का उत्साह बढ़ाइये

प्राय: समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की अच्छी और प्रबल ट्रिगरिंग के फलस्वरूप समुदाय के सम्पन्न लोग गरीबों की सहायता और सहयोग के लिये तैयार हो जाते हैं. यह सहायता कई रूपों में हो सकती है. इसमें अपनी जमीन की सीमा पर शौचालय निर्माण की अनुमति देना, कुछ बांस, लकड़ी के तख्ते, या शौचालय के पैन खरीदकर देना या उन्हें बिना ब्याज के ऋण उपलब्ध कराना आदि सम्मिलित हो सकता है.

बायें: युवा महिला स्वाभाविक नेता जिन्हें बांग्लादेश में सम्मानित भूमिका और उपाधियों में बहुत अच्छी तरह जाना जाता है. मायमनसिंह जिले की युवा महिला स्वाभाविक नेता, अजमीरा, पातारी, कोरा, बांग्लादेश
ऊपर और नीचे बांग्लादेश के राजशाही जिले की महिला स्वाभाविक नेता

बायें: सबसे पहले सामने आने वाले स्वाभाविक नेता, (बायें) मोह. शाहिद उद्दीन तथा और (दायें) मोह. सोबुर सामान, मौलाना, मायमनसिंह, राजशाही, बांग्लादेश, लेखक के साथ. दोनों ही समुदायों और आसपास के जिलों में सम्पूर्ण स्वच्छता में अपने योगदान के लिये समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के सामुदायिक परामर्शदाता के रूप में बहुत ही लोकप्रिय हो गये.

समुदाय में उभरने वाले नायकों को पहचानने और उन्हें बढ़ावा देने के लिये सतर्क और तत्पर रहिये. ऐसे लोगों को पहचान करने में समुदाय की मदद कीजिये जो दुर्बल, गरीब, भूमिहीन अथवा ऐसे लोग जो अन्य कारणों से अपने शौचालय नहीं बना सकते, की मदद करने को स्वेच्छा से तैयार हों. इस प्रकार के असमर्थ लोगों में बूढ़े, विधवा, एकाकी माताएं, विकलांग, गंभीर रोगों से ग्रसित लोग या अन्य वंचित हो सकते हैं. एकल समुदाय समूह से पूछिये कि वे ऐसे लोगों की समस्याओं का हल किस प्रकार करेंगे. कोई सुझाव मत दीजिये. जिन समुदायों ने सम्पूर्ण स्वच्छता को ठीक से समझ लिया है वहां इस प्रकार की समस्याओं के समाधानों की अपेक्षा की जा सकती है. आवश्यक कदम है दुर्बल और निर्धन लोगों तथा उनकी मदद करने को तैयार बेहतर जीवन स्तर वाले लोगों के बीच एक सम्पर्क सम्बन्ध स्थापित करने में सहायक होना. यह सहायता किसी भी रूप में हो सकती है. गड्ढे खोदने और शौचालय निर्माण के लिये श्रम के रूप में या/और सामग्री, धन या ऋण उपलब्ध कराने के रूप में.

बहुधा खुले में शौच बन्द करने लिये गरीब लोगों में जागा जोश और भावना सहज ही समृद्ध लोगों को उनकी मदद करने के लिये प्रोत्साहित कर देते हैं.

अभियान में बच्चों को सम्मिलित कीजिये

हर ट्रिगरिंग प्रक्रिया के दौरान बहुत से बच्चे इकट्ठा होते हैं और प्रक्रिया को आनन्द के साथ देखते हैं. कुछ सुगमकर्ताओं को चाहिये कि वे बच्चों को वहां से दूर ले जायें जहां वयस्कों के द्वारा मानचित्रीकरण किया जा रहा है और बच्चों से दूसरी जगह पर अलग से मानचित्रीकरण करायें. इस चरण में ही वे खुले में शौच बन्द करने का विचार समझ सकते हैं. उन्हें प्रोत्साहित कीजिये कि वे उपयुक्त नारे विकसित करें जिन्हें वे गांव में एक जुलूस बनाकर जोर से लगाते हुए निकल सकते हैं. वयस्कों को उत्साहित कीजिये वे आकर बच्चों के द्वारा बनाये गये मानचित्र को देखें और बच्चों की प्रतिक्रियाओं को सुनें. यह ट्रिगरिंग के बाद खुले में शौच से पूर्ण रूप से मुक्ति पाने तक तथा अन्य गांवों से भ्रमण पर आये लोगों के समक्ष भी चलता रह सकता है.

- स्कूल और शिक्षक छात्रों के साथ मिल कर बहुत बड़ी भूमिका अदा कर सकते हैं. बच्चों से स्कूलों में पूछा गया कि क्या उन्हें शौचालय उपलब्ध है और क्या वह उसका उपयोग करते हैं. हाथ खड़ा करके बतायें. समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के अन्तर्गत सीखे गये कुछ गीत बच्चे घर में भी गाते हैं. स्कूलों में स्वास्थ्यकर स्वच्छता व्यवहार सिखाया भी जाता है और कुछ भी किया जाता है.

सभी स्थानीय नेताओं और सामुदायिक कार्यकर्ताओं को शामिल करने और समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता को ट्रिगर करने की अपनी ही विशिष्ट शैली होती है. मोहम्मद शरीफ उल्लाह, स्वास्थ्य सेवा, दिनाजपुर, विराल जिला, बांग्लादेश के एक गांव में ट्रिगरिंग करते हुए. समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के प्रसार और विस्तार की गति इस बात पर निर्भर करती है कि सरकार तथा गैर-सरकारी संस्थाओं के द्वारा स्थानीय नेताओं की क्षमता का विकास कैसे किया जाता है और उनका उपयोग किस प्रकार किया जाता है तथा उन्हें किस प्रकार का सहयोग दिया जाता है.

सभी समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की प्रक्रिया ट्रिगरिंग में बच्चों की बहुत महत्वपूर्ण भूमिका होती है. जब गांव में ट्रिगरिंग की जाती है तो अधिकतर और ज्यादा बच्चों के द्वारा किये गये निर्णयों से प्रभावित हो रहे होते हैं. तंजानिया के एक गांव में बच्चे इस ट्रिगरिंग को दिखाते हुए जिसमें पीछे से बड़े भी साथ शौच करते हैं.

उत्तर बोलीविया के एन्डीज पर्वतमाला के एक गांव में जहां वर्षों तक मुफ्त में शौचालय निर्माण सामग्री आपूर्ति का निष्फल कार्यक्रम चलाया गया, खुले में शौच के विरोध में नारे लगाते हुए बच्चे उस स्थान पर पहुंचे जहां समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की ट्रिगरिंग वयस्कों के लिये की जा रही थी. निश्चित रूप से अधिकतर अपने ही बच्चों को खुले में शौच बन्द करने के लिये समझाते हुए देखकर आत्मचिंतित और प्रोत्साहित हो गये. उनके विचार एकदम बदल गये. वास्तव में 'आवश्यकता नहीं' "मुफ्त धन की आस" में बदल गई जिसके लिये बच्चे ही उत्प्रेरक सिद्ध हुए.

बच्चे परिवर्तन का शक्तिशाली माध्यम हैं

उत्तर पश्चिमी बांग्लादेश के जनपदों में बच्चों को "बिच्छू वाहिनी" (बिच्छू सेना) के नाम से जाना जाता था. उन्हें सीटियां दे दी गई थीं और उनका काम था खुले में शौच करने वालों की खोज में रहना. एक युवक ने बताया कि खुले में शौच से मुक्त होने के लिये चलाये जा रहे अभियान के दौरान उसने कम-से-कम ४० बार सीटियां बजाईं. कुछ मामलों में तो बच्चे "गू-झण्डा" लेकर जाते थे. इन झण्डों पर खुले में शौच करने वाले का नाम लिख कर उसी स्थान पर लगा दिया जाता था जहाँ उसके द्वारा शौच की गई थी. इसी प्रकार पश्चिमी सुमात्रा के सिजुंजुंग जिले में बच्चे गड़बड़ी करने वालों की खोज में रहते थे, परन्तु इस मामले में, धार्मिक संस्कृति होने के कारण, समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता अभियान के गीत गाकर व्यक्ति को लज्जित करते रहते थे.

केन्या के होमा बे में बच्चों ने बड़ी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया. उन्होंने अपनी कार्ययोजना बनाई और उसे बड़ों के सामने प्रस्तुत किया.

ऊपर: ऊपरी बोलीविया में लापाजुआ के पास एक गाँव में बच्चे खुले में शौच की जगहों के जमीन पर बने मूल मानचित्र के सामने भाग में सूद तक संदूषण के मार्गों का चित्र प्रस्तुत करते हुए.

मध्य: समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की ट्रिगरिंग में बच्चों की भूमिका बहुत अहम होती है. इथियोपिया के एक गाँव में मानचित्र के विश्लेषण के निष्कर्षों को विवेचन करता हुआ युवा

नीचे: यमन के एक गाँव में खुले में शौच के विरोध में नारे लगाते हुए बच्चों का जुलूस

बच्चों के अभियान की गतिविधियाँ, पूर्वी जावा

पूर्वी जावा के लुमाजंग जिले के सुमीरिंग गाँव के बच्चों ने गाँव को खुले में शौच से मुक्त कराने में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया. गाँव के चार प्राथमिक और एक माध्यमिक स्कूल के छात्र निम्नांकित गतिविधियों में सक्रिय रूप से संलग्न थे:

- खुले में शौच के विरोध में नारे लगाते हुए जुलूस उस समय तक नियमित रूप से निकालते रहे जब तक गाँव पूरी तरह से खुले में शौच से मुक्त नहीं हो गया
- गन्दे क्षेत्रों और खुले में शौच की जगहों का पता लगाने के लिये अलग-अलग जगहों और चार्ट पद्धति में अनुश्रवण प्रभाग
- शौचालयों के प्रकार और स्वच्छता से जुड़ी आदतों से सम्बन्धित सूचनाओं को घर-घर जाकर एकत्र करने के लिये सर्वेक्षण. प्रत्येक छात्र को दस परिवारों से सूचनाएं एकत्र करके रिपोर्ट करने का काम सौंपा गया था.
- जल स्रोतों आदि की जाँच, उदाहरण के लिये पीने के पानी के भण्डारण के लिये इस्तेमाल में लाये जा रहे जारों के प्रकार तथा पीने के पानी के बड़े जारों में मच्छरों के लार्वा तथा अन्य संदूषण की उपस्थिति की जाँच.

स्वच्छता सम्बन्धी निर्माण सामग्री की उपलब्धता सुगम बनाना (आगे विपणन शीर्षक भी देखिये)

सुगमकर्ताओं को चाहिये कि वे स्थानीय बाजारों से सम्पर्क-सम्बन्ध स्थापित करने में समुदाय की सहायता करें.

जहाँ समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की ज्योति किसी भी स्तर पर जला दी गई है ऐसे अधिकतर स्थानों में स्वच्छता सम्बन्धी निर्माण सामग्री की माँग उसकी आपूर्ति से अधिक हो जाती है. कम लागत की निर्माण सामग्री का अभाव प्रगति में रोड़ा अटका सकता है जिससे समुदाय की स्वच्छता सीढ़ी पर चढ़ने की गति धीमी पड़ सकती है. पारम्परिक निर्माण सामग्री बहुत बहुत महंगी, नाजुक, भारी और मानकीकृत होती है कि चयन की कोई सम्भावना ही नहीं रह जाती. दुरस्थ क्षेत्रों में तो यह उपलब्ध भी नहीं होती. साथ ही सभी लोग सबसे सस्ती सामग्री क्रय करना पसन्द नहीं करेंगे. यह सुनिश्चित कीजिये कि विविध प्रकार की सामग्री उपलब्ध हो जिससे चुनाव करने की संभावना रहे.

ऊपर: कार्यशाला सिखाती हुई बालिका, होमा बे कोना, उत्तरी न्यान्ज़ा, केन्या

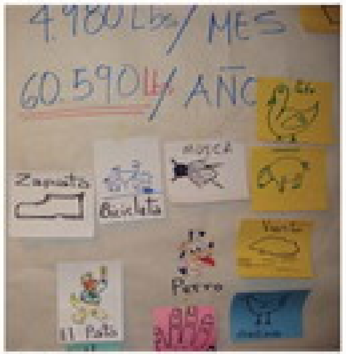

बायें: बड़ों के सामने अपने योजना प्रस्तुत करते हुए बच्चे, होमा बे कोना, उत्तरी न्यान्ज़ा, केन्या

ऊपर: मल के ढेर तक संदूषण मार्ग प्रस्तुत करते हुए बच्चे, एल साल्वाडोर, बच्चों की गणना से मल का वजन और उसके बाद का एक पोस्टर

बायें: सुरावा गाँव, लोमिक सुमात्रा, इण्डोनेशिया में खुले में शौच के विरोध में जुलूस के लिये पंक्ति में खड़े हुए बच्चे

[illegible]

जैसे-जैसे समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की प्रगति और प्रसार होता जाता है स्वच्छता की बेहतर निर्माण सामग्री की मांग बढ़ती जाती है और स्वाभाविक व्यवहार में परिवर्तन होने पर लोग अपने शौचालयों के डिजाइन और गुणवत्ता में सुधार करने के लिये इच्छुक होने लगते हैं. समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के विभिन्न चरणों के प्रति जागरूक होना बहुत महत्वपूर्ण होता है. इन्हीं स्थितियों के संदर्भ में उपयुक्त सहायता और सहयोग प्रदान करना लाभकारी होता है. ट्रिगरिंग के ठीक बाद या खुले में शौच से मुक्त होने के बाद समुदाय के सदस्य लोग बेहतर शौचालय बनाने के लिये प्रभावित हो जाते हैं और विद्यमान शौचालयों में सुधार करना चाहते हैं. कुछ लोग तो पहली बार ही बहुत अच्छे और आधुनिक शौचालय बनाने में लग जायेंगे और कम लागत मॉडलों को छोड़ देंगे क्योंकि उन्हें लागत की चिन्ता नहीं है.

जो कार्य तत्काल किये जा सकते हैं उनमें सम्मिलित हैं:

- पता लगाइये कि किस चीज की जरूरत है (उदाहरण के लिये पैन, रिंग, स्लैबों और इथियोपिया में एक पिट वाले शौचालयों के गड्ढों के लिये हैण्डल वाले ढक्कन की जरूरत थी और गैर रिसावों के लिये प्लास्टिक के पाइपों की बहुत मांग थी)
- स्थानीय अभिनव पहल तथा निर्माण और उत्पादन को प्रोत्साहित कीजिये
- समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की गांव की बैठक में स्थानीय व्यापारियों को आमंत्रित कीजिये जिससे वे समुदाय से सीधे सम्पर्क कर सकें, उनकी आवश्यकताओं को समझ सकें और बिक्री की संभावनाओं को परख सकें.
- उत्पादन के बाजारों में स्थानीय रूप से उपलब्ध सामग्री के स्रोतों की खोज कीजिये और व्यापारियों को उचित सूचना दीजिये, संभावनाएं स्पष्ट कीजिये, उन्हें प्रोत्साहित कीजिये कि वे उस सामग्री की आपूर्ति की व्यवस्था करें जिसकी समुदाय को आवश्यकता है.
- प्रोत्साहित कीजिये और एक सामुदायिक प्रणाली की व्यवस्था कीजिये और स्वच्छता की निर्माण सामग्री के स्टॉल उनसे लगवाइये.
- स्वाभाविक नेताओं को प्रोत्साहित कीजिये कि वे स्वच्छता से जुड़ी निर्माण सामग्री अपने गांव में लायें.
- स्वाभाविक नेताओं तथा समुदाय के अन्य सदस्यों को स्वच्छता की निर्माण सामग्री का निर्माण/उत्पादन करने के लिये प्रोत्साहित कीजिये.
- कम लागत की उपयुक्त तकनीकों के विषय में पता लगाइये (जैसे कि ठीक ढलान वाला पत्थर स्थानीय रूप से उपलब्ध और न टूटने वाला हल्का प्लास्टिक का पैन) और विक्रेताओं एवं आपूर्तिकर्ताओं के बीच सम्पर्क स्थापित कराइये.

स्वच्छता निर्माण सामग्री के स्थानीय विक्रेताओं और उत्पादन स्टोर के मालिकों को समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता में अपना व्यापार बढ़ाने और साथ ही समुदाय की सहायता करने का अवसर दिखाई देता है. वे इस अवसर और मांग को भुना सकते हैं. इसके लिये वे पास के नगरों और उप नगरों से स्वच्छता की निर्माण सामग्री समुदाय के सदस्यों को सुगम बेचने के लिये ला सकते हैं. बहुधा वे पैन तथा अन्य सामग्री को बिना ब्याज के उधार देकर भी समुदाय की सहायता कर सकते हैं. उधार शीघ्र ही चुका दिये जाने की संभावना रहती है. जैसे ही फसल का पैसा मिलता है उधार चुका दिया जाता है. नगरों और उप-नगरों में विकास कर रहे कुछ व्यापारियों के सम्बन्धी शहरी बाजारों के साथ मजबूत सम्बन्ध बनाने में भी सहायक हो सकते हैं.

बारिश और बाढ़ के बाद जब सिंगल पिट शौचालय ढह जाते हैं तो बेहतर और अधिक टिकाऊ शौचालयों की मांग होने लगती है. परिवार, विशेष रूप से महिलाएं, फिर से खुले में शौच की ओर वापस नहीं जाना चाहते. यही वह समय है जब कि समुदाय के सदस्य विकल्पों की खोज में रहते हैं और बेहतर शौचालयों के मॉडलों को अपनाना चाहते हैं. यह जानने के लिये सतर्क रहना महत्वपूर्ण है कि क्या खुले में शौच से मुक्त होने का स्तर प्राप्त करने के कुछ ही महीनों में ऐसी स्थितियां सामने आने तो नहीं लगी हैं. स्थानीय उद्यमियों को प्रोत्साहित/विकसित करने तथा बाजारों के साथ व्यावहारिक सम्पर्क स्थापित करने के माध्यम से निर्माण सामग्री की बढ़ती मांग के अनुरूप आपूर्ति सुनिश्चित की जा सकती है. इसके लिये आवश्यक होगा कि पूरी प्रक्रिया में समुदाय की सक्रिय सहभागिता हो.

खुले में शौच से मुक्त स्तर का सत्यापन और प्रमाणीकरण

खुले में शौच से मुक्त होने की स्थिति का सत्यापन करना एक मुख्य गतिविधि है. सत्यापन के लिये आवश्यक है कि निरीक्षण किया जाये जिससे पता किया जा सके कि क्या समुदाय पूरी तरह खुले में शौच से मुक्त वातावरण को पा सका है या नहीं. प्रमाणीकरण इस स्तर की प्राप्ति का पुष्टिकरण है और औपचारिक रूप से मान्यता प्रदान करना है. विशेषकर जहाँ खुले में शौच मुक्त होने पर पुरस्कार की व्यवस्था है समुदाय और कार्मिक गांव के खुले में शौच से पूर्ण रूप से मुक्त होने से पहले ही पुरस्कार के लालच में प्रमाणीकरण प्राप्त करने की कोशिश कर सकते हैं. जहाँ प्रमाणीकरण के आधार पर पुरस्कार दिये जाते हैं वहीं धोखा देने और भ्रष्टाचार के मामले सामने आते हैं. इससे बचाव रखने के लिये तथा वास्तव में खुले में शौच मुक्त स्तर को स्थायी बनाये रखने के लिये कई उपाय उपयोग में लाये गये हैं. निम्नांकित के द्वारा अलग-अलग ढंग से साथ मिल कर निरीक्षण किये जा सकते हैं और किये गये हैं:

- पड़ोसी समुदायों के सदस्य (विशेष रूप से जब प्रतियोगिता हो)
- खुले में शौच से मुक्त समुदायों के स्वाभाविक नेता और अन्य लोग
- एक सरकारी समिति
- सरकारी विभाग के कार्मिक
- गैर-सरकारी संगठनों के कार्मिक
- शिक्षक
- समाज के सामान्य सदस्य, उदाहरण के लिये कई लोगों को पड़ोसी गांवों में से चुनाव जा सकता है.

कुछ उपयोगी सिद्धान्त और व्यवहार

- सत्यापन और प्रमाणीकरण समितियों में स्थायी सदस्य नहीं होने चाहिये. सदस्यों को बदलते रहना आवश्यक है (जहाँ पुरस्कार योजनाएं हैं वहाँ भ्रष्टाचार के खतरे को कम करने के लिये)
- खुले में शौच से मुक्त गांवों के स्वाभाविक नेताओं को निरीक्षण समितियों का सदस्य बनाया जाना चाहिये
- महिलाओं को सदस्य बनाइये जिससे महिलाओं की स्वच्छता व्यवस्थाओं की जांच की जा सके
- जांच के लिये एक से अधिक बार भ्रमण होने चाहिये
- औचक भ्रमण भी आयोजित होने चाहिये
- सत्यापन और प्रमाणीकरण के लिये सभी सदस्यों के द्वारा हस्ताक्षर करना जरूरी हो
- जब तक कि कम-से-कम 6 माह तक खुले में शौच मुक्त स्तर बना न रहा हो तो कोई भी प्रमाण पत्र जारी न किया जाये
- जब पूरी कार्यवाही से तथा सदस्यों के साथ सत्यापन हो जाये तो गांव के प्रवेश द्वार पर एक बोर्ड लगा देना चाहिये जिस पर अंकित हो कि गांव खुले में शौच से मुक्त घोषित किया जाता है
- जब किसी पूरे प्रशासनिक क्षेत्र का सत्यापन किया जाना हो तो संगठनों के सदस्यों और अन्य लोगों में से बहुत व्यक्तियों को सत्यापन में भाग लेने के लिये आमंत्रित किया जाना चाहिये जैसा कि उत्तर पश्चिम बांग्लादेश के उप-जनपदों के संदर्भ में किया जाता है (जहाँ एक मामले में निरीक्षण दल के सदस्यों की संख्या 500 हो गई थी)

प्रमाणीकरण की योजनाओं के स्तर का परीक्षण इस बात से हो जाता है कि किस बारम्बारिता के साथ उन्हें रोका जाता है या वापस ले लिया जाता है. निरीक्षकों के रूप में स्वाभाविक नेता ही सबसे अधिक सख्त और बारीकी से चीजों को देखने वाले होते हैं. कम्बोडिया में जहाँ उनके द्वारा भ्रमण किया गया 9 में से 7 समुदाय विफल पाये गये.

सत्यापन की गतिविधियों में निम्नांकित सम्मिलित हो सकते हैं, किये गये हैं:

- पूर्व की खुले में शौच की जगहों का भ्रमण
- पी फटने से पहले और गोधूलि बेला के बाद जाँच
- शौचालयों का निरीक्षण
- जानना कि क्या शौचालयों के गड्ढों का उपयोग किया गया है

- कुछ लोगों और बच्चों से बातचीत
- समुदाय से पूछना कि स्वास्थ्यकर व्यवहार में आये परिवर्तन का अनुसरण किस प्रकार किया जाता है
- स्वास्थ्यकर व्यवहार परिवर्तन के स्पष्ट और मुख्य संकेतक, उदाहरण के लिये हाथ धोने के लिये साबुन, शौचालयों के पास पानी भरे बर्तन, इत्यादि
- उपलब्धियों के विषय में पूछना और जानना कि इन मामलों में क्या किया गया
- मल खाने वाले जानवरों को देखना
- जाँच से पता लगाना कि क्या सभी लटकते और तैरते हुए शौचालय नष्ट कर दिये गये हैं
- खुले में शौच से मुक्त समुदायों के सदस्यों को जब मूल्यांकन समितियों में सम्मिलित किया जाता है तो वे खुले में शौच मुक्त होने के स्तर की परख करने के लिये अभिनव युक्तियों का प्रयोग करते हैं, उदाहरण के लिये आम, कटहल या किसी अन्य फल को काटना जिसकी महक तेज होती है और जो मक्खियों को आकर्षित करता है तथा यह जाँच करना कि क्या खुले में शौच बन्द होने के कारण मक्खियों की जनसंख्या में कमी हुई है.

सामुदायिक मूल्यांकनकर्ता और जानवरों के मल

[illegible] राज्य, [illegible] के [illegible] जिले के [illegible] की भूमिका में समुदाय का एक सदस्य, पड़ोस के गाँव का रहने वाला एक मूल्यांकनकर्ता, अनुपस्थित हो गया. अन्य लोग उसकी प्रतीक्षा करने लगे. जब अन्त में वह फिर सामने आ गया तो उसने कहा कि वह अपना कर्तव्य कर रहा था. वह एक सुअर का पीछा कर रहा था जिसकी टाँग में मल लगा होने का शक था. सुअर का पीछा करते हुए वह मानव मल तक तो नहीं पहुँचा परन्तु वह गाय के गोबर तक जरूर पहुँच गया.

जब योजना का प्रसार बड़े स्तर पर होता है तो सत्यापन और प्रमाणीकरण समितियों के सामने बहुत सी समस्याएं आ जाती हैं जैसा कि भारत में निर्मल ग्राम पुरस्कार के सन्दर्भ स्पष्ट होता है. समाधान इस बात में है कि यदि बड़े स्तर पर इस प्रकार का काम करना हो तो विकेन्द्रीकरण करना चाहिये और स्थानीय स्तर पर सत्यापन होना चाहिये.

खुले में शौच से मुक्त स्तर प्राप्त करने पर उत्सव मनाइये

समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के स्थानीय समुदायों और स्थानीय सरकारी तंत्र के बीच मधुर सम्बन्ध स्थापित कीजिये. परन्तु सरकारी कर्मियों को शौचालय निर्माण की सब्सिडी या आर्थिक सहायता के प्रस्ताव से समुदाय को गुमराह करने का प्रयास न करने दें. परन्तु यदि जोशपूर्ण और उत्साहपूर्ण सहयोग मिलता है तो उसे सहर्ष स्वीकार करें.

सत्यापन और प्रमाणीकरण के साथ अभियान का प्रसार

सत्यापन और प्रमाणीकरण के साथ अभियान का प्रसार करने में समस्याएं सामने आती हैं, विशेषकर तब जब कि पुरस्कार की व्यवस्था भी लागू हो. भारत में, निर्मल ग्राम पुरस्कार योजना के अन्तर्गत उन गाँवों को पुरस्कृत किया जाता है जो खुले में शौच से मुक्त होने का स्तर प्राप्त कर लेते हैं तथा साथ ही पर्यावरणीय स्वच्छता भी सुनिश्चित कर लेते हैं. सफल समुदायों के नेताओं का राष्ट्रपति के द्वारा सम्मान किया जाता है और समुदायों को एक बड़ी रकम पुरस्कार के रूप में प्राप्त होती है. शुरुआत में सत्यापन और प्रमाणीकरण बहुत सख्ती से किये जा रहे थे. हिमाचल प्रदेश के मण्डी जनपद के एक गाँव ने बहुत अच्छा प्रयास किया था परन्तु उसे असफल घोषित कर दिया गया सिर्फ इसलिये कि एक भण्डार गृह के दो दरवाजों पर "शौचालय" लिखा हुआ था (इस तथ्य के बावजूद कि कभी से कोई पैर नहीं लगे थे). हाल ही में जबकि आवेदनों की संख्या हजारों में पहुँच गई है (अनुमानित सूचनाओं के अनुसार 15000 से 20000), सत्यापन और प्रमाणीकरण के काम को अनुबन्ध के आधार पर गैर-सरकारी संस्थाओं को सौंप दिया गया है जिन्होंने अपने स्तर से इसे उप-अनुबन्ध के आधार पर अन्य को सौंप दिया है, और कुछ मामलों में तो इन उप-अनुबन्ध धारकों द्वारा आगे और उप-अनुबन्ध कर दिये गये हैं. कभी-कभी तो असफल व्यक्तियों को मूल अनुबन्ध में निर्दिष्ट धनराशि के एक छोटे से भाग के भुगतान की सम्भावना के साथ. एक सही सूचना रखने वाले स्रोत का यह मानना है कि जब ऐसा होता है तो परिणाम तो केवल एक "मजाक" ही होगा, और जब सफलता के आधार पर सम्मान और अच्छी धनराशि के आर्थिक पुरस्कार की व्यवस्था हो तो भ्रष्टाचार की सम्भावना स्पष्ट रूप से रहती ही है. इसकी अपेक्षा स्थानीय स्तर पर आयोजित सत्यापन कहीं अधिक सफल होता है जहाँ प्रतिष्ठा, आत्म-सम्मान, गौरव तथा खुले में शौच से मुक्त होने पर मिलने वाले अन्य लाभों के अतिरिक्त कोई पुरस्कार नहीं होता है.

ऐसा करने का एक अच्छा तरीका यह है कि खुले में शौच मुक्त होने के उपलक्ष्य में उत्सव मनाने के लिये स्थानीय सरकारी तंत्र को सम्मिलित कर लिया जाये. जब भी किसी समुदाय या गाँव के द्वारा खुले में शौच से मुक्त होने के स्तर को प्राप्त कर लिया जाता है तो पुरस्कार के रूप में एक उत्सव मनाने की व्यवस्था कीजिये जिससे अन्य लोगों में भी जोश आये और उनके द्वारा भी प्रतिज्ञा की जाये. वरिष्ठ कर्मियों, राजनेताओं, पत्रकारों, संस्था सदस्यों से अन्य लोगों और उसी स्तर के राजस्व ग्रामों के समुदाय सदस्यों को आमंत्रित कीजिये. यह सुनिश्चित कीजिये कि जो भी सम्मानित अतिथि सम्मेलित हों उन्हें पहले से ही सही और पूर्ण सूचनाएं दे दी जायें. उन्हें प्रोत्साहित कीजिये कि वे अन्य लोगों को भी सार्वजनिक रूप से वक्तव्य देने के लिये आमंत्रित करें और समुदाय की प्रगति और योजनाओं से अवगत करायें. जब समुदाय के द्वारा पूर्ण स्वच्छता प्राप्त कर ली जाये तो समुदाय से कहिये कि वे एक बोर्ड लगायें और उसपर यह तथ्य अंकित करा दें. इससे उनका गौरव बोध बढ़ेगा और वहाँ आने वाले लोगों की दिलचस्पी भी बढ़ेगी जो कि अपने गाँव वापस जाकर अपने गाँव को भी इसी प्रकार स्वच्छ बनाने के लिये प्रेरित होंगे.

अनुसरण और खुले में शौच मुक्त स्तर को बनाये रखना

स्वच्छता के प्राप्त स्तर को बनाये रखने का संकेत इस बात से भी मिलता है कि क्या समुदाय स्वच्छता सीढ़ी पर ऊपर की ओर बढ़ रहा है. स्वच्छता के स्थायी रूप से बने रहने और जीवन शैली का अभिन्न अंग बन जाने के लिये आवश्यक है कि लोगों के व्यवहार में परिवर्तन हो. यह व्यवहार परिवर्तन यदि स्थायी रूप का हो तभी स्वच्छता स्थायी हो सकती है. इसलिये इस व्यवहार परिवर्तन के माध्यम से ही सम्पोषकता के सन्दर्भ में अनुसरण किया जा सकता है.

यदि खुले में शौच करने वाले कुछ व्यक्तियों को समुदाय द्वारा दण्डित किया जाता है तो इससे यह पता चलता है कि समुदाय स्वच्छता के प्रति प्रतिबद्ध हो गया है और इसे बनाये रखना चाहता है. शौचालय, विशेष रूप से स्थानीय स्तर पर पहली बार बनाये गये कम लागत के शौचालय, बहुत दिनों तक नहीं टिक पाते और एक-आध साल में ही उनके गड्ढे भर जाते हैं, या गड्ढे की दीवारें ढह जाती हैं, या ढाँचा ही टूट जाता है. सम्पोषकता का संकेत तब मिलता है जब परिवारों के द्वारा स्वयं ही दूसरे शौचालय का निर्माण कर लिया जाता है, विशेषकर जब नया शौचालय पहले वाले से अधिक अच्छा और टिकाऊ हो. सामान्यतया समुदाय के द्वारा स्वच्छता सीढ़ी पर चढ़ने का रुझान भी सम्पोषकता का स्पष्ट संकेतक है.

अनुसरण से स्पष्ट हो जायेगा कि और आगे किस प्रकार की सहायता की आवश्यकता है. कभी-कभी हल्के-फुल्के अनुवर्ती भ्रमण और गतिविधियों की आवश्यकता होती है. उदाहरणार्थ समुदाय के सदस्यों के द्वारा पूर्व में की गई प्रतिज्ञाओं को पूरा करने के लिये उन्हें प्रोत्साहित करना, या खुले में शौच से शीघ्र मुक्त होने के लिये एक दूसरे के शौचालयों का उपयोग करने के लिये प्रोत्साहित करना.

कहानियां - इथियोपिया से

समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता को प्लान इथियोपिया और मध्य, पूर्व, तथा दक्षिण अफ्रीका के सात अन्य प्लान देशों में फरवरी-मार्च 2007 में पहली बार शुरू किया गया. प्रशिक्षण कार्यशाला के दौरान प्रतिभागियों ने दक्षिण पश्चिमी इथियोपिया के शबेदिनो वोरेडा, नेशनलिटीज एवं पीपुल्स क्षेत्र के आसपास के 12 गांवों में समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की कार्यविधि से लोगों में जोश की चिंगारी जलाने के लिये ट्रिगरिंग की गई. प्रशिक्षण कार्यशाला के तीन माह के अन्दर ही प्लान इथियोपिया के अनुवर्ती कार्यक्रम के अन्तर्गत 50 से अधिक गांवों ने अपने को पूर्ण रूप से खुले में शौच मुक्त घोषित कर दिया. स्थानीय लोगों के सशक्तिकरण के उत्साह और कुशल उदाहरण निम्नवत् है. यह सभी समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की ट्रिगरिंग के ही परिणाम थे.

खुले में शौच करने वाले अपना दण्ड स्वयं निर्धारित करें

इथियोपिया के चफ्फा कोकोरे गांव के लोगों के पास कुछ भी करने का नया तरीका होता है. वे इसे समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता कहते हैं परन्तु इसका एक हिस्सा तो बहुत ही सरल है. खुले में कोई शौच नहीं, कभी नहीं. इस गांव के कुछ लोगों को यह भ्रम था कि यह नियम उन पर लागू नहीं होता इसलिये वे पहले की तरह ही खुले में शौच करते रहे. लेकिन उतरी हुई पैंट के साथ पकड़े गये लोग शीघ्र ही यह सोचने को विवश हो गये कि अच्छा होता यदि उन्होंने समुदाय की इच्छा का आदर किया होता. उन्होंने पाया कि वे अपने ही मल को लेकर नजदीक के शौचालय तक जा रहे हैं.

समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता को जब फरवरी 2007 में शुरू किया गया तो स्वाभाविक नेताओं में से एक औरत बैराइदेश बोंडू ने यह प्रतिज्ञा की कि वह अपने गांव को खुले में शौच से मुक्त कर देगी. उल्लंघन करने वालों का पालन करके उन्होंने यह सिद्ध किया कि उनकी प्रतिज्ञा पक्की थी. उनके शब्दों में,

"समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता विधि के हमारे गांव में संचालित होने के बाद गांव के प्रत्येक परिवार ने गड्ढे खोदकर अपने लिये शौचालय बनाये. बाहर से आने वालों के लिये हमने मुख्य सड़क के किनारे-किनारे एक सामुदायिक शौचालय भी बनाये. इन सारे प्रयासों के बाद भी मैंने चार व्यक्तियों को गांव के खुले खेतों में अलग-अलग समय पर शौच करते हुए पाया. मैंने उन्हें आदेश दिया कि अपने मल को अपने ही हाथों से उठायें और सबसे पास के शौचालय तक ले जाकर उसमें डालें. उन्हें जब पकड़ा गया तो उनकी पैंट उतरी हुई थी इसलिये उन्होंने कोई प्रतिरोध नहीं किया, परन्तु मुझसे प्रार्थना की कि मैं उन्हें पत्तियों की सहायता से मल को उठा कर ले जाने दूं. मैंने उन्हें अनुमति दे दी और उन्होंने पत्तियों पर मल को उठाकर पास के शौचालय में उसका निपटान कर दिया."

दूसरे गांववासी, जोवेश बोंडू ने कहा, "मैंने देखा कि कुछ आगन्तुक खुले खेतों में शौच करने की तैयारी कर रहे हैं. मैं जोर से चिल्लाया और उन्हें शौच करने से पहले ही रोक दिया. मैं हमेशा निगरानी करता रहता हूं जिससे हमारा गांव स्वच्छ रहे और खुले में शौच से मुक्त बना रहे."

चफ्फा कोकेल में बैराइदेश और जोवेश गांव में स्वच्छता के रखवाले बन गये हैं और उन्होंने अन्य लोगों से भी उनके साथ आने का अनुरोध किया है. आतो आनोतिम् कोदो, चफ्फा कोकेल के अध्यक्ष ने स्वच्छता सुविधाओं की गुणवत्ता में सुधार करते रहने का वादा किया है. अपने प्रयासों में समुदाय को प्लान इथियोपिया, वाटर एकशन और स्थानीय वोरेडा हेल्थ एण्ड वाटर ऑफिसेज से सहयोग प्राप्त हुआ है. अबेबाश दिगु, स्वास्थ्य प्रसार कार्यकर्ता, को अपने परिवर्तन के महत्व के विषय में कोई संदेह नहीं है. "हमारे गांव में खुले में शौच की प्रथा इतिहास बनती जा रही है."

न आर्थिक सहायता और न ही कोई सब्सिडी - परन्तु समुदाय के द्वारा की जा रही पहल से ही स्वच्छता सम्बन्धी आंकड़ों में वृद्धि होती जा रही है. इथियोपिया के शेबेडिनो वोरेडा में पहले आठ गांवों ने फरवरी 2007 में समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता को अंगीकार किया. तीन माह से भी कम समय में यह 57 गांवों तक पहुंच गया और 1436 परिवारों ने एक गड्ढे वाले शौचालय अपनी ही पहल पर निर्मित कर डाले. शेबेडिनो वोरेडा के स्वास्थ्य कार्यालय के प्रमुख आतो गेटिचे कासा ने उल्लेख किया है कि चफ्फा कोकेले के 1265 परिवारों के पास अब अपने शौचालय हैं और इनमें से 465 का निर्माण समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के शुरू होने के बाद किया गया.

कार्यक्रम की लागत

इस पहल को प्लान इथियोपिया का सहयोग प्राप्त है जिसके अन्तर्गत लगभग 2000 अमेरिकी डॉलर में समुदाय के स्वाभाविक नेताओं, गांव के स्वास्थ्य अधिकारियों, स्वास्थ्य प्रसार कार्यकर्ताओं, और सरकारी संस्थाओं के कर्मियों के प्रशिक्षण की व्यवस्था की गई है. पिछले वर्षों में प्लान के द्वारा प्रति परिवार स्वच्छ शौचालय के पक्के भाग के लिये 25 डॉलर खर्च किये जाते थे, इसलिये 1436 शौचालय बनाने के लिये तो 36000 अमेरिकी डॉलर की जरूरत होती. अब यहां कोई आर्थिक सहायता नहीं है. कोई सब्सिडी भी नहीं है. समुदाय अपनी ही आय से खर्च करके अपने ही बल से यह पहल कर रहा है. वे अपने गांवों को खुले में शौच से पूर्ण रूप से मुक्त करने के लिये कटिबद्ध, दृढ़ निश्चय और जोश से भरे दिखाई दे रहे हैं. कुशल निगरानी रखने वाली संस्थाओं - प्लान इथियोपिया, वाटर एकशन, शेबेडिनो वोरेडा हेल्थ एण्ड वाटर ऑफिसेज, स्वाभाविक नेता और समुदाय के बीच बहुत मधुर सम्बन्ध है. इस मामले से स्पष्ट होता है कि समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता से स्वच्छता और स्वास्थ्यकर व्यवहार पर प्रभाव और फर्क पड़ता है तथा खुले में शौच से मुक्त होने में मदद मिलती है. परन्तु प्रक्रिया को उचित ढंग से संचालित करना और कुशल बनाना तथा गुणवत्ता और सुविधाओं के उपयोग पर संबंधित अनुवर्ती गतिविधियां बहुत ही महत्वपूर्ण होती हैं.

दुष्ट आत्माओं का डर - मोहिनी (चार्म)

सियरा लियोन के दक्षिणी, पूर्वी और उत्तरी प्रान्तों के कुछ भाग को "पोरो सीक्रेट सोसाइटी" के द्वारा 'चार्म', जो स्थानीय भाषा का शब्द है का प्रयोग किया जाता है. चार्म का अर्थ है एक भौतिक संरचना जिसमें एक मिट्टी सिरकी और बांस से बनाई जाती है और इस पर एक विशेष प्रकार से पत्तियां लपेट दी जाती हैं. इस प्रतीक का उपयोग लोगों को दुष्ट आत्माओं से डराने के लिये किया जाता है. दुष्ट आत्माएं शरीर में प्रवेश कर जाती हैं और शरीर को रोग ग्रस्त कर देती हैं जिसका परिणाम मृत्यु भी हो सकता है. जहां भी इसे रखा जाता है वहां लोग जाने से कतराते हैं क्योंकि उन्हें दुष्ट आत्माओं का डर रहता है. परन्तु यह भी मान्यता है कि जब लोग चुपके छिप के इसके पास जाते हैं तभी दुष्ट आत्माएं आक्रमण करती हैं. इन्हें साधारणतया चरागाहों, फार्म, गोपनीय झाड़ियों (जहां सीक्रेट सोसाइटी के सदस्य ही जा सकते हैं) और निर्जन स्थानों पर लगाया जाता है.

सियरा लियोन के कोनेमा के जिले 'क्वाल्ल बो' चीफडोम के कपाड़ गांव में स्थानीय समुदाय के द्वारा चार्म के इस चिन्ह का इस्तेमाल कुछ खुले में शौच के स्थानों से लोगों को डरा कर भगा देने के लिये किया जाने लगा.

जोसेफ ए. कोन्डा, प्रोग्राम इंजीनियर
क्रिश्चियन एड टू अफ्रीका एसिस्टेड सोशियोइकोनॉमिक एसोसिएशन,
कोयडुमा, सियरा लियोन

अध्याय 5

प्रसार एवं समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता से आगे

सन् 1999 के उत्तरार्ध में समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की अभिनव पहल की शुरुआत से अब तक इसका तेजी से प्रसार हुआ है. समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता को कम-से-कम 15 देशों में सफलतापूर्वक शुरू किया गया है. यह मुख्य रूप से इस हस्तपुस्तिका के प्रधान लेखक के द्वारा चलाये गये व्यावहारिक प्रशिक्षणों के माध्यम से सम्भव हो सका है. प्रधान लेखक के द्वारा वर्ष 2000 से 2007 तक 15 देशों में कम-से-कम 65 व्यावहारिक प्रशिक्षण कार्यशालाओं का संचालन क्षेत्रीय, राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर किया गया. यह प्रशिक्षण 1400 से अधिक प्रशिक्षकों, कार्यान्वयनकर्ताओं, सरकार के पदाधिकारियों, वरिष्ठ सरकारी अधिकारियों, गैर-सरकारी संगठनों और सहायता प्रदान करने वाले संगठनों के स्टाफ और कम-से-कम 50 विभिन्न अधिकारियों के प्रधान कार्यकर्ताओं के लिये संचालित किये गये. यह सब कई राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय विकास संगठनों के सहयोग और अभिनव पहल से सम्भव हो सका है. यह सभी संस्थाएं सक्रिय रूप से इसके प्रसार और प्रचार में सहयोग करती रही हैं जिससे जहां इसे शुरू किया गया वहां फैलाने तथा नये देशों में शुरू करने में मदद मिली.

(अधिकारियों, देशों और प्रशिक्षणों की विस्तृत जानकारी के लिये देखिये
– www.livelihoods.org/hot_topics/CLTS.html)

इन प्रशिक्षणों में प्रशिक्षित कई लोगों ने अपने संगठनों के अन्य लोगों को ट्रेनिंग का प्रशिक्षण प्रदान किया है. कम-से-कम भारत, बांग्लादेश, इण्डोनेशिया और पाकिस्तान में प्रशिक्षित लोगों के द्वारा यह प्रशिक्षण अपने संगठन के बाहर अन्य लोगों को भी दिया गया है जिसमें सरकारी कार्मिक भी सम्मिलित हैं. इनमें से कुछ प्रशिक्षण तो बहुत अच्छे रहे हैं, परन्तु काफी प्रशिक्षणों में उच्च गुणवत्ता नहीं बनाये रखी जा सकी है जो कि एक चिंता का विषय है.

नेत्रकोना बांग्लादेश में समुदाय संचालित पहल की सफलता का उत्सव मनाने के लिये यूनियन में सौ से भी अधिक समुदायों के द्वारा आयोजित विशाल सभा और समारोह. अपने क्षेत्र की नयी आवश्यकताओं की पूर्ति करने वालों के अध्ययन और स्वागत इस प्रकार की सभाओं और उत्सवों में सक्रिय रूप से भाग लेने के लिये आमंत्रित किये जाते हैं. चुने गये जन प्रतिनिधियों में से उत्साही व्यक्ति अन्य लोगों को प्रोत्साहित करके समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के प्रसार और विस्तार में दोनों ही महत्वपूर्ण योगदान करते हैं.

प्रशिक्षण और प्रसार - क्या करें और क्या न करें

आगे लिखी बातों में अवश्य ही परिवर्तन करने और कुछ जोड़ने की आवश्यकता होगी. स्थितियां बदलती रहती हैं और रणनीतियां भी भिन्न-भिन्न होती हैं, परन्तु अब इतनी जानकारी हो गई है कि अनुभव तथा सामान्य विवेक के आधार पर सुझाव दिये जा सकते हैं, इनमें वह चीजें भी शामिल हैं जो अपेक्षित हैं तथा वह भी जिनसे बचने की आवश्यकता है.

क्या अवश्य करें

- जिन्हें प्रशिक्षण मिल चुका है उनमें से ऐसे व्यावहारिक प्रशिक्षकों की पहचान कीजिये जिनका ट्रिगरिंग का काम अच्छा रहा है और उनके द्वारा जिन समुदायों में समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की प्रेरणा जगाई गई है वहां के लोगों ने नये व्यवहार परिवर्तन को अपना लिया है.
- समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के प्रति प्रतिबद्ध संगठनों के अच्छे व्यावहारिक सुगमकर्ताओं को चुनिये, प्रशिक्षित कीजिये और उन्हें पूरा सहयोग प्रदान कीजिये
- इस बात पर जोर दीजिये कि सभी प्रशिक्षण व्यावहारिक हों जिससे समुदाय के बीच जाकर व्यावहारिक रूप से ट्रिगरिंग करने का अनुभव प्रतिभागियों को मिल सके. सभी प्रशिक्षणों में ट्रिगरिंग और तात्कालिक अनुवर्ती भ्रमण के माध्यम से अनुभव आधारित प्रायोगिक सम्मिलित होना चाहिये.
- सुनिश्चित करें कि मुख्य प्रशिक्षक और सुगमकर्ता पूर्णकालिक हों.
- सुगमकर्ताओं को इस प्रकार व्यवस्थित कीजिये कि वे ट्रिगरिंग से पहले, ट्रिगरिंग के दौरान और ट्रिगरिंग के बाद एक टीम या दल के रूप में काम कर सकें.
- अधिक अनुकूल स्थितियों से शुरू कीजिये और फिर अधिक चुनौतीपूर्ण स्थितियों की ओर बढ़िये (अध्याय 2 ट्रिगरिंग से पहले, देखिये)
- उन समर्थकों के साथ सम्पर्क बनाइये जो कि समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के प्रति समर्पित हैं और लगातार दीर्घ काल तक सहयोग कर सकते हैं.
- अभियान शुरू कीजिये.
- प्रतियोगिता को प्रोत्साहित कीजिये, सफलता का उत्सव मनाइये.
- अभिनव पहल और सोचने को बढ़ावा दीजिये, खुले में शौच से मुक्त गांवों को सीखने के लिये प्रयोगशाला बनाइये.
- समुदाय में से सुगमकर्ताओं की पहचान कीजिये और उनके साथ सहयोग कीजिये. समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की ज्योति से जगमग समुदायों के स्वाभाविक नेताओं में से सुगमकर्ताओं की पहचान कीजिये और उन्हें आवश्यक प्रशिक्षण, सहयोग, और प्रोत्साहन दीजिये जिससे वे अन्य समुदायों में ट्रिगरिंग और अनुवर्ती भ्रमण कर सकें.
- ट्रिगरिंग के बाद प्रगति की समीक्षा कीजिये. यदि प्रगति संतोषजनक नहीं है तो ट्रिगरिंग बन्द कर दीजिये तथा रह गई कमी का पता लगाने के लिये पूरी प्रक्रिया का पुनरावलोकन कीजिये.
- प्रयास कीजिये कि समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता अभियान ऐसा हो जाये कि अपने आप फैलता चला जाये.
- समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता को शुरू की एक रणनीति के रूप में देखिये जिससे समुदाय का सशक्तिकरण इस प्रकार हो सके कि वे अन्य विकास कार्यों में भी नई पहल एकजुटता के साथ अपने ही स्तर पर कर सकें.

शायद सबसे अधिक महत्वपूर्ण यह है कि

- सुनिश्चित कीजिये कि सभी प्रशिक्षण व्यावहारिक हों जिनमें समुदाय के बीच ट्रिगरिंग करने की प्रक्रिया को अनिवार्य रूप से सम्मिलित किया गया हो.

गम्भीर खतरों एवं गलतियों से बचने के लिये याद कीजिये कि सहभागी ग्राम्य आकलन का कितने बड़े पैमाने पर दुरुपयोग किया गया था. कक्ष में ही प्रशिक्षण दिया जाने लगा था, व्यवहार और अभिवृत्ति की उपेक्षा होती थी, समुदाय के बीच में कोई एक गतिविधि संचालित की जाती थी और अनुवर्ती गतिविधियों को छोड़ दिया जाता था, शब्दों का प्रचार तो होता था परन्तु लोगों का सशक्तिकरण नहीं. ऐसा ही कई मामलों में समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के साथ भी हो चुका है और इस प्रकार के दुरुपयोग से हर कीमत पर बचने की आवश्यकता है. इसका अर्थ है:

क्या नहीं करना है

- प्रसार करने की इच्छा के कारण कोई जल्दबाजी न कीजिये जिससे प्रक्रिया की गुणवत्ता पर प्रतिकूल प्रभाव पड़े.
- प्रशिक्षकों और सुगमकर्ताओं के लिये भी ऐसे प्रशिक्षण को न तो आयोजित होने दीजिये और न ही उसके लिये सहयोग दीजिये जिसमें प्रशिक्षण कक्ष में बातों के माध्यम से ही प्रशिक्षण का प्रयास किया जा रहा हो और सम्बन्धित समुदाय के बीच जाकर ट्रिगरिंग और अनुवर्ती भ्रमण एवं गतिविधियों के आवश्यक भागों का समावेश न किया गया हो.
- ऐसी प्रशिक्षण एजेंसियों और संस्थाओं के साथ मिल कर काम मत कीजिये जो कि समुदाय के बीच जाकर गतिविधियों का आयोजन नहीं करतीं और समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के अन्तर्गत प्रशिक्षण प्रदान करने के लिये तैयार दिखती हैं.
- ऐसे गैर-सरकारी संगठनों और अन्य एजेंसियों के साथ मिल कर काम मत कीजिये जो अपने लाभ के लिये तथा समुदायों का शोषण करने के लिये पहले और सुनिश्चित करने जैसी गतिविधियों को समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता का नाम देकर आगे बढ़ाने में लगे रहते हैं.

अभिकरणों के कार्मिकों तथा प्रभावी व्यक्तियों के द्वारा रणनीतिक कार्य

अन्तर्राष्ट्रीय और राष्ट्रीय अभिकरणों तथा सहायता प्रदान करने वाली संस्थाओं, नेताओं, सरकारों, अन्तर्राष्ट्रीय गैर-सरकारी संगठनों, गैर-सरकारी संगठनों, नीति-निर्धारण से जुड़े राजनेताओं के साथ मिलकर इस प्रकार के कार्य किये जा सकते हैं

जिससे विचारों का प्रसार हो, लोगों की सोच में प्रभाव पड़े और अभिनव अवधारणाओं का प्रतिपादन हो सके. यह संख्या मामलों से जुड़े लोगों पर भी लागू हो सकता है.

इस प्रकार के सभी लोगों और उनके संगठनों के लिये:

- सीखी गई बातों और प्राप्त किये गये अनुभवों को बांटने तथा यह जानने के लिये क्या उपलब्धि हो सकती है सफल मामलों की जानकारी देने के लिये कार्यशालाओं और बैठकों का आयोजन एवं संचालन कीजिये.
- एक देश से दूसरे देश और एक राज्य से दूसरे राज्य के भ्रमण की व्यवस्था कीजिये जिससे खुले में शौच से मुक्त समुदायों, स्वाभाविक नेताओं और समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के चैम्पियनों के बीच आमने-सामने अन्तर्क्रिया हो सके.
- अनुवर्ती बैठकों और परिचर्चाओं का आयोजन कीजिये जिससे नीतियों में रचनात्मक परिवर्तन करने का प्रयास किया जा सके.

और सहयोग के लिये

- ऐसे संगठनों की पहचान कीजिये जो कि समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता को अंगीकार करने के लिये इच्छुक हों तथा उनका सम्पर्क अच्छा काम करने वाली अन्य संस्थाओं से करा दीजिये और उनके लिये व्यावहारिक प्रशिक्षण की व्यवस्था कीजिये.
- सफलता और विफलता की घटनाओं, प्रशिक्षण और सीखने की सामग्री, फोटोग्राफ, वीडियो आदि का संकलन, राष्ट्रीय अथवा संस्थाओं के स्तर पर अभिलेखीकरण, प्रकाशन और प्रचार कीजिये. और ऐसी पुस्तक करने वाली सामग्री के प्रति अपना सतर्क रहिये जिसके माध्यम से हानिकारक व्यवहार का पुरस्कार किया गया हो.

यह सबसे महत्वपूर्ण है कि नीति-निर्धारकों, प्रबन्धकों, वित्त अधिकारियों को, चाहे वे सरकार में हों या अनुदान अथवा ऋण देने वाले अभिकरणों में या गैर सरकारी संगठनों में, को यह स्पष्ट कर दीजिये और सिखा दीजिये कि समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की एक मुख्य पूर्वापेक्षा है कि परिवारों को निर्माण सामग्री पर आर्थिक सहायता/सब्सिडी प्रदान न करने की निश्चित और लगातार एकसी नीति हो. जहां पर पुनर्नियोजन की व्यवस्था है सब्सिडी के लिये आवंटित राशि को प्रशिक्षण आदि के लिये व्यय किया जा सकता है, वहां पूर्व में स्वीकृत आवंटित धनराशि से बहुत कम भाग के व्यय हो पाने की आशंका होती है. यदि समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता का प्रसार तेजी से होता है तो शुरुआत में कम व्यय करने तथा बाद में अधिक व्यय करने की स्थिति होगी. जब एक बार शुरुआत हो जाये और कुछ गांव खुले में शौच से मुक्त हो जायें तो प्रशिक्षण, क्षमता विकास, खुले में शौच मुक्त गांवों के भ्रमण, स्वाभाविक नेताओं के सामुदायिक कार्यशालाओं के रूप में उपयोग पर होने वाले व्यय में वृद्धि होने लग जायेगी और इसके लिये पर्याप्त बजट आवंटन की आवश्यकता होगी परन्तु फिर भी बहुत अधिक राशि की आवश्यकता नहीं होगी.

यह बहुत महत्वपूर्ण है कि परिवारों के लिये सब्सिडी के रूप में स्वच्छता सामग्री पर होने वाले व्यय को "समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता" का नाम न दिया जाये. ऐसे किसी भी प्रयास की पहचान की जानी चाहिये तथा तत्काल इसे हतोत्साहित किया जाना चाहिये.

कार्यान्वयनकर्ता अभिकरण समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता को स्वीकार करने में कठिनाई का अनुभव करते हैं क्योंकि इसकी कम लागत से उनके द्वारा किये जाने वाला धनराशि वितरण सीमित हो जाता है. ऐसे अभिकरणों को चाहिये कि वे लचीले बनें और शुरू में कम तथा बाद में ज्यादा खर्च करने के लिये तैयार हो जायें.

जब बजट में निर्धारित बहुत बड़ी राशि को समय से खर्च करने का दबाव रहता है तो नीतियों में परिवर्तन लाने के लिये रणनीतियों में निम्नांकित सम्मिलित हो सकते हैं;

- आवंटित धनराशि को ग्रामीण इलाकों के बजाये नगरों, बाजारों एवं स्कूलों की स्वच्छता पर खर्च करने की व्यवस्था
- समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के लिये पूर्ण रूप से समर्पित और नये गैर-सरकारी संगठन को वित्तीय सहायता (जैसा कि बांग्लादेश में विवादों के लिये किया गया है)
- पूर्ण स्वच्छता प्राप्त कर लेने वाले समुदायों को पुरस्कृत करना (जैसा भारत में किया गया है) (यह विवाद उठाया जा सकता है इस विषय पर विभिन्न प्रकार के दृष्टिकोण और विचार हैं)
- परियोजना के रूप में पहले अपने स्तर पर क्रियान्वित करना फिर सुव्यवस्थित ढंग से नई अवधारणा का प्रसार और प्रचार कीजिये (WSLIC2 में हुआ). जब बड़े क्षेत्रों में अभियान फैल जाये तो उसके अनुसार अधिक खर्च कीजिये
- शोध कीजिये और व्यावहारिक अनुभव के माध्यम से सीखिये

गांव के स्तर पर ट्रिगरिंग के लिये सुगमकर्ता दलों का प्रशिक्षण

समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की कार्यशालाएं सामान्यतया 4 या 5 दिनों की अवधि की होती हैं. गांवों के भ्रमण का दिन और समय समुदाय के परामर्श से ही निर्धारित किया जाता है. 5 दिवसीय कार्यशाला की योजना और विषयों/गतिविधियों का अनुक्रम इस प्रकार हो सकता है;

आवंटित राशि के कम खर्च होने की समस्या का समाधान

बांग्लादेश में शौचालयों का निर्माण लोकप्रिय था क्योंकि बजट की धनराशि सीधे उन गरीब परिवारों पर खर्च की जा सकती थी जिनके कब्जे को प्राथमिकता दिया गया था और एक शौचालय निर्माण की सामग्री पर 30-50 डॉलर तक व्यय किया जा सकता था. लेकिन प्लान को यह जानकारी थी कि इस प्रकार निर्मित सभी शौचालयों का उपयोग नहीं किया जा रहा था तथा सभी गरीबों तक सहायता नहीं पहुंच सकती थी. 2003 में कमल कर द्वारा प्रशिक्षित किये जाने के बाद प्लान के स्टाफ को समझ में आ गया कि किस प्रकार एक पूरा समुदाय खुले में शौच बन्द करने का फैसला ले सकता है और लोग अपने आप ही अपने लिये शौचालयों का निर्माण कर सकते हैं. जबकि प्लान ने 600 शौचालयों के निर्माण का लक्ष्य रखा था उन्हीं गांवों के द्वारा समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता अभियान का लिये जाने के फलस्वरूप गांव खुले में शौच से मुक्त घोषित हो गये और उन्होंने 6000 से ज्यादा शौचालयों का निर्माण कर डाला. इस परिणामों से स्टाफ बहुत प्रसन्न हो गया परन्तु कन्ट्री डाइरेक्टर के मन में कुछ चिन्ता ही एक समस्या दिखाई देने लगी. चूंकि अब हम सामग्री और तकनीकी सहायता के लिये भुगतान नहीं कर रहे थे हम केवल 12000 डॉलर ही खर्च करने जा रहे थे और यह भी प्रशिक्षण तथा प्रचार सामग्री पर जबकि उस वर्ष के लिये हमारा बजट 60000 डॉलर था. हम लोग बहुत सफलता प्राप्त कर रहे थे, लक्ष्य से बहुत अधिक, परन्तु इस बजट का केवल पांचवा हिस्सा ही खर्च कर रहे थे. मुख्यालय की दृष्टि से बजट का कम खर्च होना खराब नियोजन तथा कार्यक्षमता की क्षमता की कमी को दिखाते होगा तथा प्रायोजकों से प्राप्त धन का लाभ सीधे समुदायों को मिलता हुआ नहीं दिखाई देगा.

और अनुभव हो जाने पर शेष राशि के अच्छे उपयोग का रास्ता मिल गया. अन्य लोगों को जोड़कर विजली नाम की एक नई गैर-सरकारी संस्था का गठन कर लिया गया जो कि समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता पूरे बांग्लादेश में बढ़ावा देने के प्रति समर्पित थी. और इस प्रकार प्लान की नई धनराशि से गरीबों को इतना ज्यादा फायदा हुआ कि उसे मापा नहीं जा सकता.

स्रोत: एडवर्ड एबे, पूर्व कन्ट्री डाइरेक्टर, प्लान बांग्लादेश

पहला दिन: *अभिमुखीकरण एवं तैयारी:* पृष्ठभूमि, स्वच्छता के लिये पारम्परिक आर्थिक सहायता आधारित विधि के स्थान पर समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की कार्यविधि का विकास, विगत वर्षों की विफलताएं, विधियों का पूर्वाभ्यास और अभिमुखीकरण. समूह गठन, भूमिका निर्धारण (मुख्य सुगमकर्ता, सह-सुगमकर्ता, विषय वस्तु और प्रक्रिया रिपोर्टर, वातावरण नियंत्रक, बच्चों की गतिविधि को सुगम बनाने के लिये कम-से-कम दो सुगमकर्ता), महिलाओं के साथ काम करने के लिये महिला प्रतिभागियों के समूहों का गठन. समूहों द्वारा रणनीतियों का निर्धारण.

गांव या उप-गांव के मुखिया, स्थानीय समुदाय के नेता, या जहां समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता का ट्रिगरिंग किया जाता है वहां के समुदाय से चयनित सदस्यों को सामान्यतया कार्यशाला में प्रतिभाग करने के लिये आमंत्रित किया जाता है. जब पहले दिन के सत्र पूरे हो जाते हैं तो यह आमंत्रित लोग (प्रत्येक चयनित गांव से एक या दो) अपने समुदाय के साथ एक बड़ी बैठक का सुविधाजनक स्थान पर आयोजन करने के लिये लौट जाते हैं. अगले दिन जब ट्रिगरिंग दल वहां पहुंचता है तो समुदाय बैठक के लिये तैयार होता है और लोगों को बैठक के स्थान की जानकारी होती है.

दूसरा दिन: *समुदायों के बीच जाकर ट्रिगरिंग और अनुभवों का आदान-प्रदान*

तीसरा दिन: *संक्षेप में अनुभवों को बांटना और दूसरी ट्रिगरिंग.* पहले दिन के अनुभवों को संक्षेप में बांटना तथा वीडियो देखना जिससे पता चल सके कि सुगमकर्ताओं द्वारा किस प्रकार प्रक्रिया संचालित की गई और विशेष रूप से यह जानना कि उनकी अभिवृत्ति और व्यवहार किस प्रकार का रहा. परिचर्चा कि इसमें किस प्रकार के परिवर्तन की आवश्यकता है और फिर किसी दूसरे समुदाय में ट्रिगरिंग.

चौथा दिन: *गांव में की गई ट्रिगरिंग के अनुभवों को बांटना,* तथा सीखने योग्य बातों को उजागर करना विशेष रूप से पहले और दूसरे दिन की समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता ट्रिगरिंग के अनुभवों की तुलना करना. यदि पहले दिन के अनुभव के आधार पर बातों को ठीक से सीखा जाता है तो सामान्यतया दूसरे दिन की ट्रिगरिंग की प्रक्रिया के संचालन में बहुत सुधार देखा जा सकता है. प्रतिभागियों के संगठनों के संदर्भ में कार्य योजनाओं का निर्माण तथा प्रस्तुतीकरण, ट्रिगरिंग के बाद के अनुवर्ती प्रयास और गतिविधियों के संदर्भ में प्रतिभागियों की भूमिका का निर्धारण निर्णायक हो सकता है. संयुक्त मूल्यांकन, घोषणा और उत्सव मनाने की तिथियों का निर्धारण भी महत्वपूर्ण होता है.

पांचवां दिन: *फीडबैक और अनुवर्ती गतिविधि कार्यशाला* जिसमें कार्य योजनाओं और कार्यों पर समुदायों से फीडबैक लिया जाता है. इससे समुदायों के बीच तथा स्वाभाविक नेताओं के बीच प्रतियोगिता शुरू हो सकती है.

मुक्त लोगों को पांचवे दिन आमंत्रित किया जाना चाहिये. संदर्भ के आधार पर यह राजनेता, सरकारी अधिकारी/कर्मचारी, गैर-सरकारी संगठनों से जुड़े लोग और स्वच्छता के कार्य में संलग्न दूसरे व्यक्ति, बहुपक्षीय अभिकरणों से जुड़े व्यक्ति हो सकते हैं. इससे उन्हें समुदाय के प्रतिनिधियों को देखने और सुनने का अवसर मिलेगा तथा यह भी जान सकेंगे कि पूर्ण रूप से खुले में शौच से मुक्त होने के लिये उनकी कार्य योजनाएं क्या हैं.

ध्यान देने योग्य बिन्दु:

- भाषा. यदि सम्भव हो तो अच्छा होगा कि मुख्य सुगमकर्ता स्थानीय भाषा में पटु हो. अन्य के संदर्भ में प्रशिक्षित दुभाषियों की व्यवस्था आवश्यकतानुसार करनी होगी.
- समूहों द्वारा पाई गई बातें - महिलाओं, बच्चों के समूहों द्वारा पाई गई बातें - ट्रिगरिंग के अन्त में अन्य लोगों के समक्ष इसका प्रस्तुतीकरण किया जाता है.
- गांव के मुखिया और स्थानीय सरकारी कर्मचारियों को बहुत पहले से ही यह स्पष्ट कर दिया जाना चाहिये कि समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता में किसी भी प्रकार की सब्सिडी या आर्थिक सहायता का प्रावधान नहीं है. यह इसलिये आवश्यक है कि कहीं से ट्रिगरिंग की प्रक्रिया के बीच में ही अचानक से प्रकट होकर सब्सिडी की बात न शुरू कर दे. यदि सम्भव हो तो पिछले वर्षों में (जिले/राज्य/देश में) चलाये जा रहे सब्सिडी आधारित स्वच्छता कार्यक्रम के इतिहास पर उनसे परिचर्चा की जानी चाहिये और उसकी समीक्षा की जानी चाहिये. इस प्रकार के मुद्दे और प्रश्न जैसे कि सब्सिडी किसे मिली? उसका पालन किस प्रकार किया गया? क्या सब्सिडी का परिणाम खुले में शौच से मुक्त स्तर प्राप्त करना हुआ? क्या सरकार सबको सब्सिडी देने का व्यय वहन कर सकती है? इन सब बातों पर परिचर्चा की जानी चाहिये.
- समुदाय के सदस्यों को समय और स्थान की सूचना पहले से ही दी जानी चाहिये. यह सोचिये कि समुदाय से जितने अधिक लोग भाग लेंगे उतना ही अधिक ट्रिगरिंग के सफल होने की सम्भावना होगी.

इथियोपिया के विगा वोरेडा के खुले में शौच से मुक्त समुदाय के लोग गर्व से खुले में शौच से मुक्त अपने गांव को बाहर से आने वालों को दिखाते हुए जिन्हें वे अपने गांव और आसपास के क्षेत्र में फैली बीमारियों के बारे में भी बताते हैं.

यह महत्वपूर्ण है कि जिन लोगों को प्रशिक्षित किया है उनसे फिर मिला जाये जब उनके द्वारा गांवों में जाकर ट्रिगरिंग सम्पन्न करके व्यावहारिक अनुभव प्राप्त कर लिया गया हो. यह समीक्षा करने तथा कौशल एवं कार्यविधि को सुदृढ़ करने का एक अच्छा अवसर है. इस समय सामने आने वाली समस्याओं और मुद्दों के समाधान पर भी विचार किया जा सकता है. इस प्रकार की किसी भी बैठक में सामने आये नये विचारों को आमंत्रित किया जा सकता है जिससे वे अपने अनुभवों को सामने रख सकें और सुधार के लिये नई रणनीतियों को विकसित करने में सहायक हो सकें.

समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता प्रशिक्षण की गुणवत्ता के लिये प्रतिबद्धता

तेजी से प्रसार, प्रशिक्षण की बढ़ती मांग और कार्य आकार में वृद्धि होने के कारण कुछ स्थानों में प्रशिक्षण की गुणवत्ता में कमी आने लगी है. सरकारों और सहायता प्रदान करने वाले अभिकरणों के द्वारा निविदा और चयन के आधार पर खुले बाजार से प्रशिक्षण अभिकरणों की सेवाएं ली जा रही हैं. इनमें से कुछ अभिकरणों के द्वारा बहुत से प्रशिक्षणों का आयोजन किया जा चुका है. यह प्रशिक्षण व्यावहारिक रहे जिनमें समुदाय के बीच जाकर समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की ट्रिगरिंग सम्मिलित थी परन्तु जिन समुदायों में ट्रिगरिंग की गई उनकी संख्या के सापेक्ष बहुत कम समुदाय ही खुले में शौच से मुक्त स्तर पाने में सफल पाये गये. इस अनुपात तथा खुले में शौच मुक्ति की ओर अग्रसर होने के अन्य संकेतकों पर बारीकी से नजर रखी जानी चाहिये. यदि स्थिति असंतोषजनक हो तो स्पष्ट है कि प्रशिक्षण की गुणवत्ता अपेक्षा के अनुरूप नहीं रही होगी या अनुवर्ती प्रयास का अभाव.

परियोजना के मध्य में परिवर्तन – न्यून आय वाले समुदायों के लिये जल एवं स्वच्छता परियोजना 2, इण्डोनेशिया में समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता

जब न्यून आय समुदायों के लिये जल एवं स्वच्छता परियोजना (WSLIC2) 2001 में प्रारम्भ हुई तो समुदायों को शौचालयों के निर्माण के लिये 2880 डॉलर के बराबर राशि का अनुदान एक परिक्रामी कोष बनाने के लिये दिया गया. परिणाम बहुत उत्साहवर्धक नहीं रहे. अधिकतर लाभ बेहतर आय वालों को ही मिला. जिस प्रयोजन के लिये यह धनराशि उपलब्ध करायी गयी थी उस पर व्यय करने के बाद किसी भी समुदाय के द्वारा इसे कोष में वापस करने का कोई प्रयास भी नहीं किया गया. समस्या यह थी कि परियोजना में स्वच्छता एवं स्वास्थ्यकर गतिविधियों की अपेक्षा जलापूर्ति पर अधिक ध्यान दिया जाता था. समुदायों को यह पता नहीं था कि शौचालयों की मांग में वृद्धि कैसे हो सकती है और जिन महंगे डिजाइनों को बढ़ावा दिया जा रहा था वह गरीब लोगों की पहुंच से बाहर थे.

वर्ष 2006 में चार नवम्बर जिलों (तथा एशियन डेवलपमेंट बैंक द्वारा सहायतित स्वच्छता परियोजना के दो जिलों) में समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता का परीक्षण किया गया जिसमें निर्माण सामग्री पर सब्सिडी की व्यवस्था नहीं थी. इन जिलों में सफलता मिलने पर 2007 के प्रारम्भ में समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता का प्रसार 6 और जिलों तक किया गया. 2007 के शुरू में परिक्रामी कोष की रणनीति को त्याग गया और सभी नये परियोजना गांवों के लिये समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता को अपनाने का निर्णय लिया गया. अगस्त 2007 तक 34 गांव तथा 2 उपजिले सत्यापित रूप से खुले में शौच से मुक्त हो गये, जबकि पूर्व की परिक्रामी कोष परियोजना कार्यान्वयन के पहले तीन वर्षों में एक भी गांव खुले में शौच से पूर्ण रूप से मुक्त नहीं हुआ था. परियोजना के कार्यान्वयन के बीच में ही दृष्टिकोण तथा कार्यविधि में मौलिक परिवर्तन हुआ. यह संभव हुआ स्वास्थ्य विभाग के वरिष्ठ कर्मियों की प्रतिबद्धता और जल एवं स्वच्छता प्रोग्राम की सहायता से. इसका श्रेय व्यावहारिक प्रदर्शन और प्रतिपादन को भी जाता है जिसके अन्तर्गत करके दिखाया गया कि किस प्रकार समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता कार्यविधि से बिना किसी प्रकार की सब्सिडी दिये बहुत कम समय में कितने अच्छे परिणाम प्राप्त हो सकते हैं. इसे सम्भव करने में सरकारी नीति का भी हाथ है जिसमें घोषित कर दिया था कि उनकी विभाग के लिये स्वच्छता की नई रणनीति समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता ही होगी. समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के अन्तर्गत नियोजन करके सीखने का अवसर प्राप्त हुआ. अनुभवी प्रशिक्षकों, सुगमकर्ताओं और स्वाभाविक नेताओं के समूह को विकसित करने का अवसर मिला. कुछ जिलों के लोगों ने पाया कि समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता अन्य जिलों में शुरू हो गई थी और उसके बहुत अच्छे परिणाम सामने आ रहे थे. उन्हें डर था कि कहीं वे छूट न जायें, ऐसे जिलों में समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की मांग पैदा करने का अवसर भी मिला. सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि परियोजना के बीच में ही परिवर्तन करके जल एवं सैनिटेशन फॉर लो इनकम कम्युनिटीज 2 ने इण्डोनेशिया की ग्रामीण स्वच्छता नीति में परिवर्तन को प्रेरित कर दिया है.

स्रोत: नीना शातीफा, पार्टिसिपेटरी डेवलपमेंट एण्ड कैपेसिटी बिल्डिंग एडवाइजर, (WSLIC 2) इण्डोनेशिया

पाकिस्तान में सामुदायिक सक्रियतावादियों के माध्यम से समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता का प्रसार

पाकिस्तान के प्रान्तों तथा स्थानीय स्तर के सरकारी कर्मियों, गैर-सरकारी संगठनों तथा अनुदान देने वाली संस्थाओं के कर्मियों के द्वारा 2007 में बांग्लादेश का अध्ययनार्थ भ्रमण किया गया. समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की अवधारणा से अधिक सफलता का पाकिस्तानी शिष्ट मण्डल पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ा और उन्हें स्पष्ट हो गया कि खुले में शौच से मुक्त होने के मार्ग में गरीबी के कारण कोई रुकावट नहीं आती. जबकि इस अभियान के पूरे बांग्लादेश में फैलने के कार्य में गैर-सरकारी संगठनों के द्वारा किया जा रहा कार्य बहुत सराहनीय था यह महसूस किया गया कि गैर-सरकारी संगठनों के माध्यम से इसका प्रसार करने में पाकिस्तान के संदर्भ में दिक्कतें आयेंगी.

इस अनुभव और सोच के आधार पर करन्ट कार्नर्ड प्रोग्राम नेटवर्क ने निश्चय किया कि सामुदायिक एकजुटता प्राप्त करने के लिये गांव के सक्रियतावादियों का उपयोग एक प्राथमिक संसाधन के रूप में किया जायेगा. जो तरीका अपनाया गया वह मूल रूप से उत्तम विकास का तरीका है. इसके माध्यम से यह प्रयास किया जाता था कि लोगों में एक साथ जागरूकता पैदा हो और वे एकजुट होकर 'खुले में शौच से मुक्त' होने की आवश्यकता महसूस कर सकें.

इस प्रक्रिया को शुरू करने के लिये करन्ट कार्नर्ड प्रोग्राम नेटवर्क द्वारा समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता पर प्रशिक्षकों के प्रशिक्षण का आयोजन किया गया. यह प्रशिक्षण स्थानीय सामुदायिक सक्रियतावादियों को प्रदान किया गया. इस प्रशिक्षण को प्राप्त करने वाले सभी सक्रियतावादियों को एक अनुबन्ध दिया जायेगा जिससे वे गैर-सरकारी संगठनों, सरकार और धनदाता संगठनों से प्रति गांव के हिसाब से भुगतान प्राप्त कर सकें जिनमें उनके द्वारा ट्रिगरिंग की गई और वे खुले में शौच से मुक्त घोषित हो गये.

इस तरीके से प्रसार को सुगम बनाने के लिये करन्ट कार्नर्ड प्रोग्राम नेटवर्क ने इस स्तरीय उन सक्रियतावादियों के लिये एक सभा के आयोजन की व्यवस्था की है जिन्होंने सफलतापूर्वक किसी गांव को इस प्रकार ट्रिगर किया कि वह पूर्ण रूप से खुले में शौच से मुक्त हो गया. इन सभाओं में सबसे अधिक सफल रहे सक्रियतावादियों को अपने साथियों के साथ अनुभव बांटने के लिये आमंत्रित किया जाता है. इस व्यवस्था के लिये करन्ट कार्नर्ड प्रोग्राम नेटवर्क के द्वारा सभी सक्रियतावादियों की सूची का डाटाबेस तैयार किया गया है जिन्होंने गांवों में सफलतापूर्वक ट्रिगरिंग की और उन्हें खुले में शौचमुक्त होने का स्तर प्राप्त करने में सहायता की (गैर-सरकारी संगठनों, सरकारों तथा धनदाताओं संगठनों के लिये संभावित सम्पर्कसूत्रों के रूप में).

स्रोत: सामा शहर, करन्ट कार्नर्ड प्रोग्राम नेटवर्क और फार्स शुमारी, जल एवं सैनिटेशन प्रोग्राम, इस्लामाबाद

गुणवत्ता को सुनिश्चित करने के लिये सुझाव:

1. सभी प्रशिक्षकों का मूल्यांकन सावधानी से कीजिये. सभी सुगमकर्ता अच्छे प्रशिक्षक नहीं हो सकते. प्रशिक्षण कार्यशाला में भाग लेने वाले सभी प्रतिभागी अच्छे सुगमकर्ता नहीं हो सकते.
2. वरिष्ठ अधिकारियों से अनुरोध कीजिये कि अपने संभावित प्रशिक्षकों को विशिष्ट गुणवत्ता वाले प्रशिक्षण में प्रतिभाग करने के लिये भेजें.
3. उपयुक्तता, योग्यता, व्यवहार, अभिवृत्ति और प्रशिक्षण के दौरान कार्य-निष्पादन के आधार पर अच्छे प्रशिक्षकों की पहचान करके उनका चयन कीजिये.
4. चयनित हो जाने के बाद प्रशिक्षकों को लचीला होना चाहिये और उन्हें गांवों के चयन और गतिविधियों के अनुक्रम और समय का निर्धारण करने के लिये स्वतंत्र होना चाहिये. यदि आवश्यक हो तो इसमें क्षेत्र भ्रमण की गतिविधियों को आगे-पीछे करना भी सम्मिलित है. उदाहरण के लिये जहां प्रशिक्षक के नियंत्रण से बाहर के किसी कारण से पहली ट्रिगरिंग सफल नहीं हो पाती है या प्रतिभागी पूरी बातों को उस समय तक ठीक से नहीं समझ पाते हैं तो दूसरी ट्रिगरिंग में विलम्ब किया जा सकता है. प्रशिक्षण डिजाइन को बिना परामर्श बाहर से आरोपित नहीं किया जाना चाहिये. विशिष्ट अतिथियों को प्रशिक्षण के बीच में भाषण देने के लिये आमंत्रित करने से बचना चाहिये.
5. प्रशिक्षण जब प्रगति पर हो तो अचानक और बिना किसी पूर्व निर्धारित क्रम के निरीक्षण और जांच की जानी चाहिये.
6. यह सुनिश्चित कीजिये कि प्रशिक्षण प्रदान करने वाले अभिकरण केवल प्रशिक्षण के प्रति ही उत्तरदायी न हो बल्कि ट्रिगरिंग से पहले, ट्रिगरिंग के दौरान, ट्रिगरिंग के बाद अनुवर्ती गतिविधियों में और स्पष्ट रूप से परिभाषित जिले या क्षेत्र के संदर्भ में सभी गतिविधियों के संदर्भ में व्यापक रूप से उत्तरदायी हो. (कुछ मामलों में समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता को पूर्ण समझ लिया जाता है यदि 25-30 गांवों में ट्रिगरिंग सम्पन्न हो जाये और कोई अनुवर्ती कार्रवाई या भ्रमण न हो तो भी). इसमें प्रशिक्षण के लिये सही प्रतिभागियों का चयन सम्मिलित है जिससे ट्रिगरिंग और ट्रिगरिंग के बाद की गतिविधियां प्रभावी हो सकें. उदाहरण के लिये गांवों के मुखिया, स्थानीय औपचारिक और अनौपचारिक नेता, जिससे वे अवधारणा और कार्यविधि को ठीक से समझ लें और उसे बेकार न होने दें.
7. कार्य-निष्पादन का मूल्यांकन कार्यविधि के संदर्भ में परिणामों के आधार पर कीजिये न कि भौतिक उपलब्धियों के आधार पर. इसका अर्थ यह है ट्रिगरिंग के बाद के कार्य-निष्पादन और खुले में शौच से मुक्त स्तर प्राप्त करने के आधार पर मूल्यांकन करना न कि की गई ट्रिगरिंग या आयोजित किये गये प्रशिक्षणों की संख्या के आधार पर. समसामयिक निरीक्षण होने चाहिये और कम से कम हर 6 माह में होने चाहिये. यह उन अधिकारियों के संदर्भ में होने चाहिये जिन्हें प्रशिक्षण प्रदान करने के लिये नियुक्त किया गया है. अच्छे प्रशिक्षण, सुगमीकरण और अनुवर्ती कार्रवाई के संकेतकों में निम्नांकित सम्मिलित हैं:

- घरों में शौचालय निर्माण की त्वरित प्रगति
- ट्रिगर किये गये गांवों की संख्या के सापेक्ष खुले में शौच से मुक्त गांवों की संख्या का उच्च अनुपात
- स्वाभाविक नेताओं का उभर कर सामने आना
- शौचालयों में सुधार, स्वच्छता सीढ़ी में ऊपर चढ़ना
- स्थानीय समुदाय का एकजुट होकर कूड़े-कचरे के प्रबन्धन, जल निकासी, गांव के पर्यावरण की स्वच्छता की ओर अग्रसर होना
- विपणन सम्बन्धी विकल्प

अभियान

बांग्लादेश, भारत, इण्डोनेशिया के कुछ जिलों तथा अन्य स्थानों पर भी गहन अभियान प्रभावी सिद्ध हुए हैं. भारत में कुछ अभियान तो जिलों के स्तर पर चलाये गये हैं जैसे महाराष्ट्र में जालना, हिमाचल में मण्डी और हरियाणा में पानीपत. सामान्यतया पूरे उप-जिले के लिये खुले में शौच से मुक्त स्तर प्राप्त करने पर ध्यान केन्द्रित किया गया है, उदाहरण के लिये यूनियन या उपजिला (बांग्लादेश), तालुका, विकास खण्ड, पंचायत समिति या ग्राम पंचायत (भारत), या केकामाटन (इण्डोनेशिया). इस प्रकार के अभियानों को नीति के स्तर पर सार्थक तथा स्थानीय शासन के नेतृत्व और सहयोग की आवश्यकता होती है.

इन स्थानीय अभियानों के मुख्य अवयव निम्नांकित के संयोजन में निहित हैं:

- प्रतिबद्ध स्थानीय नेतृत्व, राजनीतिक भी और प्रशासनिक भी
- विभिन्न स्तरों पर समर्पित कार्यदल
- संगठनों के अन्दर तथा सम्बन्धित सभी विभागों, एवं संगठनों में एक दल के रूप में काम करने की भावना (सरकार, गैर-सरकारी संगठन इत्यादि)
- स्टाफ, चाहे सरकारी हो या गैर-सरकारी संगठनों का, अभियान में पूर्ण कालिक कार्य करने के लिये समर्पित है
- धार्मिक नेताओं, राजनेताओं, गांव के अधिकारियों तथा अन्य के लिये अभिमुखीकरण और प्रशिक्षण
- बच्चे, परिवर्तन के लिये सक्रिय अभिकर्ता के रूप में
- बैठकों का उपयोग – नियमित और विशेष दोनों प्रकार की – अभियान पर जोर देने के लिये, प्रगति आकलन प्राप्त करने के लिये, अच्छा काम करने वाले व्यक्तियों और समुदायों का सार्वजनिक रूप से सम्मान करने के लिये, समुदायों, स्थानीय नेताओं और स्टाफ के बीच प्रतियोगिता पैदा करने के लिये
- नियमित रिपोर्ट करने की प्रणाली
- खुले में शौच से मुक्त होने का दावा करने वाले हर समुदाय का सख्ती से सत्यापन

- खुले में शौच से मुक्त होने पर उत्सव का आयोजन (आगे देखिये)
- संचार माध्यमों का उपयोग - रेडियो, वीडियो, रेडियो, समाचार पत्र, टेलीविजन

अभियानों के दौरान रिपोर्ट में बढ़ा-चढ़ा कर बातें लिखी जा सकती हैं और झूठे दावे हो सकते हैं, विशेषकर तब जब लक्ष्य निर्धारित हों और लक्ष्य प्राप्त करने पर पुरस्कार की व्यवस्था हो. इससे बचाव करने या इसे न्यूनतम करने के लिये शायद सबसे अच्छा उपाय है दावों के साथ सत्यापन और प्रमाणीकरण करना. दूसरे मानकात्मक और स्वीकृत विशेष दावों के स्वाभाविक नेताओं को यह भूमिका देनी चाहिये. विफल हुए समुदायों की संख्या सत्यापन की गुणवत्ता का सबसे अच्छा संकेतक है. यदि कोई भी गाँव विफल नहीं हुआ तो सत्यापन में जरूर कुछ गड़बड़ी समझी जानी चाहिये.

अभियान - कई संगठनों और कर्ताओं के साथ

बांग्लादेश में हालीशहर उपजिला पहला उपजिला था जिसे खुले में शौच से मुक्त घोषित किया जाना था. प्रशासनिक भूमिका के नेतृत्व में तथा सभी राजनीतिक दलों के समर्थन से गहन अभियान चलाया जा चुका था. अन्य मुख्य कारक थे स्थानीय शासन के साथ मिल कर काम कर रहे गैर-सरकारी संगठन के स्टाफ की प्रतिबद्धता - प्लान बांग्लादेश और विलाही; समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता को समर्पित गैर-सरकारी संगठन; इमामों का प्रशिक्षण और उनके द्वारा अधिकारों से दी गई सलाह; हर स्तर के कार्य दल; विभिन्न संगठनों के स्टाफ के द्वारा गाँवों का निरीक्षण तिथियों पर एक साथ मिल कर भ्रमण; नियमित बैठकों के माध्यम से रिपोर्ट प्राप्त करना (जिससे पीछे रह गये समुदायों को सूचना पढ़ सकता था "अच्छा तो आप अभी भी गू खा रहे हैं"); बच्चों के मंच और सक्रिय भागीदारी; खुले में शौच से मुक्त होने के स्तर के सत्यापन के लिये कई निरीक्षण दल ("जो लोग आमंत्रित नहीं हैं वे भी आ सकते हैं"); और जिलाधीश के द्वारा प्रमाणीकरण. जनवरी 2006 में उपजिले के खुले में शौच से मुक्त हो जाने के दर्जे को प्राप्त कर लेने के उपलक्ष्य में आयोजित उत्सव में भाग लेने के लिये लगभग 10000 लोग आये. लोग उस उत्सव को आज भी याद करते हैं और सोचते हैं कि वह कितना अच्छा समय था. अभियान का ध्यान अब शौचालयों में सुधार की ओर चला गया है और समुदाय निश्चित रूप से स्वच्छता की सीढ़ी पर ऊपर की ओर बढ़ रहा है. अब ध्यान समुदायों की स्वच्छता तथा परिवारों को व्यवस्थाकार स्वच्छता की शिक्षा देने पर है.

भारत के पश्चिम बंगाल राज्य की बल्दाकी नगरपालिका के आजादी निवासगण कॉलोनी के खुले में शौच से मुक्त समुदाय द्वारा गर्व के साथ अपने क्षेत्र के स्वच्छता स्तर की घोषणा की गई. इससे नगर की कई गरीब बस्तियों पर प्रभाव पड़ा कि वे भी खुले में शौच से मुक्त होने के लिये प्रयास करें.

गर्व और प्रतियोगिता को प्रोत्साहन

समुदायों, वार्डों, अन्य प्रशासनिक इकाइयों, उपजिलों एवं जिलों के बीच गर्व और प्रतियोगिता को प्रोत्साहित किया जा सकता है.

यह दूसरी ट्रिगरिंग की तरह हो सकता है. इसे करने के कुछ तरीके यह हैं:

- बहुत सफल समुदायों के गाँवों के भ्रमण को प्रोत्साहित कीजिये. इन्हें बाहरी व्यक्तियों के लिये प्रशिक्षण और सीखने की प्रयोगशालाओं के रूप में प्रयोग में लाइये. आसपास के गाँवों के लोगों के द्वारा भी बाहरी लोगों को आते हुए देखा जायेगा और फिर वे भी अपनी आँखों से देखने के लिये आयेंगे.
- सफलता और प्रतिबद्ध स्वाभाविक नेताओं की पहचान कीजिये जो कि अन्य समुदायों में समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता को ट्रिगर कर सकें और सहयोग कर सकें. ऐसे सरकारी अथवा गैर-सरकारी संगठनों का पता लगाइये जो कि उन्हें यात्रा व्यय, भत्तों, किराए आदि से सम्बन्धित व्यवस्थात्मक सहायता कर सकें. यह सब करते समय समुदायों में सहज ही फैल रही आवश्यकता और बढ़ रहे जोश को कम न होने की गलती मत कीजिये.
- समुदायों और प्रशासनिक इकाइयों में प्रगति अथवा प्राप्त करने के लिये बैठकों का उपयोग कीजिये, प्रतियोगिता को प्रोत्साहित कीजिये और प्रतियोगियों से उनकी योजनाओं और निर्धारित लक्ष्यों के विषय में जानकारी लीजिये.
- इन बैठकों में सबसे खराब काम करने वालों से पूछिये कि क्या वे उन लोगों से सहयोग लेना चाहेंगे जो बेहतर काम कर रहे हैं. गर्व की भावना के कारण बहुधा यह लोग मना करेंगे परन्तु यह उन्हें बेहतर करने के लिये उकसायेगा अथवा, अनुभवों और विधियों के विषय में विचारों के आदान-प्रदान को प्रोत्साहित कीजिये.

विजेताओं (चैम्पियनों) से फर्क पड़ता है

पश्चिम सुमात्रा के मुआरा एनिम के उपजिले लैम्बाक के स्वास्थ्य केन्द्र की प्रमुख डॉ. पुरनिमा अगस्तीन ने स्थानीय प्रयास का नेतृत्व किया जिससे पूरा उपजिला खुले में शौच से मुक्त हो गया. डॉ. अगस्तीन, जो कि स्वयं एक गाय चिकित्सक हैं, ने समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के एक कोर ग्रुप का गठन किया और दृढ़ता सहित अपने पूरे स्टाफ को प्रशिक्षित किया. इस दल ने ग्राम समुदाय द्वारा गठित समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता दलों को प्रशिक्षित किया तथा 'स्वास्थ्य सम्मान' के लिये सहयोग प्रदान किया. डॉ. अगस्तीन ने ट्रिगरिंग और ट्रिगरिंग के बाद की सभी गतिविधियों में गाँवों की सभी महिलाओं को सम्मिलित कर लिया. उनके इन प्रयासों के फलस्वरूप ही उपजिले के 18 में से 16 गाँव खुले में शौच से पूर्ण रूप से मुक्त हो गये और शेष दो गाँव भी इस स्तर को प्राप्त करने के बहुत करीब आ चुके थे. डॉ. अगस्तीन को उनके इन प्रयासों के लिये इन्डोनेशिया के राष्ट्रपति के द्वारा सम्मानित किया गया और उनको अच्छे पुस्केसमास (उपजिले के स्वास्थ्य केन्द्र) के मुखिया के रूप में उनका अभिनन्दन किया गया.

- संचार माध्यमों को सूचित कीजिये - स्थानीय रेडियो, समाचार पत्र, टेलीविजन - और उन्हें अनुभवों से सम्बन्धित कथाएं उपलब्ध कराइये. उन सभी बड़ी बैठकों में उन्हें आमंत्रित कीजिये जिनमें समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता पर प्रमुख रूप से चर्चायें होती हैं.
- प्रतिष्ठित एवं प्रतिभावान प्राप्त करिये, राजनेताओं, गैर-सरकारी संगठनों के स्टाफ, निजी क्षेत्र के लोग, व्यावसायिक एसोसिएशन्स के सदस्य, और अन्य क्षेत्रों के चैम्पियनों की पहचान कीजिये और उनके साथ मिल कर काम करने के लिये प्रयासशील रहिये.
- खुले में शौच से मुक्त घोषित करते समय उत्सव का आयोजन कीजिये जिसमें स्वाभाविक नेताओं, समुदाय के उच्च स्तरीय, सामुदायिक अभियन्ताओं और समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के संवाहकों का सम्मान कीजिये.

एक बकरी के लिये प्रतियोगिता

पूर्वी जावा के बोजोनेगोरो जिले के गाँव सुमबेरजाटिरेन के मुखिया ने एक पुरस्कार की घोषणा की और गाँव के पुरुषों के बीच खुले में शौच बन्द करने के लिये एक बकरी की प्रतियोगिता शुरू कर दी. उन्होंने सबसे पहले खुले में शौच से मुक्त होने वाले पुरुष को एक बकरी इनाम में देने की घोषणा कर दी. यह पुरस्कार सम्मान का प्रतीक था. बकरी इनाम में देने की घोषणा ने प्रतियोगिता को बहुत रोचक बना दिया.

स्रोत: चार्ली हाइलाडोले, डब्लू एस पी, ई एस पी, इन्डोनेशिया

प्लान बांग्लादेश ने समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की ट्रिगरिंग के बाद की अनुवर्ती बैठक में स्वच्छता की निर्माण सामग्री के स्थानीय विक्रेताओं को आमंत्रित किया. समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की ट्रिगरिंग के बाद जब शौचालयों की निर्माण सामग्री की मांग बढ़ती है तो उपभोक्ताओं व छोटे स्तर उत्पादकों के बीच सम्पर्क सम्बन्ध स्थापित करना महत्त्वपूर्ण हो जाता है.

शौचालय निर्माण की सामग्री की आपूर्ति और उपलब्धता को बढ़ावा दीजिये (अध्याय 4 भी देखिये)

समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता से बहुत तेजी से शौचालय निर्माण सामग्री की मांग पैदा हो जाती है. बहुत से लोग एक गड्ढे वाले साधारण शौचालय बना लेते हैं और प्लास्टिक, टिन तथा अन्य सामग्री का उपयोग उनकी संरचना बनाने के लिये कर लेते हैं. अन्य लोग उच्चतर स्तर के और अधिक टिकाऊ शौचालय की इच्छा कर सकते हैं. साथ ही जो लोग पहले साधारण शौचालय बनाते हैं वे भी सुधरे शौचालय को निर्मित करना चाह सकते हैं और स्वच्छता की सीढ़ी पर ऊपर चढ़ने के लिये प्रयासरत रहते हैं. जब ऐसा होता है, विशेषकर जब समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता का तेजी से विस्तार होने लगता है, तब सामग्री की आपूर्ति बहुधा मांग से बहुत पीछे रह जाती है.

आपूर्ति को बढ़ावा देने और उपलब्धता बढ़ाने के लिये कई काम किये जा सकते हैं. इनमें से कुछ इस प्रकार हैं:

- उद्यमियों को प्रोत्साहित कीजिये कि वे थोक में आपूर्ति के स्रोतों का पता लगायें जिससे सामग्री को थोक में प्राप्त किया जा सके और स्थानीय स्तर पर बेचा जा सके. उद्यमियों को प्रोत्साहित कीजिये वे थोक में सामग्री प्राप्त कर स्थानीय स्तर पर उपलब्ध करायें.
- समुदाय की बैठकों में व्यापारियों को आमंत्रित कीजिये.
- उन समूहों के साथ सहयोग कीजिये जो थोक में सामग्री का क्रय करके समुदाय को सस्ते दामों पर बेचते हैं (उदाहरण के लिये पारिवारिक सफाई डीलरी कार्ड - कॉलम देखें).

रूरल सैनिटरी मार्ट, हरियाणा के पानीपत जिले की अभिनव पहल

यह जिला अपेक्षाकृत रूप से अधिक समृद्ध है. समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता का विस्तार इस जिले में बहुत तेजी से हुआ जिसके कारण स्वच्छता सम्बन्धी निर्माण सामग्री और राजमिस्त्रियों की मांग बहुत बढ़ गई. 10-20 व्यक्तियों से मिलकर बने 5 स्वयं सहायता समूहों को व्यावसायिक बीज धनराशि तथा किफायती रोलिंग पूंजी उपलब्ध करा दी गई (रूरल सैनिटरी मार्ट नाम से) जिससे पैन तथा अन्य सामग्री निर्माताओं से थोक में क्रय करके लाई जा सके. गांव की जल एवं स्वच्छता समिति द्वारा गांव के लिये पूरी सामग्री यहां से क्रय कर ली जाती है और गांव पहुंचा दी जाती है. इस व्यवस्था के कारण सामग्री के मूल्य में काफी कमी आ गई है और मार्ट को भी कुछ साधारण सा मुनाफा भी हो जाता है. मार्ट के द्वारा राजमिस्त्रियों के साथ मिल कर शौचालयों का निर्माण भी कराया जा रहा है जिनमें से कई तो काफी कम लागत के शौचालय हैं.

स्रोत: डॉ. अमित अग्रवाल, अतिरिक्त उपायुक्त, पानीपत

- स्थानीय उद्यमियों, सामुदायिक संगठनों, युवा समूहों, स्वाभाविक नेताओं तथा अन्य को मिल, सस्ती जैसी स्वच्छता सामग्री का निर्माण करने के लिये प्रोत्साहित कीजिये (यदि उपयुक्त हो तो).
- राजमिस्त्रियों और गांव के अभियन्ताओं को प्रशिक्षित कीजिये और ठेकेदार डीलरों एवं प्लास्टिक प्रोड्यूसर के आपूर्तिकर्ताओं से उनका सम्पर्क सम्बन्ध स्थापित करवा दीजिये.(अतिरिक्त पेज)

अनुभव से सीखिये

यही बात है सतत सीखने, अभिनव पहल करने और परिवर्तन करने की. सुगमकर्ता के रूप में किये गये कार्य और समुदायों की प्रतिक्रियाओं के अनुभवों की समीक्षा कीजिये और उन पर पुनर्विचार कीजिये. यह विचार मन्थन स्वाभाविक नेताओं, समुदायों के सदस्यों तथा अन्य के साथ मिल कर कीजिये.

नई पहल वाले अन्य संगठनों, क्षेत्रों और देशों से सीखिये. भविष्य की कार्यविधि को बेहतर बनाने के लिये विभिन्न अनुभवों से निष्कर्ष निकालिये. जहां भी सम्भव हो सीखी गई बातों को समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के अन्य समुदायों और क्षेत्रों में प्रसार और विस्तार के लिये उपयोग में लाइये. सफल समुदायों के अनुभवों को सीखने का आधार बनाइये. उन स्थानों के अनुभवों से भी सीखिये जहां समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की शुरुआत ही नहीं हो सकी. यदि आपके लिये सम्भव हो तो अपने अनुभवों को व्यापक रूप से प्रकाशित करके अपने कार्य के प्रभाव का दायरा बढ़ाइये.

समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के पार

यह सिद्ध हो गया है कि समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की प्रक्रियाएं, समुदाय आधारित अन्य पहल के लिये एक मजबूत आधार प्रदान करती हैं. खुले में शौच से मुक्ति पाना स्वच्छता सीढ़ी में ऊपर की ओर प्रगति के लिये एक उत्कृष्ट आधार है जिसके कारण स्वास्थ्यकर व्यवहार में परिवर्तन आ जाता है और एक स्वस्थ पर्यावरण सृजित हो जाता है और आजीविका के लिये आधार मिल जाता है.

स्वच्छता सीढ़ी को चार्ट में दर्शाया गया है. खुले में शौच से मुक्त होने का स्तर प्राप्त करने के बाद आने वाली गतिविधियों में सम्मिलित हैं हाथ धोने की व्यवस्था, वायु से अवरोधित रहने वाले ढंके हुए शौचालय, सेप्टिक टैंक मॉडल, कम्पोस्टिंग शौचालय, स्नानघर, जल भण्डारण और इसी प्रकार के कई सुधारों को प्रोत्साहित करना.

जब गांव के द्वारा खुले में शौच से मुक्त स्तर पा लेने के बाद समुदाय तथा परिवारों के स्वास्थ्यकर व्यवहार में परिवर्तन हो जाता है तब धीरे-धीरे शौचालयों की गुणवत्ता में सुधार की ओर रुझान दिखाई देने लगता है. ट्रिगरिंग के बाद प्रारम्भ में बनाये गये कम लागत के एक गड्ढे वाले शौचालयों की गुणवत्ता सुधारने के लिये निवेश करने का अतिरिक्त परिवारों को मिल जाता है. परिणामस्वरूप स्वच्छता की निर्माण सामग्री की मांग में वृद्धि इसको पहले स्थानीय समुदाय के स्तर पर अनुभव की जाती है. ऊपर चित्र में नोम पेन्ह के पास काम्पोंग स्पू के एक गांव के एक स्वयंसेवक परिवार को दिखाया गया है जो कि वर्षा जल हार्वेस्टिंग के लिये सीमेंट के जार बनाते थे. उन्हें केवल अपने व्यवसाय में विविधता लाने की आवश्यकता थी जिससे वे शौचालयों के लिये पात्र, पैन और रिंग प्राप्त कर सकें और खुले में शौच से मुक्त होने के कारण स्वच्छता की निर्माण सामग्री की बढ़ती हुई मांग को पूरा कर सकें. परिवार की आय स्रोत पुनः बढ़ गई और इससे उनकी खुशी का ठिकाना न रहा.

इण्डोनेशिया, भारत और तन्जानिया में सम्पूर्ण स्वच्छता और स्वच्छता विपणन परियोजना

इस परियोजना को गेट्स फाउन्डेशन से सहायता प्राप्त हुई है. यह इण्डोनेशिया, भारत और तन्जानिया में चल रहा है. इस परियोजना के तीन जुड़े हुए अवयवों में समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता भी एक अवयव है. अन्य दो अवयव हैं स्वच्छता सामग्री विपणन और उपयुक्त वातावरण सृजन. समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता और स्वच्छता सामग्री के विपणन को परस्पर एक दूसरे को मजबूत करने वाला माना जाता है और विस्तृत रूप से फैल रहे स्वच्छता सम्बन्धी और स्वास्थ्यकर व्यवहार को बनाये रखने तथा सम्पोषित करने के लिये आवश्यक समझा जाता है. स्वच्छता सामग्री विपणन खुले में शौच से मुक्त हो गये गांवों में सृजित मांग को और आगे ले जाता है तथा स्थानीय उद्यमियों के विकास को बढ़ावा देता है तथा बाहरी उद्यमियों के साथ सम्पर्क सम्बन्ध को मजबूत करता है. इससे बाजार शोध और उत्पाद तथा बाजारों के विकास को बल मिलता है. उपयुक्त वातावरण सृजन का सम्बन्ध स्वच्छता से जुड़ी संस्थाओं से है जिसका सम्मिलित है स्थानीय निकायों के ढांचे में सुधार और राष्ट्रीय नीतियों तथा रणनीतियों में वांछित परिवर्तन जिससे स्थानीय स्वच्छता बाजारों में मांग और आपूर्ति की शक्तियों का बिना रुकावट के विकास हो सके और बाजार पर प्रभाव डालने के प्रयास के दौरान प्राप्त अनुभवों से उपयुक्त सीख ली जा सके.

स्रोत: डॉ. नीलांजना मुखर्जी, कन्सल्टेन्ट, डब्ल्यू एस पी - ईएपी, जकार्ता, इण्डोनेशिया

समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता एकजुटता से फसल संरक्षण तटबन्ध का निर्माण: एक समुदाय संचालित पहल

बांग्लादेश के किशोरगंज जिले के, जहां हर वर्ष बहुत बड़े क्षेत्र की धान की फसल बाढ़ के कारण नष्ट हो जाती है, कई समुदायों के द्वारा समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता का सफलतापूर्वक क्रियान्वयन किया गया. जो समुदाय पूर्ण रूप से खुले में शौच से मुक्त हो गये थे उनमें बहुत मजबूत सामाजिक एकजुटता विकसित हो गई थी तथा आपस में सम्पर्क सूत्र भी स्थापित हो गये थे. कम-से-कम 17 गांवों के स्वाभाविक नेताओं को 'वेरा' नामक संस्था के द्वारा फसल संरक्षण के विषय में प्रोत्साहित किया गया. स्वाभाविक नेताओं के एजाज में पूर्व के तथा वर्तमान के यूनियन परिषद अध्यक्षों के द्वारा समुदाय के द्वारा एकजुट होकर की जाने वाली पहल के लिये सहयोग करने का आश्वासन दिया गया. 12 गांवों के ग्रामवासी एकजुट हो गये और उन्होंने अपने-अपने इलाकों के लिये तटबन्ध संरक्षण समितियां गठित कर लीं जिससे उनके गांवों से होकर गुजरते हुए 5 कि.मी. लम्बे तटबन्ध की मरम्मत की जा सके. समुदायों ने धन इकट्ठा किया. जिनके पास बड़ी जमीनें थीं उन्होंने दान के रूप में धनराशि दी. दो सप्ताहों में ही 2270 डॉलर इकट्ठा हो गये. समुदायों के द्वारा उपकरणों की व्यवस्था की गई. काटने और भोजन के रूप में प्रयोग किये जाने के लिये जलावन उपलब्ध कराये गये. गरीबों और भूमिहीनों के द्वारा श्रम के माध्यम से योगदान किया गया. एक उत्सव का सा माहौल था. अंतिम रूप से समापन करने का काम वेरा संस्था के काम के बदले अनाज कार्यक्रम के अन्तर्गत किया गया. यूनियन परिषद के चेयरमैन हबीबुर रहमान के अनुसार समुदाय के द्वारा एकजुट होकर की गई इस पहल ने सबको एक दूसरे के बहुत नजदीक ला दिया और समुदायों के बीच एक ऐसा मजबूत भाईचारा और सौहार्द सृजित कर दिया जो पहले कभी नहीं था.

कृषि स्वयंसेवी आलाउद्दीन ने कहा, "हमें याद नहीं है कि हमने पहले कभी भी चावल की इतनी अधिक फसल प्राप्त की होगी जितनी तटबन्ध की मरम्मत के बाद पिछले वर्ष हमें मिली. इसने यूनियन परिषद मेम्बर के दो समूहों के बीच चलने वाली प्रतिद्वन्द्विता को समाप्त कर दिया, भाइयों को मजबूत कर दिया और सम्पन्न लोगों के द्वारा किये जाने वाले शोषण का न्यूनीकरण कर दिया." कुछ ग्रामवासियों ने टिप्पणी की कि गांव के बहुत गरीब श्रमिक लोगों को काम की तलाश में शहर नहीं जाना पड़ेगा. केवल एक वर्ष की अच्छी फसल के कारण परिवारों के स्तर पर खाद्य सुरक्षा की स्थिति में बहुत सुधार हुआ है.

स्रोत: मोहम्मद कामरुज्जमां, प्रोजेक्ट ऑफीसर, एडुकेशन प्रोग्राम, वेरा, बांग्लादेश, ढाका

समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता से खाद्य सुरक्षा की ओर

इथियोपिया के आवासिया के पास स्थित उत्तीदाय बोकोल गांव में अक्टूबर 2006 में समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की ट्रिगरिंग की गई. इसके बाद समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता का प्रसार काफी धीरे के आयोजनों के माध्यम से होने लगा जहां जिन परिवारों ने अपने इलाके को स्वच्छ बना लिया था वह दूसरों को दिखाते और बताते कि उन्होंने यह कैसे किया. पहले चार घरों के सदस्यों ने अपने आप शौचालयों के लिये गड्ढे खोदे परन्तु शेष 26 परिवारों के लिये उन्होंने समुदाय द्वारा एकजुट होकर काम करने की देबो नामक पारम्परिक विधि को पुनर्जीवित कर लिया जिसे वे काफी लम्बे समय से भूल गये थे. ट्रिगरिंग के कुछ माह बाद ही गांव खुले में शौच से मुक्त घोषित हो गया. उसका एसोर बागान "अरी" (स्थानीय भाषा में अरी का मतलब साफ बात) से मुक्त हो गया. इस उपलब्धि को पाने पर लोगों को यह समझ में आया कि समूह बना कर काम करने से वे ज्यादा अच्छे परिणाम प्राप्त कर सकते हैं.

सहभागी ग्रामीण विश्लेषण के दौरान महिलाओं को समझ में आ गया कि देबो प्रणाली का प्रयोग करके वे गांव में ऋतु विशेष में होने वाली भूख की समस्या को समाप्त कर सकते हैं. उन्होंने अपने एसोर बागान के पौधों के लिये खाद इकट्ठा करनी शुरू कर दी. एसोर को भोजन के लिये तैयार करना एक समय-साध्य काम है परन्तु देबो का प्रयोग करके वे यह सुनिश्चित कर सकते थे कि खाद्य सामग्री की कमी के समय कोई भी परिवार भूखा न रहने पाये.

उन्होंने पास के एक गांव, आगा हाइयो, में समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की ट्रिगरिंग करने का प्रस्ताव भी किया जहां 70 परिवार रहते थे.

उत्तीदाय बोकोल के समुदाय के द्वारा यह रिपोर्ट सोलोमन केबेडे और बेयता मैकोनेन फिसड्रोम को इथियोपिया में जुलाई 2007 में आयोजित सहभागी समीक्षा बैठक (आरटीआई) के दौरान दी गई.

भारत में समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की शुरुआत होने के बाद स्वच्छता व्यवस्था बढ़ी. फाइबरग्लास, सीट वाले शौचालय के पैन पूरे भारत के किसी क्षेत्र के कारीगरों के द्वारा डिजाइन और निर्मित किये गये. इस प्रकार के कम लागत पैन (रु. 150-200) के बहुत इथियोपिया और अफ्रीका के अन्य देशों को भेजे जा रहे हैं.

बेयता मैकोनेन, इथियोपिया के एक समुदाय के द्वारा एक सरल हाथ धोने के अभिनव ढंग का विकास किया गया. घरेलू प्लास्टिक के डिब्बे का प्रयोग इस तरह किया गया जिससे शौच के बाद साबुन से हाथ धोये जा सकें.

स्वाभाविक अभियान का बीजारोपण और सहयोग

बहुत अधिक अच्छे परिणाम प्राप्त किये जा सकते हैं यदि समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता अपने आप फैलने वाले अभियान का स्वरूप धारण कर ले या जिसके लिये बाहर से बहुत कम सहयोग की आवश्यकता हो. जिस आदर्श की स्थिति बनाना चाहिये वह तो यह होगा कि यह समुदाय संचालित प्रसार और विस्तार प्रक्रिया बन जाये. इसके लिये देखिये कि क्या आप स्वाभाविक नेताओं को प्रोत्साहित कर सकते हैं तथा उन्हें सक्षम बना सकते हैं जिससे वे सूत्रधारों के रूप में आगे चलें और अन्य समुदायों में ट्रिगरिंग कर सकें तथा लगातार प्रोत्साहन और सहयोग प्रदान कर सकें.

यही अवसर है समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के स्थानीय स्तर पर कम लागत के साथ विस्तार और प्रसार का. जहां सभी अभिकरण, सरकारी विभाग, राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय गैर-सरकारी संगठन अपने स्वच्छता कार्यक्रमों में समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता को एकीकृत कर लेते हैं और स्थानीय सशक्तिकरण के मूल सिद्धान्तों के साथ समझौता नहीं करते हैं, या इसका प्रयोग व्यापक आजीविका योजनाओं या स्वास्थ्य कार्यक्रमों के लिये एक शुरुआत के रूप में करते हैं उन्हें यह याद रखना चाहिये कि सामुदायिक परामर्शदाता और सूत्रधार सबसे अधिक महत्वपूर्ण संसाधन सिद्ध होंगे.

स्थानीय लोग ही सबसे अच्छे सूत्रधार सिद्ध होते हैं जिनके द्वारा प्रत्यक्ष रूप से अपने ही समुदाय में शुरू काम करने के अनुभव से समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता को सीखा गया है और जिन्होंने "सिखा" देने की आदत विकसित नहीं की है. बार-बार ऐसे अनुभव सामने आये हैं कि प्रेरित और जोश से भरे स्वाभाविक नेताओं के द्वारा पास के गांवों में जाकर सफलतापूर्वक ट्रिगरिंग की गई है. परन्तु यह अनुभव यहीं तक सीमित रह गये.

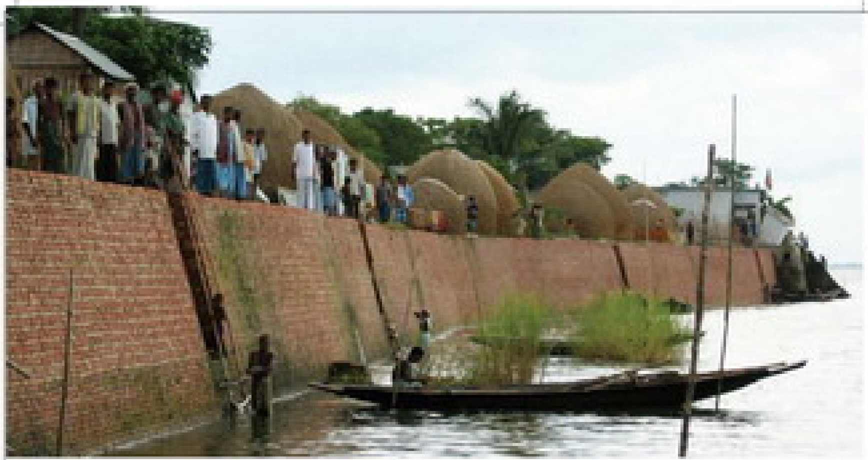

खुले में शौच समाप्त करने से खाद्य सुरक्षा तक

बांग्लादेश के नीलफामारी जिले के गरीबतम गांवों में से एक जलपारी, ऋतु विशेष में प्रतिवर्ष आने वाले खाद्य संकट - मोंगा - के प्रकोप से पीड़ित था जिसके लिये यह क्षेत्र कुख्यात है. मोंगा के दौरान गरीबतम परिवार भूख से मरने लगते थे, इसीलिये वे अक्सर पलायन कर जाते थे या सरकारी खाद्य वितरण की बाट जोहने की कोशिश में जुटे रहते थे. मोंगा से कुछ समय पहले अक्तूबर 2004 में, गांव में समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की ट्रिगरिंग की गई. खुले में शौच से मुक्त होने के उत्साह और आराम के बढ़ने के साथ समुदाय की एकजुटता में भी वृद्धि हो गई. समुदाय के सदस्य एकजुट होकर अपनी समस्याओं का समाधान अपने स्तर से ही कर लेने के प्रति प्रतिबद्ध हो गये. बेहतर माली हालत वाले अब पहले की अपेक्षा अधिक उदार हो गये और गरीबों तथा भूमिहीनों के प्रति उनकी चिंता बढ़ गई तथा वे उन्हें अधिक सहायता और सहयोग देने लगे. 'मन-आलू', एक पारम्परिक फसल जिसे लोग लगभग भूल ही चुके थे, की पहचान की गई और पाया गया कि इससे खाद्य समस्या का हल हो सकता है. सभी परिवारों ने इसे अपने घरों के आसपास और घरों की कतारों में उगाने का निर्णय किया. एक सप्ताह के अन्दर ही लगभग सभी परिवारों के द्वारा 4000 से अधिक गड्ढे खोद डाले गये और उन अधिकतर की तरह मन-आलू के बीज बो दिये गये. भूमिहीन परिवारों ने अपने घरों में 4-5 पौधे लगाये और 8 माह के बाद हर पौधे से उन्हें 3-4 किलो आलू मिला. जिनके पास अपने खेत थे उन्होंने अपने ओसारा और अन्य पौधों की कतारों के बीच की जगहों में गरीबों को मन-आलू बोने दिया. अगली मोंगा ऋतु बिल्कुल भिन्न हो गई और बड़ी मात्रा में मन-आलू की उपज हुई. कुछ खाया गया और बाजार में बेचा भी गया. आज 2007 में जलपारी केवल 25 टन से अधिक मन आलू ही उत्पादित नहीं करता बल्कि 10 मीट्रिक टन बीज की आपूर्ति भी अन्य गांवों को करता है और मोंगा का संकट मोटे तौर पर समाप्त हो गया.

ऊपर: खुले में शौच से मुक्त होने का दावा प्राप्त कर लेने के तुरन्त बाद बांग्लादेश चकसार यूनियन, कोटचांदपुर उपजिले के सिराजपुर और संग्रामपुर के समुदायों को समझ हो गया कि इलाके में अत्यधिक जलस्तर के दोषों को बाढ़ से दूर होने वाली सुरक्षा के प्रयास कितना अधिक आवश्यक है. समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के दौरान तथा उसके बाद विकसित हुई एकजुटता की शक्ति को जानते हुए इलाके के चारों ओर की दीवार को बनाने वाले लोगों ने अपने स्थानीय ज्ञान का प्रयोग करते हुए ईंटों की दीवारों का निर्माण कर लिया. यह दीवार अभी तक सुरक्षित है और अधिक दोनों के लगाने की आवश्यकता नहीं पड़ी. इस दीवार को बनाने में सीमेंट का प्रयोग बिल्कुल नहीं किया गया. अधिकारियों आश्चर्य कि इस प्रकार की एक विश्वसनीय सस्ती दीवार की लागत केवल बांग्लादेश द्वारा बनाई जा रही दीवार की लागत के सामने कितनी कम है.

ऊपर: करतोया यूनियन, कालिगंज जिला, बांग्लादेश में जहां खुले में शौच से मुक्त हो गये समुदाय एक साथ जुड़ गये और उन्होंने फसल को सुरक्षित करने के लिये अपने इलाके का निर्माण किया जिससे उनकी धान की तैयार फसल को इलाके में की वार्षिक बाढ़ की विभीषिका से बचाया जा सके. छायांकन: कमालकार, केयर बांग्लादेश

बायें और ऊपर: बांग्लादेश के नीलफामारी जिले के जलपारी गांव के स्वाभाविक नेता 'मन आलू' की फसल काट कर दिखाते हुए जिसे उन्होंने बड़ी मात्रा में बोया था जिससे वे हर वर्ष आने वाले 'मोंगा' ऋतु विशेष की भुखमरी और खाद्य असुरक्षा का मुकाबला कर सकें. समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की गांव में हुई सफलता के कारण ही यह सफल हो सकी. विभिन्न प्रकार के मन आलू जो कि इस क्षेत्र में बहुत अच्छी फसल देते हैं के कारण ही यहां बहुत बड़ा अन्तर पड़ा जहां समुदाय के सभी सदस्य गांव से भुखमरी को पूरी तरह समाप्त कर देना चाहते थे.

ऊपर और बायें: भारत के पश्चिम बंगाल राज्य में कल्याणी की विश्वभारत कॉलोनी नगरपालिका के समुदाय की महिलाओं ने निर्णय किया कि अपनी कॉलोनी के सभी 48 हैण्ड पम्पों के चबूतरों को पक्का बना देंगे और सीमेंट के चौकोर नालियों का ऐसे निकासी मार्ग बनायें, झुग्गी-बस्ती, और गन्दगी का जमाव रोके के पानी के स्रोत के चारों ओर न होने पाये. नगरपालिका के द्वारा उन्हें कुछ ईंट-गारा उपलब्ध करा दिये गये और शेष सभी व्यवस्थायें उन्होंने स्वयं की. यह सब खुले में शौच से मुक्त होने पर ही संभव हुआ. यह उनकी पहली सफलता थी जिससे खुले में शौच से मुक्त होने का गौरव प्राप्त हुआ. एक वर्ष के अन्दर ही नगरपालिका इलाके की सभी 32 मलिन बस्तियां खुले में शौच से मुक्त घोषित हो गईं.

समुदाय संचालित नाटक के माध्यम से प्रचार

वेवार की विलेज परियोजना के अन्तर्गत उत्तर पश्चिम बांग्लादेश में खुले में शौच से मुक्त पुराने की सहायता की जाती है कि वो नाटक के माध्यम से पड़ोस में समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता का प्रचार और प्रसार करें. स्थानीय सुगमकर्ता पहले एक पुरे में समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता को ट्रिगर करने पर ध्यान केंद्रित करते हैं. जब कुछ पाड़ाओं में यह खुले में शौच से मुक्त स्तर प्राप्त कर लेता है तब एक सभा का आयोजन किया जाता है जिसमें अन्य पुराें के लोगों को बुलाया जाता है. समय तय कर रखा जाता है. विलेज के द्वारा व्यवस्था सम्बन्धी सहयोग प्रदान किया जाता है जैसे जैनरेटर और ध्वनि प्रसारण प्रणाली, लेकिन पूरे कार्यक्रम का आयोजन और संचालन पुराें तथा उनके स्वाभाविक नेताओं के द्वारा ही किया जाता है (इनमें से अधिकतर गरीब वर्ग के होते हैं). यही लोग मंच पर खड़े होते हैं और दर्शकों को बताते हैं कि उन्होंने किस प्रकार खुले में शौच से मुक्त होने का स्तर प्राप्त किया. वेवार के सुगमकर्ताओं के द्वारा प्रक्रिया के संदर्भ में किसी प्रकार के निर्देश नहीं दिये जाते हैं. उनके द्वारा समुदाय के सदस्यों को कार्यक्रम को अपने ढंग से तैयार करने और संचालित करने के लिये प्रेरित मात्र किया जाता है. समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता द्वारा सृजित एकजुटता को इस प्रकार के कार्यक्रम और सुदृढ़ कर देते हैं तथा स्वाभाविक नेता एवं अन्य लोग अपनी उपलब्धि पर गर्व करते हैं और उसकी खुशी मनाते हैं.

ग्रामीण बांग्लादेश के लगभग सभी समुदायों में कोई न कोई स्वाभाविक कवि होता है जो कि समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता पर गीतों की रचना कर सकता है और कोई न कोई गायक भी होता है जो कि इसे मंच से गाकर सुना सकता है. इसी प्रकार ऐसे अन्य लोग हैं जो कि स्वच्छता पर जल्दी से नाटक लिख सकते हैं जिसे स्वाभाविक नेताओं, किशोरों और किशोरियों के द्वारा मंच पर अभिनीत किया जा सकता है. आमतौर पर नाटकों में समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की प्रक्रिया के सामने आने वाली चुनौतियों का हास्य के माध्यम से प्रस्तुतीकरण किया जाता है. एक समुदाय द्वारा नाटक में एक खास घटना को प्रस्तुत किया गया. यह एक ऐसे समृद्ध व्यक्ति की कथा थी जो कि शौचालय नहीं बनाना चाहता था. नाटक में दिखाया गया कि उस अमीर आदमी की कन्या के विवाह के लिये एक मैचमेकर वर का प्रस्ताव लेकर आया और अपने साथ वर पक्ष की ओर से कुछ अतिथियों को भी लाया. एक अतिथि को तत्काल शौचालय जाने की ज़रूरत महसूस हुई. लेकिन अमीर आदमी के पास शौचालय था ही नहीं. इस लज्जाजनक स्थिति को हास्य के माध्यम से प्रस्तुत किया गया जिससे दर्शक हंसते-हंसते लोट-पोट हो गये. इस लज्जाजनक स्थिति के बाद अमीर आदमी ने स्वाभाविक नेता को बुलाया और शौचालय बनाने के लिये उसकी सहायता करने को कहा.

इस अवसरों से जुड़ा मनोरंजन और उत्सव पड़ोसियों को प्रेरित करता है कि वे भी समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की प्रक्रिया अपने लिये प्रारम्भ करें.

स्रोत: अनवारुल हक, टीम लीडर, एसडीपी, वेवार, बांग्लादेश

प्रचार सहज भी हो सकता है परन्तु अनुभव से यह पता चलता है कि सहयोग और प्रोत्साहन की आवश्यकता होती है. गैर-सरकारी संगठनों के लिये सहयोग और सहायता प्रदान करने के माध्यम से समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता का प्रचार और विस्तार करने के लिये बहुत बड़ा अवसर है.

केन्या के किलिफि जिले में सहज प्रचार

समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता को सफलतापूर्वक जारीबुनी गांव में प्लान इन्टरनेशनल की टीम के द्वारा ट्रिगर किया गया. अनुवर्ती भ्रमण के दौरान स्थानीय सुविधा के द्वारा की गई घोषणा से वे सभी आश्चर्यचकित रह गये. उन्होंने बताया कि गांव की समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता को दिशा देने वाली टीम उपजिले के सभी गांवों में समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता का प्रचार और प्रसार करने जा रही है और इसके लिये भ्रमण की तिथियां निर्धारित की जा चुकी हैं. इस अभिप्रेरणा का एक कारण यह था कि अन्य गांवों के कारण जारीबुनी गांव का जल प्रदूषित हो रहा था.

स्रोत: फिलुमाना मुकोबो, प्रोग्राम यूनिट मैनेजर, प्लान केन्या, किलिफी.

सामुदायिक सुगमकर्ताओं की सहायता करने के लिये उपलब्ध विकल्पों में निम्नांकित सम्मिलित हो सकते हैं:

- मौखिक प्रोत्साहन और सम्मान
- इस हस्तपुस्तिका में दिये सुझावों तथा स्थानीय अनुभव पर आधारित लघु प्रशिक्षण
- सामुदायिक सुगमकर्ताओं के द्वारा अपनाई गतिविधियों का अभिलेखीकरण तथा अनुभवों का बांटना
- स्वाभाविक नेताओं की ही अपनी कार्यशाला जिससे अनुभवों का आदान-प्रदान हो सके और प्रचार की रणनीति तैयार की जा सके.
- एक वेबसाइट का निर्माण जिसमें इन प्रमाणित स्वाभाविक नेताओं के नाम, फोटो और सम्पर्क सूत्र हों जो कि सामुदायिक परामर्शदाता और सुगमकर्ता के रूप में उपलब्ध हो सकते हैं.
- दैनिक भत्ता, परिवहन, भोजन, यात्रा के लिये सुविधा या भत्ता आदि के रूप में थोड़ी सी सहायता प्रदान करना. ऐसा करते समय यह ध्यान रखना होगा कि सहायता इस प्रकार की जाये कि लोगों को प्रोत्साहन और सहयोग मिले परन्तु उनके जोश और प्रतिबद्धता को कोई ठेस न पहुंचे.

एकजुट समुदाय की शक्ति को खुले में शौच से मुक्त स्तर को प्राप्त करने के माध्यम से आसपास के कम समय में बांग्लादेश राज्य के गांव जिला कल्याणी नगरपालिका की विद्यालय कॉलोनी के माध्यम हुए समुदाय ने 12 वर्षों तक कूड़े-कचरे के कारण अवरुद्ध निकास नाली को अपनाई कर डाली. वर्तमान में नाली वाले का पानी जल का निकलता था, बच्चों को निकलता ही नहीं हो रहा था कि वर्षों तक इकट्ठे होते रहे कूड़े-कचरे के ढेर के नीचे दबी हुई इतनी लम्बी और मजबूत निकास नाली वहां होगी.

पाकिस्तान में सहज प्रचार और विस्तार के अधिक औपचारिक, परन्तु विकेन्द्रीकृत तथा स्व-संचालित स्वरूप का अनुसरण किया जा रहा है जहां 70 स्वाभाविक नेताओं को प्रशिक्षित किया गया है (पाकिस्तान में सामुदायिक प्रतिभागकारियों के माध्यम से प्रसार शौचिक भी देखें). यह स्वाभाविक नेता ऐसे सुगमकर्ता हैं जिनका उपयोग स्थानीय प्राधिकारियों के द्वारा किया जा सकता है. अनुबन्ध का स्वरूप तैयार कर दिया गया है जिसका प्रयोग इसी ट्रिगरिंग और अनुवर्ती गतिविधियों को सम्पन्न करने के लिये अनुबन्धित करने के लिये किया जा सकता है.

इन सभी प्रयासों में लक्ष्य है स्थानीय संस्थाओं की सहायता से कम लागत पर प्रचार और विस्तार करना. इस समय की सबसे महत्वपूर्ण प्राथमिकता है कि किस प्रकार यह किया जा सकता है के विषय में ज्यादा से ज्यादा जानकारी हासिल करना और सीखना तथा यह जानना कि किस स्वरूप के सहयोग और प्रोत्साहन अधिक प्रभावी होते हैं. इस हस्तपुस्तिका का उपयोग करने वालों से अनुरोध है कि वे इस पर चिंतन और विचार करें और अपने अनुभवों को दूसरों के साथ बांटें. पाकिस्तान की संस्था रूरल सपोर्ट प्रोग्राम नेटवर्क द्वारा विकसित और स्थापित वेबसाइट के माध्यम से स्वाभाविक नेताओं के अनुभवों को बांटने की तथा आपस में आदान-प्रदान करने की सुविधा उपलब्ध कराई गई है.

यह वेबसाइट है: www.rspn.org ई-मेल: Tkhan@rspn.org.pk

समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता को इस प्रकार बढ़ावा देने और उद्दीप्त करने के माध्यम से अपने आप फैलने वाले अभियान का रूप पाने के लिये प्रयास करने के महत्व पर जितना बल दिया जाये उतना ही कम है. समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के प्रचार और विस्तार के लिये कई प्रकार के दृष्टिकोणों और कार्यविधियों तथा पहल की आवश्यकता होगी साथ ही यह भी सतत जानते रहने की आवश्यकता होगी कि क्या ऐसा रहा जो उचित परिणाम देने में सहायक है और क्या ऐसा रहा जिसे त्याग देना ही उचित होगा. वर्तमान में थोड़े से संवेदनशील सहयोग के आधार पर काम कर रहे सामुदायिक सुगमकर्ताओं के माध्यम से प्रचार, प्रसार और विस्तार की सबसे अधिक सकारात्मक संभावना दिखाई देती है जिससे बहुत थोड़े से समय में बहुत लोग पूर्ण स्वच्छता और स्वास्थ्यकर पर्यावरण का लाभ प्राप्त कर सकते हैं.

[illegible]

परिशिष्ट

परिशिष्ट क: समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की उत्पत्ति, पृष्ठभूमि, प्रसार और विस्तार

समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की अभिनव पहल 1999 में डॉ. कमल कार द्वारा की गई जबकि वह बांग्लादेश में कार्यरत वाटरएड (एक ब्रिटिश गैर-सरकारी संगठन) के लिये मूल्यांकन मिशन का नेतृत्व कर रहे थे. मिशन के द्वारा वाटरएड की सहायता से वाटरएड तथा उसके सहयोगी गैर-सरकारी संगठन विलेज एजुकेशन रिसोर्स सेन्टर (वीईआरसी) के द्वारा संचालित स्वच्छता परियोजना का मूल्यांकन किया जा रहा था. इस परियोजना में बहुत भारी सब्सिडी के साथ शौचालय निर्माण सम्मिलित था जिसके लिये निर्माण सामग्री की आपूर्ति बाहर से की जाती थी.

मिशन ने पाया कि यद्यपि गांव में शौचालयों की संख्या में तो वृद्धि हुई लेकिन खुले में शौच की परिपाटी चलती रही. मूल्यांकन में यह भी पता चला कि बांग्लादेश के विभिन्न इलाकों में गरीबी का स्तर अलग-अलग था लेकिन फिर भी स्वच्छता के लिये प्रदान की जा रही सब्सिडी की राशि सभी जगहों के लिये समान थी. मिशन की एक संस्तुति यह थी कि सहभागी विधि से गरीबी का मूल्यांकन किया जाये और गरीबी के स्तर के आधार पर सब्सिडी की अलग-अलग राशि प्रदान करने की व्यवस्था का विकास किया जाये.

अपने भ्रमण में मिशन ने गरीबी और खुले में शौच के बीच के सम्बन्ध पर विचार किया - बांग्लादेश के राजशाही जिले के मोस्मोइल गांव पर ध्यान केन्द्रित करके. डॉ. कार और मिशन के कुछ सदस्यों ने पाया कि शौचालय निर्माण सामग्री पर बाहर से प्राप्त होने वाली स्वच्छता सब्सिडी लोगों को खुले में शौच बन्द करने का निर्णय लेने के लिये प्रेरित नहीं कर रही है. इसके विपरीत यह पूरे समुदाय के द्वारा एकजुट होकर लिया गया निर्णय होता था. इसका कारण होता था पूरे समुदाय के द्वारा ठीक से समझ लेना कि समुदाय में तब तक कोई भी सुरक्षित नहीं है जब तक प्रत्येक सदस्य खुले में शौच बन्द नहीं कर देता और अपने स्वच्छता सम्बन्धी व्यवहार में परिवर्तन नहीं कर लेता. खुले में शौच से मुक्त पर्यावरण एक 'सार्वजनिक सम्पत्ति' है. ऐसी स्थिति प्राप्त करना तब तक संभव नहीं है जब तक कि कुछ लोगों के पास शौचालय हो जो कि निजी सम्पत्ति है, और अन्य लोग खुले में शौच करते रहें.

यह भी सामने आया कि बाहर से दी जाने वाली सब्सिडी (और शौचालय का निर्देशात्मक डिजाइन) वास्तव में समुदाय के द्वारा एकजुट होकर निर्णय लेने की प्रक्रिया में रुकावट पैदा कर देते थे. जिन कुछ गांवों में सबसे पहले समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की ट्रिगरिंग की गई उनके समुदायों के द्वारा कहा गया कि यदि गरीबों के लिये शौचालय निर्माण सामग्री पर सब्सिडी उपलब्ध कराई जा रही हो तो वे सभी गरीब वर्ग में वर्गीकृत होने का प्रयास करेंगे. दूसरी ओर जब इन गांवों में रहने वाले लोगों को यह स्पष्ट हो गया कि वे एक दूसरे के मल का सेवन कर रहे हैं (समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की ट्रिगरिंग प्रक्रिया के दौरान उनके अपने अवलोकन से) तब उन्होंने कहा कि वे इतने गन्दे वातावरण में नहीं रह सकते और इसलिये उन्होंने निर्णय किया कि वे खुले में शौच बन्द कर देंगे.

मोस्मोइल के द्वारा अपने स्वच्छता की स्थिति जानने के लिये किये गये सहभागी विश्लेषण और इसके बाद उनके द्वारा एकजुट हो कर खुले में शौच बन्द करने का निर्णय एक ऐसी खबर बन गयी जो जंगल की आग की तरह पास पड़ोस के गांवों में तेजी से फैल गई. पड़ोस के गांवों के द्वारा भी इसी प्रकार की गतिविधियों को संचालित किया जाने लगा. मोस्मोइल तथा पड़ोस के अन्य गांवों के द्वारा खुले में शौच से मुक्त होने का स्तर प्राप्त कर लेने पर साइनबोर्ड लगा दिये गये जिन पर घोषित किया गया था कि इन गांवों में कोई भी खुले में शौच नहीं करता.

बांग्लादेश के उत्तर और दक्षिण में विलेज एजुकेशन रिसोर्स सेन्टर की गतिविधियों की परिधि में आने वाले चार और जिलों में इस नई कार्यविधि और दर्शन का अनुप्रयोग किया गया और वहां भी उसी प्रकार के उत्साहित करने वाले परिणाम प्राप्त हुए. शीघ्र ही सैकड़ों गांवों ने अपने को खुले में शौच से मुक्त घोषित कर दिया.

वाटरएड के सहयोग से वीईआरसी ने परिवारों के स्तर पर शौचालय निर्माण सामग्री पर सब्सिडी देने के दर्शन को बदल दिया और सम्पूर्ण स्वच्छता अभियान के कार्यान्वयन को बिना सब्सिडी के जारी रखा. परिणाम बहुत उत्साहवर्द्धक थे तथा शौचालय निर्माण सामग्री के लिये सब्सिडी शीर्षक के अन्तर्गत आवंटित राशि की बचत की गई और इसका उपयोग उभर कर सामने आये स्वाभाविक नेताओं के क्षमता विकास के माध्यम से नई अवधारणा के प्रसार और विस्तार, कार्यशालाओं के आयोजन, प्रशिक्षण तथा अन्य प्रकार गतिविधियों के लिये किया गया. समुदाय के अभियन्ताओं के द्वारा स्थान विशेष के लिये अनुकूल तथा उपयुक्त रूप से डिजाइन किये हुए 30 से अधिक कम-लागत शौचालयों के मॉडल विकसित किये गये. खुले में शौच से मुक्त हुए गांवों से सैकड़ों स्वाभाविक नेता उभर कर सामने आये जिन्होंने प्रत्यक्ष रूप से नये क्षेत्रों तक समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के प्रसार और विस्तार में महत्वपूर्ण योगदान किया. इनमें से कई स्वाभाविक नेताओं का उपयोग सामुदायिक परामर्शदाताओं के रूप में उन गैर-सरकारी संगठनों के द्वारा किया गया जिन्होंने अपने स्वच्छता कार्यक्रम में समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता को अपना लिया था. विस्तृत जानकारी के लिये कृपया देखिये आईडीएस वर्किंग पेपर्स 184 और 257 "सब्सिडी और सीख रिवर्सल". (संदर्भ के लिये देखिये परिशिष्ट ज).

जब समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता का विकास हो गया तो प्लान इन्टरनेशनल और केयर ने इसे बांग्लादेश के अपने कन्ट्री प्रोग्राम में शामिल कर लिया. स्थानीय कार्मिकों से लेकर प्रबन्धकों तक सभी को डॉ. कमल कार के द्वारा प्रशिक्षित किया गया और सीखी गई बातों को स्थानीय कार्यक्रमों में एकीकृत किया गया. बांग्लादेश से सीख लेते हुए प्लान ने समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता का प्रसार किया और एशिया, अफ्रीका और लैटिन अमेरिका के एक दर्जन से अधिक देशों में इसे शुरू किया. वर्ल्ड विज़न और बांग्लादेश के गैर-सरकारी संगठन जैसे ढाका अहसानिया मिशन ने अपने चालू कार्यक्रमों में समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता को एकीकृत कर लिया. समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की उत्साहवर्द्धक सफलता और समुदायों में इसके प्रति बढ़ती दिलचस्पी देखकर बांग्लादेश के समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता का कार्यान्वयन करने वाले विभिन्न गैर-सरकारी संगठनों का 2004 में दिवाली नाम का एक संघ बना दिया गया.

2001/2 में समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता को भारत में महाराष्ट्र प्रांत में राज्य सरकार द्वारा शुरू किया गया. इसके लिये वाटर एण्ड सैनिटेशन प्रोग्राम - साउथ एशिया द्वारा सहायता प्रदान की गई तथा डॉ. कमल कार को परामर्शदाता बनाया गया. अहमदनगर और नान्देड़ के जिलों में इसे प्रयोगात्मक रूप में शुरू किया गया. इन जिलों में सफलता के आधार पर समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता का प्रसार कर महाराष्ट्र के सभी 32 जिलों में लागू कर दिया गया. बाद में समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता को हिमाचल प्रदेश, हरियाणा, आन्ध्र प्रदेश और मध्य प्रदेश में भी शुरू कर दिया गया. महाराष्ट्र की हजारों ग्राम पंचायत (4000 से अधिक) तथा अन्य राज्यों के कई गांव खुले में शौच से मुक्त घोषित हो गये.

परन्तु फिर भी भारत सरकार के "सम्पूर्ण स्वच्छता अभियान" कार्यक्रम के अन्तर्गत परिवारों को शौचालय निर्माण के लिये सब्सिडी देने की व्यवस्था पूर्ववत् जारी है. दुर्भाग्य से इस प्रकार की सब्सिडी की व्यवस्था समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के प्रसार और विस्तार के मार्ग में अवरोध पैदा करती है. महाराष्ट्र ने इस समस्या का हल ढूंढ लिया. वहां परिवारों को शौचालय निर्माण के लिये सब्सिडी देने के स्थान पर गांव के पूर्ण रूप से खुले में शौच से मुक्त घोषित होने पर पूरे समुदाय को पुरस्कार देने की व्यवस्था लागू कर दी गई. हिमाचल प्रदेश ने अपने स्वच्छता अभियान में भारत सरकार द्वारा दी जा रही सब्सिडी को प्रमुखता प्रदान नहीं की जिससे कि यह समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की प्रक्रिया में रुकावट न पैदा कर सके.

कम्बोडिया में वर्ष 2002 में कन्सर्न वर्ल्डवाइड द्वारा समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की शुरुआत चार प्रांतों - पुरसत, कम्पोंग चैम, कम्पोंग स्पुन, सियेम रीप - में प्रायोगिक रूप से की गई. यद्यपि कन्सर्न द्वारा कुछ समय बाद इसको छोड़ दिया गया तथापि इसके विषय में जानकारी फैल गई और बाद में इसे ग्राम विकास मंत्रालय, प्लान कम्बोडिया और यूनिसेफ द्वारा अपने हाथ में ले लिया गया. समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता अब कम्बोडिया के 24 में से कम से कम 8 प्रांतों में कार्यान्वित की जा रही है और कम्बोडिया की सरकार इसे आधिकारिक ग्रामीण स्वच्छता विधि के रूप में अंगीकार करने पर विचार कर रही है.

वाटर एण्ड सैनिटेशन प्रोग्राम, यूनिसेफ, प्लान इन्टरनेशनल और अन्य अन्तर्राष्ट्रीय गैर-सरकारी संगठनों, तथा कुछ राष्ट्रों की सरकारों के द्वारा आयोजित और मुख्य रूप से डॉ. कमल कार द्वारा प्रशिक्षण सुगमकर्ता के रूप में संचालित व्यावहारिक प्रशिक्षण कार्यशालाओं के कारण 2007 तक समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की शुरुआत विश्व के बीस से अधिक देशों में हो चुकी है.

फरवरी और मार्च 2007 में समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता पर दो बड़ी अन्तर्राष्ट्रीय प्रशिक्षण कार्यशालाओं का आयोजन प्लान इन्टरनेशनल, देश कार्यालयों द्वारा तंजानिया के दार-ए-सलाम और इथियोपिया में अवासा एवं अदिस अबाबा में किया गया. इन कार्यशालाओं में 100 से अधिक प्रतिभागी थे. इनमें स्वतंत्र परामर्शदाता, कार्यक्रम प्रबन्धक केन्या, तंजानिया, इथियोपिया, मोजाम्बीक, सियरालियोन, सूडान, मिस्र और युगान्डा, सरकारी कार्मिक, वाटरएड के स्टाफ, वाटर एण्ड सैनिटेशन प्रोग्राम, अन्य राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय गैर-सरकारी संगठनों के कार्मिक सम्मिलित थे. इन सभी को डॉ. कमल कार द्वारा प्रशिक्षित किया गया. 2007 के अन्तिम 3-4 माह में अकेले इथियोपिया में 60 से अधिक गांवों के द्वारा खुले में शौच से मुक्त होने का स्तर प्राप्त कर लिया गया. प्लान केन्या, युगान्डा, सियरालियोन के प्रशिक्षित प्रतिभागियों के द्वारा लौटने पश्चात अन्य कार्मिकों को प्रशिक्षित किया गया और गांवों में समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की ट्रिगरिंग की गई. अक्टूबर 2007 में यूनिसेफ के सहयोग से नैरोबी, केन्या तथा लुसाका, जाम्बिया में दो कार्यशालाओं का आयोजन किया गया. सरकारी विभागों, यूनिसेफ केन्या, इथियोपिया, जाम्बिया, यूनिसेफ के अफ्रीका में स्थित 5 क्षेत्रीय प्रशिक्षण केन्द्रों, आईआरसी, प्लान इन्टरनेशनल, वाटरएड, राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय गैर-सरकारी संगठनों के कार्मिकों के द्वारा इन दो कार्यशालाओं में प्रतिभाग किया गया.

देश	शुरूआत का वर्ष	सहायता और सहयोग प्रदान करने वाला अभिकरण
1. भारत	2000	वाटर एण्ड सैनिटेशन प्रोग्राम - साउथ एशिया, महाराष्ट्र, हिमाचल और हरियाणा प्रदेशों की सरकारें
2. कम्बोडिया	2004	कन्सर्न वर्ल्डवाइड वह संस्था है जिसने पहली बार कम्बोडिया में समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की पहल की, ग्राम विकास मंत्रालय, यूनिसेफ और प्लान इन्टरनेशनल इस कार्यविधि के प्रमुख उपयोगकर्ता हैं
3. नेपाल	2003	इन्टरनेशनल, नेपाल वाटर फॉर हैल्थ और वाटरएड के द्वारा समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता को नेपाल में पहली बार शुरू किया गया
4. इण्डोनेशिया	2004	वाटर एण्ड सैनिटेशन फॉर लो इनकम कम्युनिटीज और स्वास्थ्य मंत्रालय इण्डोनेशिया सरकार, वाटर एण्ड सैनिटेशन प्रोग्राम - ईस्ट एशिया एण्ड पैसिफिक रीजन, के द्वारा सबसे पहले 5 क्षेत्रों में प्रायोगिक रूप में इसे संचालित करके पहल की गई. बाद में यह देश के सभी बड़े द्वीपों तक फैल गया.
5. [illegible]	2002	अमेरिकन एड द्वारा सहायतित जिला विकास और विकेन्द्रीकरण कार्यक्रम के तहत पहली बार किबाले जिले में शुरूआत की गई.
6. जाम्बिया	2003	प्लान और वाटरएड जाम्बिया के द्वारा पहले चोमा जिले में डॉ. कमाल कार के द्वारा वाटरएड की समीक्षा के बाद बहुत छोटे पैमाने पर समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की शुरूआत की गई. बाद में दिसम्बर 2007 में यूनिसेफ और स्वास्थ्य मंत्रालय द्वारा समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता पर राष्ट्रीय कार्यशाला और व्यावहारिक प्रशिक्षण आयोजित किया गया जिसमें सरकारी कर्मियों, गैर-सरकारी संस्थाओं, अन्तरराष्ट्रीय गैर-सरकारी संस्थाओं के कर्मियों ने प्रतिभाग किया. इसके बाद समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता को सोलवेजी जिले में भी शुरू किया गया.
7. पाकिस्तान	2004	यूनिसेफ और वाटरएड, लोधरां पायलट प्रोजेक्ट में स्थापित गैर-सरकारी संगठन आईआरएसपी द्वारा पाकिस्तान में समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की शुरूआत की गई. इसके लिये वाटर एण्ड सैनिटेशन प्रोग्राम, साउथ एशिया से सहायता प्राप्त होती है. आरएसपीएन, एनआरएसपी, एसआरएसपी, टीआरडीपी और यूनाइटेड पाकिस्तान अन्य संस्थाओं के द्वारा समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता कार्यविधि का ही प्रयोग किया जाता है.
8. नाइजीरिया	2004	चार राज्यों - बेनू, एनुगु, एकिति और जिगावा - में वाटरएड नाइजीरिया द्वारा समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता को प्रयोगात्मक रूप से प्रारम्भ किया गया है.
9. मंगोलिया	2004	एशियन डेवलपमेंट बैंक सहायतित अर्बन सस्टेनेबल डेवलपमेंट प्रोजेक्ट और समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता कार्य विधि का परीक्षण जीटीजेड द्वारा सहायतित ... एण्ड ... डेवलपमेंट प्रोजेक्ट के अन्तर्गत गांवों में किया गया.
10. चीन	2005	प्लान चाइना द्वारा शान्क्सी प्रान्त में शुरू किया गया.
11. इथियोपिया	2006	वीरा (जो पूर्व में विस्थापितों द्वारा इन्टरनेशनल था) द्वारा अमेरिकन एड के सहयोग से अम्हारा में शुरू किया. प्लान इथियोपिया भी समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के प्रमुख कार्यान्वयनकर्ताओं में से एक है.
12. यमन	2006	सोशियल फण्ड फॉर डेवलपमेंट तथा यमन सरकार के ग्राम विकास मंत्रालय के द्वारा एक जिले में 2007 में प्रतिभागियों के प्रशिक्षण के माध्यम से समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की शुरूआत की गई. इस प्रशिक्षण को सोशियल डेवलपमेंट फण्ड तथा कुछ अन्य राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय गैर-सरकारी संस्थाओं के सुगमकर्ताओं द्वारा संचालित किया गया.
13. बोलीविया	2006	यूनिसेफ, प्लान बोलीविया, एसएनवी-एजेन्सी ने समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की बोलीविया में शुरूआत की. प्लान, तंजानिया, एक क्षेत्रीय व्यावहारिक प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन प्लान रेसा द्वारा अफ्रीका के 8 प्लान देशों के स्टाफ के लिये किया गया.
14. तंजानिया	2007	एक क्षेत्रीय व्यावहारिक प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन प्लान रेसा द्वारा पूर्वी और दक्षिणी अफ्रीका के 8 प्लान देशों के स्टाफ के लिये तंजानिया में फरवरी 2007 में किया.
15. केन्या	2007	मई 2007 में, तंजानिया और इथियोपिया में आयोजित समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता पर व्यावहारिक प्रशिक्षण कार्यशाला में प्रतिभाग करने के बाद प्लान केन्या ने समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता को प्रयोगात्मक रूप से तीन विकास क्षेत्रों में शुरू करने का निर्णय लिया.
16. युगाण्डा	2007	तंजानिया और इथियोपिया में डॉ. कमाल कार द्वारा समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता पर संचालित व्यावहारिक प्रशिक्षण कार्यशालाओं में प्रतिभाग करने के बाद प्लान युगाण्डा के स्टाफ द्वारा इस कार्यविधि को प्रयोगात्मक रूप से शुरू किया गया.
17. बुर्कीना फासो, घाना और माली	2007/8	नाइजीरिया में प्रयोगात्मक रूप से शुरू करने के बाद सहायता प्रदान करने वाले अभिकरण वाटरएड द्वारा अपने पश्चिमी अफ्रीका कार्यक्रम के तहत तीन अन्य राष्ट्रों, बुर्कीना फासो, घाना और माली में समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता का प्रसार करने का निर्णय लिया गया है. इन देशों में यह प्रक्रिया अभी शुरूआती दौर में है.
18. पूर्वी तिमोर	2007	वाटरएड आस्ट्रेलिया और प्लान ईस्ट तिमोर समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता का क्रियान्वयन करने के शुरूआती दौर में हैं.
19. सियेरा लियोन	2008	यूनिसेफ सियेरा लियोन, स्वास्थ्य एवं स्वच्छता मंत्रालय, प्लान यू.के. और प्लान सियेरा लियोन के द्वारा डॉ. कमाल कार के सहयोग और मार्गदर्शन में एक शृंखलाबद्ध व्यावहारिक प्रशिक्षण कार्यशालाओं की व्यवस्था की गई. कार्यशाला के प्रतिभागियों के द्वारा 34 गांवों में समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की ट्रिगरिंग की गई.

परिशिष्ट ख: समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता का प्रसार और विस्तार – एक खुला पत्र

प्रिय सहयोगी,

हाल के वर्षों में लोगों को यह स्पष्ट हो गया है कि शौचालय निर्माण के लिये परिवारों को सब्सिडी के रूप में दी जाने वाली आर्थिक सहायता की व्यवस्था समुदायों के द्वारा एकजुट होकर अपने व्यवहार में परिवर्तन के प्रयास के आड़े आती है. यह समझ तेजी से फैल रही है. इसके कारण जहां एक ओर चुनौतियां सामने आती हैं वहीं दूसरी ओर अवसर भी प्रस्तुत होते हैं. समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता का विस्तार बढ़ती गति से प्रसार और विस्तार हो रहा है. साथ ही लोगों को यह भी तेजी से स्पष्ट होता जा रहा है कि इसे सफल बनाने के लिये क्या करना चाहिये. यह सब बहुत ही उत्साहवर्द्धक है. हम आशा करते हैं कि गरीबी उन्मूलन, जन कल्याण, तथा अन्य सामुदायिक एकजुटता आधारित कार्य-योजनाओं के कार्यान्वयन के संदर्भ में इसका पूरा लाभ समाज को मिल सकेगा.

हम यह पत्र इसीलिये लिख रहे हैं कि हमारा विश्वास है कि इसकी संभावनाओं का लाभ तभी मिल पायेगा जब समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के व्यापक प्रसार और विस्तार के साथ गुणवत्ता को भी बनाये रखा जाये. हम यह सब व्यक्तिगत रूप से अपनी ओर से लिख रहे हैं और जो कुछ आगे प्रस्तुत कर रहे हैं वह हमारे निजी अनुभवों तथा वर्तमान सबूतों पर आधारित है.

1990 के दशक में अनुदान, ऋण उपलब्ध कराने वाली संस्थाओं और सरकारों के द्वारा सहभागी ग्राम्य आकलन (पी.आर.ए.) के त्वरित प्रसार और विस्तार को प्रोत्साहित किया गया. इस दबाव के कारण कार्यक्रमों की गुणवत्ता पर बहुत प्रतिकूल प्रभाव पड़ा. अच्छे सहभागी ग्राम्य आकलन के लिये अपेक्षित व्यवहार, अभिवृत्ति और कार्यविधि को अपनाये बिना सहभागी ग्राम्य आकलन नाम का प्रयोग बहुत से स्थानों पर किया गया. प्रशिक्षणों की मांग बढ़ गई परन्तु प्रशिक्षणों की संख्या के संदर्भ में अपेक्षित अच्छे प्रशिक्षक उपलब्ध नहीं थे. इस कमी को मुख्य रूप से उन परामर्शदाताओं, गैर-सरकारी संगठनों और समूहों ने पूरा किया गया जो कि इस कार्य के लिये सक्षम नहीं थे और इस कारण उन्होंने नुकसान ही किया. हमारी चिंता यही है कि ऐसा ही समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के साथ न होने पाये. दुर्भाग्य से इस प्रकार के संकेत हैं कि ऐसा होने लग चुका है. यह हमारा सुविचारित मत है कि इसे रोकने के लिये तथा गुणवत्ता को बढ़ाने तथा बनाये रखने के लिये तीन निर्णायक बातों पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता होगी. निधियों के वितरण पर अंकुश और सावधानी से नजर रखना, समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के लिये अच्छा व्यावहारिक और क्षेत्र भ्रमण आधारित प्रशिक्षण, और ट्रिगरिंग के बाद उपयुक्त अनुवर्ती भ्रमण तथा संबंधित गतिविधियां.

निधियों के वितरण पर अंकुश और सावधानी से नजर रखना. हम अनुदानदाताओं, ऋणदाताओं और सरकारों से अनुरोध करते हैं कि बड़े बजट, बड़े लक्ष्य और धन वितरण करने के दबाव वाले कार्यक्रमों से बचें तथा इसके स्थान पर प्रसार और विस्तार संयत और सुविचार तरीके से करने के लिये सहयोग करें. अच्छे प्रशिक्षण, समर्पित और प्रतिबद्ध स्टाफ, और स्थानीय स्वाभाविक नेताओं के विकास और उन्हें सहयोग देने पर ध्यान केंद्रित करें. गैर-सरकारी संगठनों तक ढेर सारा पैसा बहुत तेजी से पहुंचाने के कारण पहले ही बहुत नुकसान हो चुका है. पर्याप्त आर्थिक सहायता की आवश्यकता तो है परन्तु बहुत अधिक बड़ी निधि की नहीं.

व्यावहारिक क्षेत्र भ्रमण आधारित प्रशिक्षण. अच्छे प्रशिक्षकों की पहचान करना ही मूल मंत्र है. और अब उनको इस प्रकार सहयोग करना है कि वे पूर्णकालिक रूप से सभी प्रशिक्षणों में भागीदारी करें तथा प्रशिक्षणों को व्यावहारिक और क्षेत्र भ्रमण आधारित बनायें. कुछ बहुत अच्छे लोग तो अन्य कार्यों में फंसे हुए हैं. जब भी सम्भव हो उन्हें पूर्णकालिक प्रशिक्षक के रूप में समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता अभियान में गुणवत्ता की भूमिका में योगदान करने के लिये मनाने का प्रयास कीजिये. कुछ स्थानों में तेजी से प्रसार और विस्तार के कारण प्रशिक्षणों की गुणवत्ता में कमी आने लगी है. यह बहुत आवश्यक है कि प्रशिक्षण की गुणवत्ता का नियमित रूप से अनुश्रवण किया जाये और किसी भी ऐसे संगठन या व्यक्ति को नियुक्त न किया जाये जिसके पास आवश्यक तथा उपयुक्त अनुभव, अभिवृत्ति और व्यवहार का अभाव हो.

अनुवर्ती भ्रमण और गतिविधियां. ट्रिगरिंग को कभी भी अपने आप में एक पूर्ण घटना नहीं समझा जाना चाहिये वरन् इसे एक सतत प्रक्रिया की शुरुआत मात्र ही समझा जाना चाहिये. यह उस सतत प्रक्रिया की शुरुआत है जिसमें समुदाय को प्रोत्साहन और सहयोग प्रदान किया जाता है जिससे समुदाय कुछ समय में खुले में शौच से पूर्ण रूप से मुक्त हो जाता है. साथ ही समुदाय का सशक्तिकरण भी हो जाता है और समुदाय एकजुट होकर अपने समाज के लिये और भी बहुत कुछ करने के लिये प्रेरित हो जाते हैं.

समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के इतिहास में यह एक कठिन समय है. यदि सभी सम्बन्धित उपर्युक्त तीनों बातों का पूरा ध्यान रखेंगे तथा तदनुसार कार्यवाई करेंगे तो भविष्य वास्तव में उज्ज्वल ही होगा. और यदि ऐसा नहीं करते तो ग्रामीण लोगों को लाभान्वित करने का एक बहुत बड़ा अवसर दुखद रूप से हाथ से निकल जायेगा. जो भी महत्वपूर्ण समाज और पदाधिकारी को प्रभावित करते हैं उनसे हमारा अनुरोध है कि वे ऐसा न होने दें.

कृपया इस पत्र को व्यापक रूप से परिचालित करने का कष्ट करें. आप इसके लिये स्वतंत्र हैं.

भवदीय

कमल कार	**रॉबर्ट चैम्बर्स**
आर 109, दि रेसीडेंसी	फेलो, पार्टिसिपेशन ग्रुप,
सिटी सेंटर, साल्ट लेक	इंस्टिट्यूट ऑफ डेवलपमेंट स्टडीज़,
कोलकाता – 700064, भारत	यूनिवर्सिटी ऑफ ससेक्स, यू.के.

30 नवम्बर – 1 दिसम्बर, 2007 को ओइता, जापान में आयोजित ईस्ट एशिया सैनिटेशन कांफ्रेंस तथा 18-20 फरवरी, 2008 को डरबन, दक्षिण अफ्रीका में आयोजित अफ्रीकासैन में वितरित किया गया.

परिशिष्ट ग: विशेष परिस्थितियों में ट्रिगरिंग

जहाँ लोग नदियों या बहते पानी में शौच करते हैं

उन जगहों में जहाँ लोग मुख्य पानी अर्थात् नदियों, तालाबों, जलधाराओं आदि में शौच करते हैं वहाँ अनुक्रम भ्रमण का बहुत स्पष्ट प्रभाव नहीं होता. परन्तु आप सामान्यतया यह भी पायेंगे कि समुदाय के सदस्य उसी पानी का नहाने तथा कुल्ला आदि व्यक्तिगत स्वच्छता के कार्यों के लिये भी करते हैं. इस तरह की स्थितियों में आप एक बाल्टी पानी लाने का अनुरोध कर सकते हैं और पूछ सकते हैं, "क्या आप इस पानी से कुल्ला करेंगे?" बहुत से मामलों का उत्तर होगा "नहीं".

इस समय आप समुदाय के सभी परिवारों के द्वारा प्रतिदिन विसर्जित मल की मात्रा का आकलन कर सकते हैं. साथ ही यह भी पूछ सकते हैं कि उसी पानी में कितने और समुदायों के द्वारा शौच की जाती है (नदी में ऊपर की ओर या तालाब के दूसरे किनारों पर). इस आकलन के बाद उनसे उसी पानी से अपने चेहरे धोने, कुल्ला करने और गरारा करने के लिये कहिये. शायद कोई भी इसके लिये तैयार नहीं होगा. उनसे पूछिये कि यदि वे अभी तक उसी पानी का प्रयोग शौच करने के लिये और साथ ही नहाने के लिये करते आ रहे हैं तो अब क्यों मना कर रहे हैं.

समुदाय द्वारा उत्पादित मल की मात्रा के आकलन से और प्रश्न और परिचर्चा उपजनी चाहिये, उदाहरण के लिये सारा मल कहाँ जाता है? सतह पर फैले मल के कारण भूमिगत जल स्रोत भी संदूषित हो सकते हैं. सतह पर फैले इतने अधिक मल के क्या प्रभाव हो सकते हैं? इस प्रकार के प्रश्नों से समुदाय समस्या पर विचार करना शुरू कर देगा कि खुले में शौच के क्या प्रभाव होंगे. आपको उन्हें बताने की आवश्यकता नहीं है.

प्रश्न अवश्य पूछिये और समुदाय को अपने से उन पर चिंतन करने दीजिये. समुदाय के अलग-अलग सदस्यों से प्रश्न पूछिये - महिलाएं, पुरुष, बच्चे, अमीर, गरीब - जिससे यह सुनिश्चित हो सके कि सभी अपना उत्तरदायित्व स्पष्ट रूप से समझें. विश्लेषण के अन्त में आप पूछ सकते हैं, "अगले दिन कौन खुले में शौच करने जायेगा?" या "कौन उस पानी में स्नान करेगा जिसमें सारा समुदाय शौच करता आ रहा है?" उनसे कहिये कि वे हाथ खड़े करके बतायें. यदि कोई हाथ खड़ा नहीं करता तो उनसे पूछिये कि यदि वे ऐसा नहीं करेंगे तो क्या करेंगे?

खुले में शौच का विशिष्ट स्थान

पूर्वी अफ्रीका के कुछ भागों में शौचालय अधिकांश हैं परन्तु यह बहुधा खुले गड्ढों के रूप में घरों के पास ही निर्मित किये जाते हैं. इन्हें कभी-कभी "मक्खियों और मच्छरों के कारखानों" के नाम से भी सम्बोधित किया जाता है.

यदि आप उनसे पूछें कि खुले में शौच कौन करता है तो थोड़े से लोग हाथ उठायेंगे, यदि उठाना चाहें तो. तब उनसे पूछिये:

- यदि आप शौचालय के छेद के अन्दर देखते हैं तो क्या दिखाई देता है? मल? यदि हाँ तो क्या आप मक्खियों और कीड़ों को सतह पर देखते हैं? यदि आप एक छड़ी को नीचे डाल कर निकालें तो क्या उसमें मल लगा होगा? क्या आपके विचार से नीचे गड्ढे में पैदा हो रही मक्खियाँ बाहर आ सकती हैं? यदि इन सभी प्रश्नों के उत्तर "हाँ" है तो फिर यह खुले में शौच से किस प्रकार भिन्न हुआ? क्या यह उससे भी खराब नहीं है?
- अनुक्रम भ्रमण के दौरान इनमें से कुछ शौचालयों को देखिये.

लोग सभी खुले गड्ढे वाले शौचालयों को जल्दी से ढकने का प्रयास कर सकते हैं. वे एक अन्तरिम कदम के रूप में राख से मल को ढक सकते हैं जिससे मक्खियाँ कम हो जायें. इसी विधि का प्रयोग उन अवस्था परन्तु शौचालयों के विषय में समुदाय में जागरूकता पैदा करने के लिये भी किया जा सकता है जैसी चीन और वियतनाम में पाई जाती हैं और जिनमें मानव मल को सुरक्षित ढंग से ढका नहीं जाता है परन्तु खुला रहता है जिससे वातावरण के संदूषित होने की आशंका बनी रहती है.

सिद्धान्त और कुछ नहीं है परन्तु किसी परिवार विशेष के नाराज हो जाने की संभावना रहती है जब किसी एक परिवार की कमियां बताई जाती हैं. यदि पूरे समुदाय की बात हो तो ऐसा नहीं होता. इसलिये यह संस्तुति की जाती है कि एक ही समुदाय के कई घरों को सुगमकर्ताओं और समुदाय के सदस्यों के दो या तीन पृथक समूहों के द्वारा स्वच्छता अनुक्रम भ्रमण अथवा खुले में शौच के स्थानों के अनुक्रम भ्रमण के दौरान देखा जाये. सभी उप-समूहों द्वारा जो कुछ पाया गया उस पर बड़ी बैठक में मानचित्र के पास और इकट्ठा समुदाय के सदस्यों के साथ परिचर्चा की जा सकती है.

जहाँ शौचालय तो हैं परन्तु उनका प्रयोग कम ही होता है

आर्थिक रूप से अधिक विकसित क्षेत्रों में यह सामान्य घटना है. शौचालयों का अधिक प्रयोग नहीं किया जाता क्योंकि या तो मल को बहाने के लिये पानी नहीं होता या लोगों को यह डर लगा रहता है कि गड्ढा भर जायेगा.

समुदाय स्तर पर किये जाने वाले समाधानों में सम्मिलित हैं:

- डायरेक्ट पिट सूखा शौचालय जैसा भारत के हिमाचल प्रदेश के कुछ भागों में पाया जाता है जिसमें ढक्कन होता है और मल को राख से ढक दिया जाता है.
- तीव्र ढलान वाला विकास शौचालय पैन और निकास पाइप जिसमें बहुत कम पानी की आवश्यकता होती है.

जहाँ मल खुले में बहा दिया जाता है

यमन में घरों में बने शौचालयों से बहुधा मल बह कर खुले में आ जाता है जिसके कारण पड़ोसियों में झगड़े भी हो जाते हैं. इस तरह की घटनाओं के कारण पुलिस-थाना और कोर्ट-कचहरी भी हो जाती है.
समुदाय के स्तर पर समाधानों में सम्मिलित हैं: गड्ढे खोदकर ढके हुए सोक पिट बनाना. कई लोग अपने पारम्परिक सूखे शौचालयों की प्रणाली की ओर वापस जाना चाहते थे. यमन के जातीय और अर्धजातीय क्षेत्रों के पारम्परिक शौचालय 100 वर्षों से भी अधिक पुराने हैं और रेगिस्तानी स्थितियों के लिये उपयुक्त हैं. ऐसी जगहों में जहां बहुत कम या न के बराबर बारिश होती है शौच के बाद राख का प्रयोग उसे ढकने के लिये किया जाता था और शौचालय के नीचे बने एक छोटे से दरवाजे से समय-समय पर सूखी कीचड़ को वहाँ से निकाल कर उसका निस्तारण कर दिया जाता था. शौचालय सामान्यतया दो या तीन मंजिले मकान के हर तल पर बने होते हैं. यह सभी शौचालय एक उर्ध्वाधर वर्गाकार या वृत्ताकार मुंह वाले पाइप से जुड़े होते हैं जो कि मकान की बाहरी दीवार के सहारे ऊपर से नीचे की ओर आता है. मल नीचे गिर कर एक जगह एकत्र हो जाता है जिसे हर इस्तेमाल के बाद ऊपर से राख डाल कर ढक दिया जाता है. शहरों और कस्बों में पानी की सील वाले अधिकतर शौचालयों को सूखे गड्ढे वाले शौचालयों ने प्रतिस्थापित कर दिया है. गांवों के लोगों ने भी सूखे गड्ढे वाले शौचालय कम लागत पर बनाने का निर्णय लिया.

जहाँ महिलाएं पर्दे में रहती हैं और घरों में बाल्टियों तथा पाखाना करने वाले प्लास्टिक के थैलों का इस्तेमाल करती हैं

यमन और पाकिस्तान के कुछ भागों में महिलाएं घरों के अन्दर रखी गई बाल्टियों में शौच करती हैं और इन बाल्टियों को केवल रात को अंधेरा होने के बाद ही बाहर ले जा कर खाली कर पाती हैं. यमन की महिलाओं ने बताया कि बाल्टियों को रात को ढांपने के लिये मकान के भूतल का प्रयोग एक कबाड़ के रूप में किया जाता है. जानवरों के इन बाड़ों की हालत बहुत ही खराब होती है जहां मानव मल और जानवरों का मल एक दूसरे से मिल जाते हैं और उसी के ऊपर से लोग पार कर जाते हैं जिससे बहुत भयानक दुर्गन्ध बनी रहती है. इस भूतल के कक्ष में सामान्यतया कोई खिड़की या रोशनदान भी नहीं होते. लड़कियों और महिलाओं के पास इस स्थान का उपयोग शौच के लिये करने के अलावा कोई और विकल्प ही नहीं है.

लोगों के द्वारा किया जाने वाला समाधान है: शौचालयों का निर्माण

परिशिष्ट च: घृणा जगाने के लिये प्रश्नों के नमूने

खुले में शौच के स्थानों के अनुप्रस्थ भ्रमण के दौरान समुदाय से पूछे जा सकने वाले प्रश्न

- यहाँ शौच करने कौन लोग आते हैं?
- महिलाएं कहाँ जाती हैं?
- बच्चों के द्वारा किन स्थानों का उपयोग किया जाता है? (बच्चों के समूह को सुगमकर्ता द्वारा अलग ले जाया जाता है और वे सुगमकर्ता तथा अन्य को उन स्थानों पर ले जाते हैं जहाँ बच्चे शौच करते हैं)
- यह किसका मल है?
- मल की दो या तीन ढेरियों की ओर इशारा करते हुए पूछिये कि उनके रंग, आकार, स्वरूप आदि में क्या फर्क है? उनके विचार से इस प्रकार के अन्तर के क्या कारण हो सकते हैं? (उदाहरण के लिये डायरिया, दस्त, कीड़ा, अपच इत्यादि)
- ताजे मल की ओर इशारा करते हुए पूछिये कि क्या उसमें कोई जीवित चीज दिखाई दे रही है (उदाहरण के लिये मक्खियाँ, कीड़े, मच्छर, कीटाणु इत्यादि)
- जब आप कुछ लोगों को अपनी नाक बन्द करते हुए या घृणा से थूकते हुए पायें तो पूछिये कि वे ऐसा क्यों कर रहे हैं? क्या वे ऐसा ही उस समय भी करते हैं जब वह रोज उस स्थान पर आते हैं?
- पूछिये कि मक्खियाँ उड़ कर कितनी दूर जा सकती हैं? क्या मक्खियाँ मल को अपने साथ लेकर उनके घर तक भी आ सकती हैं?
- उन्हें यह कह कर चिढ़ाइये कि उन्हें बहुत चिन्ता करने की कोई आवश्यकता नहीं है क्योंकि शायद जिन मक्खियों को वे मल पर मंडराते हुए देख रहे हैं वे उन मक्खियों से भिन्न हैं जो कि उनके भोजन पर मंडराती हैं (शायद आपके सुझाव से लोग सहमत न हों और कहें कि यही वह मक्खियाँ हैं जो मल को उनके घर तक ले जाती हैं)
- पूछिये कि ज्यादा मक्खियाँ किस पर मंडराती हैं: तरल मल पर, ठोस मल पर, सूखे मल पर या गीले मल पर?
- पूछिये कि कौन सा मल जल्दी सूख जाता है, सामान्य मल या डायरिया से पीड़ित व्यक्ति का मल? कौन सा मल अधिक पनीला होता है?
- पूछिये कि कौन सा मल ज्यादा मक्खियों को आकर्षित करता है (सूखा, पनीला या अर्धठोस मल)?
- पूछिये कि डायरिया वाले पनीले मल से संक्रमण जल्दी फैलता है या सामान्य अर्धठोस मल से?
- अन्त में पूछिये कि क्या उन्हें ऐसे वातावरण में जीना अच्छा लगता है?

कोई अन्य प्रश्न पूछिये यदि आपको लगता है कि उससे उनमें घृणा उत्पन्न हो सकती है. स्थानीय स्तर पर कोई नई चीज या नये प्रश्न की इजाद कीजिये.

परिशिष्ट छ: अनुवर्ती गतिविधियों की नमूने की जांचसूची (समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की ट्रिगरिंग के उत्काल बाद)

प्रथम:

- अनुवर्ती गतिविधियों के लिये टीम का गठन
- 3-4 व्यक्ति
- टीम में कम से कम एक महिला
- कुछ सक्षम स्वाभाविक नेताओं को सम्मिलित कीजिये या सबसे अच्छे ट्रिगरिंग/ट्रिगरिंग के बाद की गतिविधियों से जुड़े सबसे अच्छा काम करने वाले गांव के किसी सदस्य को टीम में सम्मिलित कीजिये

द्वितीय:

- सभी गांवों का भ्रमण कीजिये
- बच्चों का जुलूस निकलवाइये
- जिस चार्ट पर समुदाय के द्वारा खुले में शौच मुक्त होने की तारीख अंकित है उसे ले जाइये और उस पर हस्ताक्षर करवाइये
- गांव के स्वाभाविक नेताओं के साथ बैठक कीजिये
- समुदाय की सहायता करना या को मानचित्र को मार्कर के साथ केन्द्रीय स्थान पर लगाने में कीजिये जिससे वे उन मकानों पर निशान लगाना शुरू कर दें जिन्होंने शौचालय बनाने शुरू कर दिये हैं या बना लिये हैं
- समुदाय के साथ निर्धारित स्थानों के अनुप्रस्थ भ्रमण के दौरान सभी निर्धारित स्थानों पर जाइये और उन्हें देखिये, समुदाय द्वारा प्रतिदिन इसका अनुसरण
- जिन्होंने निर्माण शुरू कर दिया है उन्हें प्रोत्साहित कीजिये और उनसे पूछिये कि क्या उन्हें किसी प्रकार की तकनीकी मार्गदर्शन की आवश्यकता है - विशेषकर ढीली या भुरभुरी मिट्टी - परन्तु मुख्य रूप से उनके ही विचारों को कार्यान्वित होने दीजिये और अन्य गांवों के उदाहरण उनके सामने रखिये
- अगले भ्रमण की तारीख पर सहमति दीजिये और उन्हें बताइये कि अगले भ्रमण के समय साथ में अन्य गांवों के बहुत से लोग भी होंगे जिन्होंने काफी प्रगति कर ली है और उन्हें सूचित कीजिये कि अन्य गांवों ने क्या प्रगति कर ली है
- नये शौचालयों की फोटो खींचिये
- जिन गांवों में प्रगति की गति धीमी है उन्हें इस प्रकार और समुदाय के अन्य सदस्यों के साथ बैठक कीजिये और उन्हें कम से कम दो सप्ताह के लिये अपनी अनुसरण योजना बनाने में मदद कीजिये
- सबके साथ मिलकर में तैयार रहिये कि बाहर से लोग आयेंगे और देखेंगे कि कोई ऐसा समुदाय भी है जो कि एक दूसरे के मल का सेवन करते रहना चाहता है (यहाँ सामूहिक बैठक में, कार्यशाला में, गांव के सम्पूर्ण प्रस्तुतीकरण के समय उनके द्वारा व्यक्त की गई प्रतिज्ञाओं को पूरा करने के लिये उन्हें जगाने और उत्साहित करने हेतु)

समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता में अग्रिम समुदायों के सभी स्थानीय और देसी तकनीकी विकल्पों के विषय में उन्हें बताइये. - फोटो खींचें और गांव के नाम सहित.

परिशिष्ट ज: लक्ष्य आधारित आंशिक स्वच्छता और समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की तुलना

सब्सिडी आधारित कार्यक्रमों की तुलना में समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के लिये सोच, दृष्टिकोण तथा कार्यशैली में कई प्रकार के बदलाव की आवश्यकता होती है. इन भिन्नताओं को निम्नांकित तालिका में संक्षेप में दर्शाया गया है.

कार्यक्रम के अवयव	लक्ष्य-आधारित आंशिक स्वच्छता	समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता
शुरूआत और फोकस	वस्तुएं, भौतिक लक्ष्य प्राप्ति	लोग, परिणाम
प्रमुख गतिविधि	शौचालयों का निर्माण करना	जगाने और अभिप्रेरित करने वाली प्रक्रियाएं
शौचालयों का डिजाइन - किसके द्वारा बनाया गया	अभियन्ताओं द्वारा	समुदाय द्वारा अभिनव पहल
डिजाइनों की संख्या	एक या कुछ	बहुत
मुख्य सामग्री	सीमेन्ट, पाइप, ईंट आदि बाहर से खरीदी गई	बांस, लकड़ी, टिन, जूट, प्लास्टिक इत्यादि (लगभग सभी स्थानीय स्तर पर उपलब्ध)
प्रकार लागत	बहुत अधिक	रु. 50/- से भी कम हो सकती है
संकेतक	निर्मित शौचालय	खुले में शौच से मुक्ति
सम्पोषकता	आंशिक और अनिश्चित	उच्चतर
कौन लाभान्वित होता है	अच्छी खासी हालत वाले	सभी, गरीबों सहित
मुख्य अभिप्रेरक	सब्सिडी	घृणा, आत्म-सम्मान
आच्छादन/उपयोग	आंशिक	सम्पूर्ण
लाभ	कम: खुले में शौच चलती रहती है	उच्चतर: खुले में शौच से मुक्ति

समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता को अंगीकार करने वाली या/और इसका प्रसार एवं विस्तार करने वाली संस्थाओं के लिये इन भिन्नताओं के उपलक्षण महत्वपूर्ण हो सकते हैं. इसके लिये आवश्यक है कि व्यक्तिगत तथा संस्थागत सोच और व्यवहार में बदलाव किया जाये. उदारतापूर्वक सब्सिडी वितरित करने, उच्च स्तरीय शौचालयों के मॉडलों को बढ़ावा देने तथा बड़े बजट बनाने और व्यय करने की दबावकारी सोच को बदलना होगा. समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता का आधारभूत सिद्धान्त है कि कोई सब्सिडी नहीं दी जानी चाहिये. बहुत स्थानीय स्तर के सामान्य समुदाय सदस्यों (जो कि विशेषज्ञ नहीं हैं) के द्वारा सुगमकर्ता की भूमिका का निर्वहन किया जाता है. कम लागत का प्रशिक्षण भरपूर होता है. इसमें से किसी भी काम के लिये बहुत बड़े बजट की जरूरत नहीं होती है. यह वास्तव में एक समुदाय संचालित प्रक्रिया होती है और इसके प्रसार एवं विस्तार के लिये भी समुदाय के स्तर पर ही काम करने की आवश्यकता होती है (बजट को खर्च करने की आवश्यकता इसके लिये प्रेरणा का स्रोत नहीं है).

इस स्थानीय स्तर पर समुदायों का सशक्तिकरण करने की पहल के प्रसार और विस्तार को बढ़ावा देने के लिये अन्तर्राष्ट्रीय अभिकरणों की बहुत अहम भूमिका है जिसमें गैर-सरकारी संगठन भी सम्मिलित हैं. सरकार और राष्ट्रीय गैर-सरकारी संगठनों का दायित्व है कि वे इसके लिये अनुकूल स्थितियां सुनिश्चित करें और अभिप्रेरण तथा प्रसार और विस्तार के लिये मददगार हों. आवश्यक है कि सभी इस बात को समझें कि एक 'हजारों में स्वर्ग' की आवश्यकता है जिससे समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की ज्योति जलाई जा सके और जब एक बार यह ज्योति सुलग हो जाये तो समुदाय से समुदाय तक अपने आप फैलने लगेगी.

परिशिष्ट च: स्रोत और सम्पर्क सूत्र, वेबसाइट, वीडियो, चर्चा फोरम इत्यादि सहित

Key Publications

- Community-Led Total Sanitation as a Livelihoods Entry Point – A Brief Introduction, Katherine Pasteur, IDS, Sept 2005 http://www.livelihoods.org/hot_topics/CLTS.html
- Practical Guide to Triggering Community-Led Total Sanitation CLTS) Kamal Kar, November 2005 http://www.ids.ac.uk/ids/bookshop/wp/Wp257% 20pg.pdf (Also available in Chinese, Arabic, French and Spanish)
- Subsidy or self-respect? Community led total sanitation. An update on recent developments (Including reprint of IDS Working Paper 184) IDS Working Paper 257 Kamal Kar and Katherine Pasteur, 2005. http://www.livelihoods.org/hot_topics/CLTS.html
- Latest Update to Subsidy or Self Respect, Kamal Kar and Petra Bongartz, April 2006. Update to IDS Working aper 257 http://www.livelihoods.org/hot _topics/docs/CLTS_update06.pdf
- Favourable/Unfavourable conditions for CLTS: proposes that triggering and the achievement of ODF status are more likely to succeed in some conditions than in others. Starting in favourable conditions and spreading into less favourable is a commonsense strategy. http://www.livelihoods.org/post/CLTS_po stit.htm

All of these and many other documents are available from the Livelihoods Connect website
Livelihoods Connect hosts a hot topic on CLTS, a mini-website, which contains a wealth of useful materials on Community Led Total Sanitation (CLTS) and how it can serve as an entry point for other livelihoods activities:
http://www.livelihoods.org/hot_topics/CLTS.html

For any enquiries or if you would like to be added to our **CLTS mailing list** so that you will receive updates on new materials available on the website as well as other CLTS related news, please contact Petra Bongartz (P.Bongartz@ids.ac.uk)

Videos

UNICEF Cambodia
- CLTS (Khmer version) Contact Hilda Winarta hwinarta@unicef.org

Knowledge Links India (19-29 minutes)
- No shit Please! (English)
- Ek Behtar Duniya Ke Liye (Hindi)
- Understanding CLTS with Kamal Kar (Hindi with English subtitles)
- People and their Voices (Hindi with English subtitles) Contact Knowledge Links contact.knowledge.links@gmail.com

Project Concern International, Indonesia
CLTS contact: Solihin Abas abs_sgoswami@yahoo.com

TVE
Earth Report: Clean Living
broadcast on BBC World in March 2008
See http://www.tve.org/earthreport/archive/doc.cfm?aid=1889 for more detail
For Tape or DVD orders – contact Dina Junkermann, TVE distribution manager: tel. +44 20 7901 8834; email: dina.junkermann@tve.org.uk

WSP/MASPOLA, Indonesia
Contact PAK Djoko of GATES project at WSP, Jakarta,
dwartono@worldbank.org
Awakening Change

WSP-South Asia, 55, Lodhi Estate, New Delhi, 100003, India.
Contact: Ajith Kumar, Ckumar1@worldbank.org

WSP Bangladesh
- Igniting Change.

Contact: WSP-South Asia, Dhaka, Bangladesh;

UNICEF Sierra Leone, Freetown
'Community Led Total Sanitation in Beautiful Salone'
Contact: Francesca De Ferrari, fdeferrari@unicef.org, Darren Gaist, dgaist@unicef.org

Countries with CLTS and organisations involved in implementation/trials of CLTS

Africa
Burkina Faso: WaterAid
Egypt: Plan Egypt applying CLTS Principles in solid waste management
Ethiopia: Vita, (formerly Refugee Trust International) implementing CLTS in Arbaminch area, WSP, Plan Ethiopia
Ghana: WaterAid
Kenya: Plan Kenya, UNICEF
Mali: WaterAid
Nigeria: WaterAid
Sierra Leone: UNICEF, Ministry of Health, Education, Water Supply Energy and Power and Plan Sierra Leone
Tanzania: Plan Tanzania,
Uganda: Plan Uganda, Kibale District Administration supported by Irish Aid
Zambia: UNICEF, Choma district, DWASHE, Partner NGO of WaterAid Zambia,

Asia
Bangladesh: SDU-CARE, Bangladesh, Dishari, Plan, WaterAid and their NGO partners like, VERC, NGO Forum for Drinking Water Supply and Sanitation, Dhaka Ahsania Mission, World Vision, WSP-South Asia
Cambodia: Ministry of Rural Development, Royal Government of Cambodia implementing CLTS in six provinces, UNICEF, Plan, Cambodia, Swiss Red Cross.
India: Government of India (State Governments of Maharashtra, Haryana, Himachal Pradesh, only Urban CLTS in Kalyani Municipality under Kolkata Urban Services for the Poor (KUSP) in West Bengal), WSP-South Asia.
Indonesia: Government of Indonesia, WSLIC II (AusAid), Project Concern International, WSP-East Asia and Pacific Region, Jakarta, Gates Foundation supported TSSM project in East Java Province.
East Timor: Plan and WaterAid Australia have recently started implementing CLTS.
Nepal: WaterAid, Plan Nepal, UNICEF, NEWAH, and Nepal Red Cross.
Pakistan: IRSP, Rural Support Programme Network, (RSPN Pakistan Khushal Pakistan Fund (KPF)) WSP, SARAWON International.

Latin America
Bolivia: UNICEF, WSP, Plan Bolivia.

Middle East
Yemen: Yemeni Social Fund for Development (SFD-Yemen).

स्थानीय अनुकूलन और विकसित अभिनव मॉडल: एशिया, अफ्रीका और लैटिन अमेरिका के देशों में समुदायों द्वारा निर्मित शौचालयों के मॉडलों की विविधता

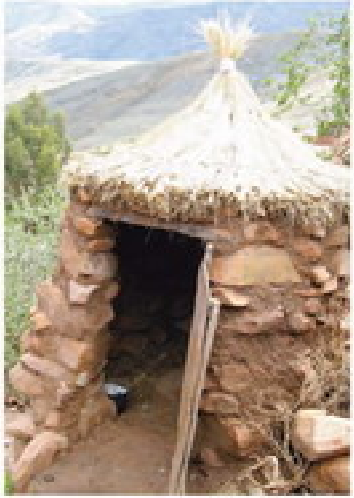

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

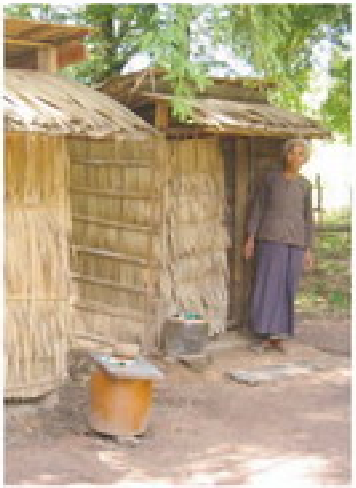

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

आपकी टिप्पणियाँ!

लेखक परिचय

डॉ. कमल कार पशुधन उत्पादन, कृषि और प्राकृतिक संसाधन विशेषज्ञ हैं जिनकी विशेष अभिरुचि सामाजिक और सहभागी विकास में है. आपने दक्षिण और दक्षिण पूर्व एशिया, अफ्रीका और लैटिन अमेरिका में स्वतंत्र परामर्शदाता के रूप में द्विपक्षीय, बहुपक्षीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय अभिकरणों के लिये काम किया है जिनमें विश्व बैंक, वाटर एण्ड सैनिटेशन प्रोग्राम, एशियन विकास बैंक, डीएफआईडी, यूनिसेफ, यूएसएआईडी, आयरलैण्ड एड, सीडीडैड, सम्मिलित हैं और कई गैर-सरकारी संगठन जिनमें केयर, प्लान इन्टरनेशनल, और वाटरएड सम्मिलित हैं. डॉ. कमल कार ने प्राकृतिक संसाधन प्रबन्धन के क्षेत्र में पथप्रदर्शक के रूप में कई अभिनव कार्यविधियों, दृष्टिकोणों एवं कार्यशैलियों तथा कृषि के लिये कम लागत की उपयुक्त प्रौद्योगिकी का विकास किया है. मंगोलिया के गोबी क्षेत्र में चरागाहों और प्राकृतिक संसाधनों (एनआरएम) के समुदायिक एकजुटता से प्रबन्धन तथा बांग्लादेश, भारत, पाकिस्तान, इन्डोनेशिया, कम्बोडिया, नेपाल, इथियोपिया, केन्या, जाम्बिया, युगान्डा और तंजानिया में समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के अभियानों में आप एक अग्रणी मार्गदर्शक के रूप में पथप्रदर्शन करते रहे हैं. आपके अन्य कार्यक्षेत्रों में भारत, मंगोलिया, बांग्लादेश और कम्बोडिया में शहरी गरीबी, मलिन बस्ती सुधार, और स्थानीय शासन सम्मिलित हैं. डॉ. कमल कार आईडीएस, यूनिवर्सिटी ऑफ ससेक्स की नॉलेज, टेक्नोलॉजी एण्ड सोसाइटी टीम के विज़िटिंग फैलो हैं. आप इन्टरनेशनल फैडरेशन फॉर वीमेन इन एग्रीकल्चर (नई दिल्ली) के संस्थापक सदस्य भी हैं.

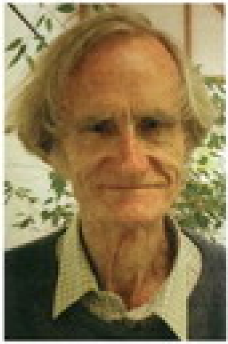

प्रोफेसर रॉबर्ट चैम्बर्स इंस्टिट्यूट ऑफ डेवलपमेन्ट स्टडीज़, यूनिवर्सिटी ऑफ ससेक्स, यूके के रिसर्च एसोसिएट हैं जहां आप सहभागिता टीम के सदस्य हैं. आपकी पृष्ठभूमि प्राकृतिक विज्ञान, इतिहास और लोक प्रशासन है. आपके विकास के क्षेत्र में मुख्य अनुभव पूर्वी अफ्रीका और दक्षिण एशिया में स्थानीय प्रशासन, प्रशिक्षण और शोध से सम्बन्धित रहे हैं. आपकी पुस्तकों में मैनेजिंग रूरल डेवलपमेन्ट (1974), रूरल डेवलपमेन्ट: पुटिंग दि लास्ट फर्स्ट (1983), चैलेंजिंग दि प्रोफेशन्स (1993), हूज़ रियलिटी काउन्ट्स: पुटिंग दि फर्स्ट लास्ट (1997), पार्टिसिपेटरी वर्कशॉप्स (2002) और आइडियाज़ फॉर डेवलपमेन्ट (2005) सम्मिलित हैं. आपके वर्तमान कार्यों और अभिरुचि में सहभागी विधियां, प्रोफेशनलिज़्म एण्ड परसेप्शन ऑफ पॉवर्टी तथा पावर एण्ड रिलेशनशिप्स सम्मिलित हैं. लीला मेहता के नेतृत्व में आईडीएस की टीम के आप सदस्य हैं. इस टीम के साथ आप समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता पर अपने सहयोगियों के साथ शोध, कार्य अनुभव से सीखना, तथा नेटवर्किंग के कार्यों में संलग्न हैं.

यह हस्तपुस्तिका WSSCC की आर्थिक सहयोग से मुद्रित हुई है

वाटर सप्लाई एण्ड सैनिटेशन कोलाबोरेटिव काउंसिल
9 शेमिन दि आनिमो
1219 जेनेवा
स्विट्ज़रलैंड
फोन : +41 22 917 8673
फैक्स : +41 22 917 8084
ई-मेल :vandervoordenc@who.int
www.wsscc.org

प्लान यूके
5-6 अण्डरवुड स्ट्रीट
लंदन, एनडब्ल्यू1 7जेक्यू, यूके
फोन: +44 (0) 20 7482 9777
फैक्स: +44 (0) 20 7482 9778
ई-मेल: mail@plan-international.org
www.plan.uk.org

पंजीकृत चैरिटी संख्या 276035

इंस्टिट्यूट ऑफ डेवलपमेंट स्टडीज
यूनिवर्सिटी ऑफ ससेक्स
ब्राइटन, बीएन1 9आरई, यूके
ids@ids.ac.uk
फोन: +44 (0) 1273 606261,
फैक्स: +44 (0) 1273 621202/691647

ISBN 978.0.9550479.5.4

हस्तपुस्तिका समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता

कमल कार रॉबर्ट चैम्बर्स के साथ